सैफ़ेरियल

अंक विद्या रहस्य

(BOOK OF NUMBERS)

विश्वविख्यात अंक ज्योतिषी की अनुपम पुस्तक
सर्वप्रथम हिन्दी में

अंक विद्या रहस्य
(Book Of Numbers)

मूल लेखक

सेफेरियल (SEPHARIAL)

(विश्वविख्यात अकशास्त्री)

हिन्दी रुपान्तरकार

पं० केवल आनन्द जोशी

रंजन पब्लिकेशन्स
16, अन्सारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

प्रकाशक
रंजन पब्लिकेशन्स
16, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
फोन : 3278835

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण
2002

100 रु.

मुद्रक · शक्ति ऑफसेट प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

भूमिका एवं पुस्तक परिचय

अक विज्ञान मुख्यत पाश्चात्य ज्योतिर्विदों का ही विशद अनुसधान है जो आज फलित ज्योतिष की तरह भाग्यफल विवेचन की एक प्रमुख शाखा बन गई है। पाश्चात्य विद्वान सेफेरियल ने सबसे पहले अको का तालमेल हिब्रू–यहूदी–वर्णमाला से जोडा। उनका ही यह प्रथम शोध है– जिसमे सूर्य, चन्द्र, बुध आदि नौ ग्रहो और मेष, वृषभ आदि बारह राशियो तथा पृथ्वी को भी एक विकिरण तरग पैदा करने वाले ग्रहों की मान्य सूची मे रखकर पैदा हुए व्यक्तियो के सम्बोधन ध्वनियो के नामाक्षर का भाग्यवादी विश्लेषण किया है।

अक विज्ञान की प्रारम्भिक शाखा का ज्ञान प्राप्त करने वाले सुधि पाठको के लिए प्रस्तुत पुस्तक अग्रेजी वर्णमाला के अनुसार भाग्य विवेचन करने का अद्भुत स्रोत है। यद्यपि ज्योतिष विज्ञान आज बहुत सक्षम और सूक्ष्म गणनाओ के आधार पर जीवन के सांगोपांग विश्लेषण का माध्यम बन चुका है, परन्तु अक विज्ञान की हिब्रू–शैली अपने आप में अद्भुत–रोचक और पठनीय है। बस सिर्फ आपके नाम के शुद्ध अंग्रेजी वर्णाक्षर का ज्ञान होना चाहिए।

आपका नाम आपके लिए कितना भाग्यशाली और अनुकूल है, इसका विश्लेषण भी आप इस पुस्तक में कबाला–एव यूनिट पद्धति के अनुसार कर सकते है।

अक–विज्ञान के प्रसंग मे यह भी एक रोचक तथ्य है कि इसके फलित सूत्र सदैव अकाट्य है और संसार भर मे सभी सभ्य–समाजो मे आज भी विश्वास के साथ अगीकार किए जा रहे है। मेरा कौन सा भाग्यशाली अक है–या फिर कौन सा विपरीत अक ऐसा है जो हमारे लिए कष्ट एवं प्रतिकूलता का माहौल पैदा कर रहा है। इसमे एकमात्र अक–विज्ञान ही कुछ प्रकाश डालता है। इसमें न कोई जटिलता है और न कोई लम्बा चौडा हिसाब, जन्म पत्री या जन्म समय का सही ज्ञान हो तो सोने पर

सुहागा– और भी बहुत सी बातो में सहायक सेफेरियल का अक–विज्ञान हमारी टिप्पणियो सहित आपके हाथों में है–

प्रस्तुत पुस्तक और ध्वनि तरंग से उत्पन्न अंक विद्या

प्राचीन ग्रीक विद्वानो ने जब खगोल और आकाश के रहस्यों का ज्ञान अर्जित किया तो अन्य क्लासिक साहित्य की तरह–खगोल एव अक विद्या के अनुसधान और अनुशीलन मे तत्कालीन ज्योतिर्विद एलन लियो, कीरो, सेफेरियल, टोलेमी तथा नास्त्रेदाम जैसे विचारको ने अपना ज्ञान यत्र तत्र लिपिबद्ध किया। ज्यो–ज्यो पश्चिमी विकासवाद ने अपनी जडे ससार मे फैलानी आरभ की त्यो–त्यों एक साधारण आदमी भी अपनी महत्वाकांक्षा के दायरे को लम्बा करके देखने लगा।

यह निर्विवाद है कि मानव मन की थाह लेने के लिए आज तक कोई मशीन या उपकरण ईजाद नही हो सका, भले ही चॉद और तारो तक पहुंचने के अन्तरिक्ष यान तैयार कर लिए गये। ज्योतिष और उसकी शाखा अक–विद्या ही एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये किसी भी सचेतन प्राणी की गति–प्रगति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

अंक शास्त्र के सिद्धान्तो का वर्तमान रूप पाश्चात्य ज्योतिर्विदो का ही अध्ययन क्षेत्र स्वीकार लेना तर्क सगत नही होगा। यह सत्य है कि भारत से होकर ग्रीक–बेबीलोन और मिस्र की प्राचीन सभ्यता मे जैसे अनेक समाजहित के शास्त्र पहुच गये और वहॉ पर उनका स्थानीयकरण हो गया– ऐसे ही सोपान पर है कबाला एवं हिब्रू मतावलम्बियो का अकशास्त्र।

अक शास्त्र के आधुनिक प्रणेता– युनाइटेड क्रास के अनुसार जहॉ एक से लेकर 9 अको के भीतर ही हमारे सौरमण्डल के ग्रहो का प्रतिनिधित्व समाहित हो गया वहॉ सेफेरियल ने नौ ग्रहो के अलावा 12 राशियो को पृथ्वी सहित 22 अको के मानव जीवन पर पडने वाले प्रभाव का आंकलन कबाला अंक शास्त्र मे किया है।

इस पुस्तक मे मुख्यतः कबाला तथा यूनिट पद्धति के अनुसार ही आपके प्रसिद्ध नाम (अग्रेजी वर्णमाला) के अंकों का

सयुक्त अक बनाकर– भाग्यवर्धक अक निकालना, दाम्पत्य का अक निकालना और स्वास्थ्य एव आयु अक निकालना बताया गया है। इसके साथ ही आपके जन्म वार और सही जन्म के समय के अनुसार किस्मत का चौघडिया निकालना भी स्पष्ट किया गया है।

रेसकोर्स का मैदान हो या फास्ट शो का फुटबाल मैच, या फिर कारो की दौड हो या मुर्गो की लडाई जहॉ एक से अधिक, अक आपस मे प्रतिस्पर्धा करते है तो एक न एक अक को 'अव्वल' आने का श्रेय भी मिलता है। आखिर यह इकलौता भाग्यशाली अंक कौन सा होगा– इसको निकालने के लिए ही है यह कबाला–हिब्रू का अक शास्त्र।

पुस्तक का यह पहला प्रस्तुतिकरण है। इसमे आपके नामाक्षर के सही अग्रेजी वर्णमाला के अक्षर चाहिए–फिर तत्काल उनका समकक्ष अक निकाल कर शुरू हो जाता है आपके भाग्य एव जीवन का लेखा–जोखा। वैसे तो अंक–विद्या सम्पूर्ण शास्त्र नही है, फिर भी जितना भी है वह सटीक और निर्विवाद है। पाठक आकलित करे कि अक कितने चमत्कारी है।

प्रामाणिक व मौलिक रचना

शरीर-लक्षण एवं चेष्टाएँ

(अंग-विद्या Body Language)

लेखक: डॉ॰ सुरेशचन्द्र मिश्र

ज्योतिषाचार्य, एम॰ए॰, पी-एच॰ डी॰

प्रस्तुत ग्रथ शरीर पर विद्यमान लक्षण चिन्ह, रेखाए, तिल, मस्सा आदि के साथ साथ विभिन्न अगो की बनावट, रगत, सौन्दर्य व लावण्य मानवीय भविष्य के बहुत से अनकहे पहलुओ को छूते है। जिस प्रकार जन्मकालीन ग्रह स्थिति से भविष्य का निर्धारण होता है उसही प्रकार लक्षण विज्ञान द्वारा भी पूर्ण जानकारी मिलती है विशेषता यह कि आप बिना किसी दूसरे की सहायता के स्वय भविष्य पढ सकते है।

ग्रंथ में आप पाएंगे:

शरीर लक्षण व चेष्टाओ का प्रामाणिक विवेचन, शरीर के प्रमुख दस भागो का सरल व सारगर्भित विश्लेषण, धन, स्वास्थ्य, वाहन, सम्पत्ति, अधिकार व राजयोगो का निश्चित निर्णय, जीवन का त्रिकाली विवेचन, लक्षणो से दशा अन्तर्दशा जानना व उनका फलादेश।

- चेष्टाओ के अपने निराले सकेत
- जन्मपत्री का कोई बधन नही
- अपने को पहचानने का अनोखा साधन
- इस विषय पर इतनी ठोस सामग्री के साथ आज तक कोई पुस्तक नही लिखी गई ऐसा नि सकोच कहा जा सकता है
- श्रेष्ठता मे ग्रथ प्रथम पक्ति का
- जन्मपत्री की सत्यता की परीक्षा

पृष्ठ संख्या: 256 — **मूल्य: 150 रुपये** (जिल्द से मज्जित)

✆ 327 88 35 — *डाक व्यय:* 20 रुपये अलग

डाक द्वारा भेजने की सुविधा उपलब्ध, पोस्टमैन लेकर आपके द्वार पर।

रंजन पब्लिकेशन्स

16 असारी रोड, दरियागज, नई दिल्ली-110002

–विषय–सूची–

	पृष्ठ सख्या
1. अक शास्त्र का रहस्य	9
2. हिब्रू कबाला मत	28
3 नाम तथा अक	40
4 अक तथा उनके चरित्र गुण	51
5 आपके प्रेम–प्रणय तथा दाम्पत्य सुख का अक	69
6 आपका भाग्य और धन का अक	87
7 आपके स्वास्थ्य एव आयु का अक	107
8 शुभ मुहूर्त और लाभकारी समय का चुनाव	124
(क) शुभ मुहूर्त का चुनाव	
(ख) स्टॉक तथा शेयर बाजार	
(ग) घुडदौड तथा साडो का द्वन्द युद्ध	
(घ) वायदा बाजारो का सट्टा	
9 लाटरी, शेयर, घुडदौड प्रकरण	132
10 अनुकूल रग तथा रत्नो का निर्णय	141

हाथ का अँगूठा-भाग्य का दर्पण

लेखक: ज्योतिष शिरोमणि पं॰ भोजराज द्विवेदी

अँगूठा चैतन्य शक्ति का प्रधान केन्द्र है। इसका सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। फलत. अँगूठा इच्छा शक्ति का केन्द्र माना जाता है। यह व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ की रेखाओ का जितना महत्त्व होता है, उससे ज्यादा महत्त्व अँगूठे का माना गया है। अँगूठा प्राण-शक्ति का द्योतक भी है।

अँगूठा अँगुलियो का राजा कहलाता है। किसी भी वस्तु की पकड़ अँगूठे के बिना सम्भव नही है। मस्तिष्क के भावो का स्पष्ट सम्बन्ध अँगूठे की कौशिकाओ तक होने से मस्तिष्क के भावो का स्पष्ट अकन अगूठे के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि कुछ वैज्ञानिक हस्ताक्षर द्वारा मनुष्य की प्रकृति का अनुमान लगाते है।

अँगूठा तर्क ज्ञान एव विवेक शक्ति का द्योतक है इसमे कोई अतिश्योक्ति नही। अँगूठे पर बारीक रेखाओ के द्वारा कुछ चिन्ह व आकृतियॉ बनी होती है जिसके निरुपण से यह सिद्ध होता है कि विश्व मे प्रत्येक प्राणी की प्रवृत्तियॉ उसकी चेष्टाऍ, उसकी विचार शक्ति भिन्न-भिन्न होती हैं।

केवल अँगूठे के द्वारा जानी जा सकने वाली कुछ प्रमुख बातें:

प्रेम, तर्कशक्ति, विवेक, जीवन का विस्तार, आयु, दुर, भाग्योदय, भाग्यास्त, भविष्य, रोग, आत्मबल, व्यक्ति की परीक्षा, गुप्तेन्द्रिय का आकार-प्रकार, प्राणशक्ति इच्छाशक्ति, प्राणवायु की गति, जन्म समय इत्यादि विषयो का विशद वर्णन इस ग्रथ मे प्रस्तुत है।

अँगूठे के महत्त्व को अनेक भविष्यवक्ताओ ने जाना और माना है किन्तु अँगूठे पर कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ अभी तक दृष्टिगोचर नही हुआ। इस दिशा मे लेखक प॰ भोजराज द्विवेदी की यह रचना अपने आप मे दुर्लभ तथा इस विषय पर सर्वप्रथम प्रकाशित पूर्ण रचना है।

मूल्य: 100 रुपये

ज्योतिष एव तत्रमत्र साहित्य का बड़ा सूचीपत्र 5 रु॰ का डाक टिकट भेजकर मगवाये

रंजन पब्लिकेशन्स

16, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

फोन: 327 88 35

I

प्रकरण एक

अंक शास्त्र का रहस्य

प्राचीन ग्रीक विद्वान् और दार्शनिको का यह दृढ विश्वास था कि जो अक हमारे गणित शास्त्र मे गणना करने का महत्व रखते है दरअसल भौतिक जगत मे उन अको के पीछे एक रहस्य छुपा हुआ है। टामस टेलर नामक विद्वान् जिसने "आयमब्लीकस" की पुस्तक "लाइफ आफ पैथागोरस" का अग्रेजी मे अनुवाद किया, ने कहा है कि पैथागोरियन ने ऑरफेव से बुद्ध एव प्रबुद्ध अको के सिद्धान्त को ग्रहण किया, इसके कारण उनकी अवरुद्ध बुद्ध (प्रगति) तो इतनी चल निकली कि जितना उनके राज्यक्षेत्र का विस्तार न हो सका।

अत यह उक्ति पैथागोरियन मे प्रचलित हो गई कि सारा सग्रह अको के अन्दर समाया हुआ है। पैथागोरस ने इसी संदर्भ मे अपने ग्रथ दुर्लभ परिसवाद में स्पष्ट रूप मे कहा है कि– अक सभी के विचार और आकृति के तौर तरीको को नियंत्रण मे रखते है। इसी लिए सभी ईश्वरीय कारणो और विध्वस के कारणो का परिणाम भी अक बताते है।

अको का प्रयोग किसी भी वस्तु की संख्यात्मक मूल्यो की अभिव्यक्ति के लिए होता है जिसमे इकाई एक आधार है। इकाई का समग्र अर्थ शून्य अर्थात् जीरो से है। जीरो से ही सारे अक निकलते है और जीरो मे ही विलीन हो जाते है। अर्थात् ब्रह्माड (शून्य) सारे ग्रहो (अको) की गोद है जिसमे सभी ग्रह समाहित है। अत यह प्रकाश मे आया है कि पहले से लेकर अन्तिम सख्या के अंकों का प्रतिनिधि १० है। अर्थात् गिनती के सभी अक यहा तक चलने के बाद मात्र आवृत्ति करते है जबकि उनकी सख्या मे नयापन कुछ नही होता है। इसी तरह हिब्रू की

वर्णमाला मे अल्फा से ओमेगा तक सारी गिनती सिमट आती है। अगर हम अको को एक क्रमानुसार सख्याओं मे एकत्र करके देखते है तो हमे एक चमत्कारी सख्या भी देखने को मिलती है। चूकि अक निम्नलिखित है और जीरो (शून्य) इनका जीवन क्षेत्र 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9

अको की उपरोक्त शृखला मे से अब अगर पहले और आखिरी अंको को क्रमागत आगे और पीछे की ओर से रखकर जोडा जाये तो क्या परिणाम निकलेगा– देखे–

1 तथा 9 बराबर 10

2 तथा 8 बराबर 10

3 तथ 7 बराबर 10

4 तथा 6 बराबर 10

5 तथा 5 बराबर 10

इनमे मध्य अक 5 का विशेष महत्व है। 5 अक व्यक्त करता है मनुष्य की प्राकृतिक विशेषताओ को जो कि पच तत्व के आधार पर बना हुआ है। इसके दोनो हाथो मे 5-5 अंगुलिया है। पैरो की पाच–पाच अगुलिया अपना महत्व रखती है। चाईनीज तथा हिन्दू धार्मिक ग्रथो मे पचभूत अर्थात् पाच देवताओ का वर्णन होता है। पाच वस्तुओ का जहा आध्यात्मिक महत्व है वहा सामाजिक और राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन मे पाच अपना स्थान ग्रहण कर चुका है। धार्मिक संस्कारो मे पाच विप्र ही दैनिक जीवन की पाच क्रियाओ का सासारिक महत्व समझाते है। भारत मे जिस प्रकार धार्मिक रूप से पाच को पवित्र तथा प्रबुद्ध अक माना जाता है वैसे ही चीन मे 5 को ईश्वरीय शक्ति का मेरु दण्ड माना जाता है। 5 की उपलब्धि बहुत भाग्यवर्धक मानी जाती है। समाजवादी देशो मे सप्ताह मे काम करने के 5 दिन का महत्व भी शायद इसी शृखला की एक उपलब्धि है। चीनी शब्द WU Hıng (वू हिग) की पाच महत्वपूर्ण अनुकरणीय बातें चरित्र में महत्व रखती है। पाच प्रकार के दण्ड विधान और पाच भौतिक तत्व है। ये पाच भौतिक तत्व है–मिट्टी, काष्ठ, धातु, अग्नि और जल। इनका अधिकार पांच ग्रहों के अधीन है।

शनि– पृथ्वी अर्थात् मिट्टी का अधिपति है।

गुरु– काष्ठ, लकडी का अधिपति है
शुक्रधातु, सोना चादी पीतल आदि का अधिपति है ।
मंगल– आग का अधिपति है ।
बुध– जल तत्व का अधिपति है ।

टिप्पणी यहा पर लेखक ने भारतीय ज्योतिष का सहारा लिया है, परन्तु जल तत्व जिसका अधिपति चन्द्रमा है उसके स्थान पर बुध को जल तत्व का स्वामी बताया है, जबकि ज्योतिषानुसार बुध वायु तत्व प्रधान वस्तुओ का अधिपति है । सभवत सेफारियल ने भारतीय ज्योतिष का अद्यतन अनुसरण नही किया हो– फिर भी बुध को जल तत्व का नियत्रक मानना सिर्फ सेफारियल का अपना अक शास्त्रीय दृष्टिकोण हो सकता है । अत पाठको को इस व्याख्या को भारतीय ज्योतिष के सदर्भ मे नही लेना चाहिए ।

इस प्रकार चीनी सस्कृति मे पाच तत्वो को पाच प्रमुख ग्रहो के साथ जोड कर रखा गया है । जैसे–मिट्टी को मिट्टी ग्रह, काष्ठ लकडी को काष्ठ ग्रह, धातु को धातु ग्रह, जल को जल ग्रह और आग को अग्नि ग्रह के नाम से सबोधित करते है । इसी प्रकार मनुष्य के आचरण और चरित्र के व्यवहार को पाच नियमो (सीमाओ) मे इस प्रकार बाधा गया है । जैसे–सतान के प्रति वात्सल्य प्रेम, स्वामी भक्ति, दाम्पत्य जीवन की कर्तव्यनिष्ठा, आज्ञाकारिता और सदाशयता । इन पाचो चरित्रगुणो का सम्बन्ध मनुष्य के कर्म व्यवहार से जुडा है । जैसे संतान और माता पिता के आपसी सम्बन्ध आज्ञाकारिता और सदाशयता के साथ, शासक (राजा) और प्रजा के बीच स्वामी भक्ति की कडी जुडी रहती है । पति पत्नी के बीच दाम्पत्य जीवन की कर्तव्य निष्ठा तथा मालिक और नौकर के बीच आज्ञाकारिता तथा मित्र के सम्बन्ध सदाशयता में ही प्रगाढ होते है । चीन की सस्कृति, जो कि विश्व की प्राचीनतम सस्कृति है, उसमे पाच किस्म के दण्ड विधान भी नियत है । जैसे–आर्थिक दण्ड, डण्डे से पिटाई, कोडा या चाबुक मारना, देश निकाला देना और पाचवॉ है प्राण दण्ड । इस प्रकार दण्ड प्रक्रिया मे भी अक 5 एक व्यापक आधार स्तम्भ बनाया गया है । अत· कहा जायेगा कि अक पांच मानवता और मानवीय सम्बन्धो का सूत्रधार अंक है । मनुष्य एक ऐसे धरातल के मध्य में स्थित है जहा एक ओर प्रत्यक्ष ससार है तो दूसरी ओर अप्रत्यक्ष

विश्व । इसके अनन्तर वह वास्तविक (Material) तथा अवास्तविक (Immaterial) ससार को मापने मे व्यस्त है जिसमे उसके सहायक तन्तु है अनुभूति तथा विचार । मनुष्य जोकि सभी भौतिक और अभौतिक तत्वो का मूर्त रूप है, उसमे ब्रह्माड का सार भी निहित है । वह इस विशाल ब्रह्मांड का ही एक सूक्ष्म अणु तत्व है । मानव जीवन रहस्य अको की सजीवता से बहुत गहराई से जुडा हुआ है । अत. अब सभी मूल अकों के विश्लेषण और प्रसार के क्षेत्र मे 5 का विशेष महत्व है । वह हर जगह एक मध्यस्थ है, एक सार्थक माध्यम है, तथा व्याप्ति और सकुचन का मेरुदण्ड भी है । सरसरी तौर पर यहा देखे कि अक 5 की विशेष भूमिका क्या है—

1 $1+2+3+4+5+6+7+8+9=45$

या $9x5=45$

अर्थात् 1 से लेकर 9 तक के अकों का कुल योग 45 होता है जो कि 9 अका का 5 गुना है ।

2 $1+3+5+7+9=25$

या $5x5=25$

सभी विषम अको का परस्पर योग 25 है जो कि 5 अक का 5 गुना है ।

3 $2+4+6+8=20$

या $4x5=20$

सभी सम अंको का परस्पर योग 20 है कि 4 अंक का 5 गुना है ।

<u>टिप्पणी</u> वास्तव मे अक विज्ञान के ऐसे बहुत से चमत्कार है जो कि 5 की सख्या पर अत्यधिक केन्द्रित है । विद्वान सेफारियल ने इस पुस्तक मे बौद्धिक अक 5 की सिर्फ अकों की सरचना मे बुनियादी भूमिका का ही उल्लेख किया है । उपरोक्त सभी भूमिकाओं के अलावा एक महत्वपूर्ण भूमिका अक 5 की और है । जैसे सभी अको का योग है 45, जिसमे विषम अक का जोड आता है 25 और सम का जोड 20 है । यहा पर दोनो मे अन्तर $(25-20)=5$ का ही आता है ।

लेकिन 1 से लेकर 9 तक सभी अको की शृखला का सम्बन्ध एक विशिष्ट परम्परागत चिन्ह से भी है। ये परम्परागत चिन्ह सूर्य तथा सौर मण्डल के अन्य सदस्यो के साथ जुडे हुए भी है।

नोट : यहा यह बता देना परम आवश्यक है कि अको के सम्बद्ध चिन्ह प्रतीक ज्योतिष शास्त्र के नवग्रहो के प्रतीक चिन्हो का गुण और भाव व्यक्त करने के लिए निर्धारित है। इन्हे यूनिट सिस्टम अथवा एकक प्रणाली अथवा इकाई नियम भी कह सकते हैं। इस चिन्ह शृखला को कबाला से मिला देने की चेष्टा नही करे, क्योंकि इससे भ्रम और सदेह पैदा हो सकते है। कबाला शृंखला के सभी चिन्ह हिब्रू अक्षर माला से सम्बन्धित है। हिब्रू अक्षर माला मे कुल 22 वर्णाक्षर है। हिब्रू वर्णमाला प्राचीन यहूदियो के साहित्य की भाषा है। आज की अग्रेजी, हिब्रू, रोमन तथा ग्रीक वर्णाक्षरो के सैकडो उतार चढाव और संशोधनो का परिणाम है। हिब्रू वर्णमाला अर्थात् कबाला सिस्टम को हम दूसरे प्रकरण मे पढेगे।

एकक प्रणाली मे एक से लेकर नौ तक अंको का और शून्य (जीरो) का ब्रह्माड और सौर मण्डल के ग्रहो से क्या सम्बन्ध है उसका अध्ययन और विश्लेषण हम यहा कर रहे है।

एक

यह अंक प्रत्यक्ष देवता (Deity) का चिन्ह है जिसका जन्म अस्तित्व हीनता के अथाह गह्वर (Abyss of Nothıngness) अर्थात् महाशून्य से हुआ है। यह अक 1 सूर्य का प्रतीक चिन्ह है, जिसका प्रकाश इस भौतिक जगत की विशाल काली रात्रि के बीच प्रकाशित हुआ था और वही दिव्य रोशनी आज विश्व के सभी प्रकार के कार्य–कलापो को आलोकित कर रही है। अर्थात् सूर्य का प्रकाश ही प्रधान आलोक पुंज बना है तथा ऊर्जा तथा रोशनी के स्रोतो का संचालक भी यही प्रधान ग्रह है। सूर्य जो कि प्रेम और विश्वास की ज्योति का स्रोत है वहा वह इस जीवावृत विश्व ब्रह्मांड का केन्द्र बिन्दु भी है। सूर्य का प्रतीक चिन्ह अखिल ब्रह्मांड के मध्य एक बिन्दु रखकर अभिव्यक्त किया

ता है। अर्थात् ऊर्जा पुज सूर्य ही सभी पार्थित और अपार्थिव
तुओ का प्रमुख साकार रूप है। एक वृत के अन्दर मध्य बिन्दु
ने 1 यह चिन्ह प्रतीक अपना एक विशिष्ट भावार्थ लिए है
सका सीधा सम्बन्ध हमारे खगोल के सौर मण्डल से भी स्पष्ट
ता है।

यह तो सिर्फ शुरूआत है। इसके बाद ही ब्रह्माड मे
क्रास करने वाले अन्य नौ (अको) ग्रहो की सृष्टि हुई । अर्थात्
; से ही अनेक का प्रादुर्भाव हुआ। सभी अको का आधार बिन्दु
; है, जैसे कि सभी जीवो का आधार भी एक ही (आत्मा) है।
; अक तमाम रचनात्मक कार्य का पहला एकक है। अर्थात् जो
ध्र भी बढने वाला है, अलग किस्म का है और सकारात्मक है
ाका शुभारभ अक 1 से होगा। अक 1 का स्वामी सूर्य ताकत,
ा, ऊर्जा, स्फूर्ति, जोश तथा सापेक्ष संगठन एव कार्यक्षमता,
उता तथा शक्ति एव योग्यता का एकाधिकारपूर्ण अक है।
र्यकारी योग्यता, एकता तथा सृजन का सचालक भी यही अक
।

<u>टिप्पणी</u> अर्थात् एक अक अथवा सूर्य की ऊर्जा का
ाबला करने वाला कोई दूसरा ग्रह पिण्ड नही। एक अपने
प मे अकेला है। ऐसे सूर्य के मुकाबले कोई दूसरा सूर्य स्थिर
ो हो सकता है। यही परिकल्पना ब्रह्माड के सदर्भ मे की गई
। हो सकता है, इस अनन्त शून्य मे और भी सूर्य के समान
र्जा पिण्ड हो, परन्तु एक सौर मण्डल वासियो को कभी किसी
य सूर्य ने आकर नही आतकित किया। जिस तरह अपनी
र्जा और गुरुत्वाकर्षण से सूर्य नवग्रहों को बाधे हुए है उसी
ार अक 1 के बाद अन्य अक भी सचालित होते हैं। अर्थात्
ना 1 अक के अन्य अंकों का कोई विस्तार या सकुचन नहीं हो
क्ता है। असख्य को व्यक्त करना हो तो गिनती 1 से ही
रभ करनी होगी। अंक एक ऐसा लचीला अक है जिसे सभी
को के साथ जोडा–तोडा जा सकता है। इसी लिए दार्शनिको
मत है कि इस सृष्टि का संचालन कर्त्ता भी एक ही (ईश्वर)
। विनाशकर्त्ता और वृद्धि कर्त्ता भी वही है। एक को मान लेना
ाबर अनेक को मान लेना। सयोजक विभाजक सब एक है।
ार एक नही होता तो अनेक भी नही होते। या यह कहे कि

प्रबुद्ध अको मे अक एक ही सब ज्ञान–विज्ञान सभ्यता–सस्कृति का आदि अनादि स्वरूप है । अक एक स्वामी ग्रह सूर्य है ।

दो

यह अक सापेक्षता, प्रतिकूलता, साक्ष्यपूर्ण और सहमतिपूर्ण प्रभाव का सूचक है । यह द्विपद अक है जिसमे युगल प्रतिरोधी निहित है । जैसे सकारात्मक और नकारात्मक, चुस्त और सुस्त, पुरुष और स्त्री, रोशनी और अधेरा आदि इनका सम्बन्ध एकता और एकात्मकता से ही नही, बल्कि एक दूसरे के नामाकन सकेत से भी है । यह अक हमारी प्रत्यक्ष जिन्दगी के दोहरेपन को इगित करता है । जैसे ईश्वर और प्रकृति, आत्मा और शरीर, अस्ति और नास्ति तथा इनका आन्तरिक सम्बन्ध । अक दो यह भी इगित करता है कि प्राकृतिक परिवर्तन का नियम और सचालन का नियम क्या है । अक दो ही उत्पत्तिवाद के विचार का, विवाद की सीमा का योग अथवा जोडे जाने की सीमा का और विपरीत स्थितियो की दोहरी सीमाओ का भी विश्लेषण करता है । जैसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, स्पष्ट और अस्पष्ट, खरीद और फरोख्त । इसका प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा है ।

चन्द्रमा वैसे तो अंकों का प्रतिनिधित्व करता है जिसमे यह अक "2" को नकारात्मक विकिरण प्रदान करता है । इसका ज्ञान तब होता है जब चन्द्रमा सूर्य के निकट होकर अस्त होता है । या प्रतिपदा के दिन थोडा सा उदित होकर पृथ्वी पर अपनी रश्मियो को बिखेरता है । अक "2" सापेक्षता, द्विविधापूर्ण स्थिति तथा परिवर्तन का सूचक होता है ।

<u>विश्लेषण</u>· अक विज्ञान के आधार पर चन्द्रमा को अक ज्योतिष मे किसी भी स्वरूप का एक पक्षीय आधार या उस आधार का जन्मदाता माना जाता है । वैसे यह अक "1" का अर्द्धांग अर्थात् स्त्री पात्र है जो मिलकर तीसरे अक को जन्म देते है । परन्तु ज्योतिष शास्त्र मे चन्द्रमा मन का कारक है । 'चन्द्रमा मनसो जात' ऐसा वेदों में कहा गया है । पृथ्वी से निकटस्थ होने के कारण यह माता, दादी अथवा तमाम स्त्रीकारक सम्बन्धियों का सूचक है जिनके प्रभाव से जातक फलता–फूलता है । चन्द्रमा जहा

मन का कारक है वहा बाह्य स्वरूप मे व्यक्ति के चाल–चलन का भी कारक है ।

तीन

तीन अर्थात् त्रिगुणात्मक योग का ही नाम जीवन है । इसमे शरीर का ढॉचा, तत्व (रक्त–मांस–चर्बी) तथा बौद्धिकता के आधार पर ही दैवी प्रक्रिया से आदर्श व्यक्ति का स्वरूप बनता है । प्राकृतिक रूप से शरीर के अस्तित्व मे तीन बाते और शामिल हैं– शक्ति, सन्तुलन और चेतना । शरीर के आधार पर ही उत्पत्ति, सरक्षण और विकास जैसी तीन क्रियाएं जुडी है जिनके मूल मे है पिता, माता और शिशु ।

नोट तीन अर्थात् त्रिगुणशक्ति को भारतीय दर्शन मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी कहा जाता है । ब्रह्मा सृष्टिकर्त्ता है । प्रकृति की सरचना उनकी देन है । विष्णु इस सरचना को सचालित करते है, उसे पुष्ट करते है, जीवित रखते है और महेश इसको नष्ट करते हैं । अर्थात् ब्रह्माड की तीन अनादि शक्तिया ही मानव के भूत, वर्तमान और भविष्य का नियत्रण करती है ।

प्रकृति, ईश्वर और मनुष्य ये ही ब्रह्माड के तीन आयाम है । जीवन की तीन अभिधारणा, अर्थात् विचार, विचारक और इनके प्रयोग से उत्पन्न होती है वस्तु । समय के तीन खण्ड–भूत वर्तमान और भविष्य । अत. यह प्रकट है कि समय और सीमा अपने स्तर पर विस्तृत होकर एक विचार को जन्म देते है । इसके फलस्वरूप विवेक, पद्धति और व्याप्ति का आलोक बनता है । तीन अक वृहस्पति का प्रतिनिधित्व करता है । यह ग्रह ज्योतिष तथा अंक विज्ञान दोनो मे ही एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । अंक एक से नौ तक के सभी अको मे कौन सी शक्ति निहित है इसका विश्लेषण मात्र वृहस्पति के सहयोग से किया जा सकता है । क्योकि यही एक ऐसा ग्रह है जो भौतिक और दार्शनिक चिन्तन से जुडा रहता है । अंक तीन का आगे हर तीसरे अक से सीधा सम्बन्ध होता है, जैसे अक छ और नौ । इन तीनों अको को किसी भी सीमा तक विस्तार करने से अन्तिम अक नौ ही प्राप्त होगा । जैसे–

$3+6+9=18=9$

$6+9+3=18=9$

$9+3+6=18=9$

$18+18+18=54=27$

9 9 9 9 9 तीनो पक्तियो का जोड सक्षिप्त करने पर

अंक तीन के कई अभिप्राय है। जैसे– एकीकरण, संयुक्तीकरण, सम्पूर्णता, विद्वत्ता, निर्णयात्मकता, विस्तारवादिता, उर्वरता तथा फैलाव।

चार

यह अक जहा स्वत ही विस्तृत हो जाता है वहा किसी भी कार्य का फल प्रदाता भी है। यह अक ही कार्यबद्धता, प्रतिप्राप्ति अर्थात् पुरष्कार, एकता, न्याय का प्रतीक भी है। भौतिक जगत मे पुनरुत्पादकता, गृहस्थ जीवन मे पिता की भूमिका, तथा राग–द्वेष के बीच सहानुभूति, दया, दानप्रियता, परोपकार एव लोक–कल्याण की सीमाए इस अंक के साथ जुडी है। इस अक मे जहां सौभाग्य, सुख, सम्पूर्णता तथा समृद्धि निहित है वही बौद्धिकता, सम्मान, प्रसन्नता तथा प्रचुरता भी। वृहस्पति इसका नियंत्रक ग्रह है। यह अक वास्तविकता, संघटन और निश्चित स्वरूप का सूचक है। यह अक ठोस, वर्गाकार, घनाकृति अथवा सजीव की आकृति लिए अर्गला शब्द है। शारीरिक कानून, अर्थात्मकता, कारण, आकृतिमूलक शरीर विज्ञान, विज्ञान, चिन्ह सकेत, आधार तत्व, पृथकता, आदेश, वर्गीकरण आदि इसके अधीनस्थ है। भाग्य चक्र का सूचक, न्याय दण्ड का प्रतीक, कानून एव नियमन प्रणाली का पर्याय, एकरूपता तथा गणना तथा परिगणन प्रणाली का आधार अक भी चार है। इस अंक के साथ बुद्धिवाद का वह पहचान तन्तु जुडा है जोकि तात्विक एवं तथ्य विषयक विचार अथवा ज्ञान बोध का अन्तर स्पष्ट करता है, पहचानप्रियता, निर्णय वादिता तथा सापेक्षता जैसे तथ्यो से जुडा है अंक चार। इसका पहचान चिन्ह सूर्य है जिसका यह नकारात्मक अक है। नकारात्मक अक होने के कारण यह रचनात्मक होने के

बजाय प्रतीकात्मक ही है। आगिक परिवर्तन की प्रतिधारा भी इस अक से प्रदर्शित होती है। यह अक तमाम प्रकार के रासायनिक एव गैर रसायन प्रक्रियाओं सहित सभी प्रकार के अणु, परमाणु के विनाश, प्रत्यावरण, प्रतिरोपण एव परावर्तन से जुडा है चाहे वह पुराना हो या नया।

यह अक एक विरोधाभास का अक भी माना जाता है। इसकी खासियत है बदला लेना, विस्फोट करना और बाद मे निरन्तर प्रतिक्रियावादी चैन(Chain) के साथ जुड जाना। सब प्रकार की वैज्ञानिक प्रभुसत्ता और विकासवाद का पर्याय भी यह अक है।

पांच

अक पांच का अभिप्राय है विविधता, अनुरूपता तथा मानसिक परिवर्तन। यह न केवल बाह्य सचेतना पर प्रभाव डालता है जो जीवन के भौतिक सिद्धान्तो से व्यवहार करता है, बल्कि विभेद की प्रक्रिया, विश्लेषण तथा कभी–कभी आलोचनात्मक स्थितियो में वस्तु–स्थिति को चीरफाड की सामर्थ्य भी रखता है। सभी प्रकार की साहित्यिक अभिव्यक्तियो और स्थानीय प्रशासन की गतिविधियो में इस अक का तरगित प्रभाव रहता है। यह बुध ग्रह के प्रतिनिधित्व मे आता है।

इस अंक का रचनात्मक पहलू यह है कि यह विचारो के आश्चर्यजनक लचीलेपन से समृद्ध है जिसमे प्रेरणा और उत्साह भी समाहित है। यह अक जहा वार्तालाप, लेखन, भाषण में व्यक्ति को प्रखर बनाता है वहीं अभिव्यक्ति मूलक शक्ति से ख्याति और चमक भी देता है। इस अक का घटिया प्रभाव यह भी है कि यह व्यक्ति को सक्रिय साहित्य–चोर बनाकर छोडता है। निर्णय लेते वक्त की ढुलमुल नीति अथवा दोहरी–दोगली नीति का अनुसरण करना भी इस अक की कमजोरी मानी जायेगी जिसके चलते व्यक्ति को अन्ततोगत्वा बदनामी और बेइज्जती भी काफी सहनी होती है। यह अंक जहा त्वरित विचार एव प्रखर विचार धारा का सूचक है वहीं एक साथ कई असख्य मामलो को और अनगिनत तनावो को दबाकर जल्दी से जल्दी अपनी राह प्रशस्त करने की

क्षमता रखता है। गणित, विज्ञान, लेखा और परा विद्याए भी इसकी देन हैं।

यह अक अक्सर अपने व्यक्तित्व मे दोहरापन लिए रहता है–जिसमें अच्छी और बुरी दोनो प्रकार की प्रकृतिया निहित होती है। यह दोहरापन जहा व्यक्ति को उच्च स्तर की बौद्दिक प्रतिभा देता है वही निम्न स्तर का छल छद्मी और ढोगी बना देने मे भी कसर नहीं छोडता है। मानसिक असतुलन और कर्तव्यहीनता, खांसी और चुगलखोरी भी इस अक की विकृति का नमूना है।

टिप्पणी: वास्तव मे अंक पांच बुध ग्रह के प्रभाव क्षेत्र मे आता है। सौर मण्डल में बुध को चचल, विद्वान तथा वणिक् वृत्ति का प्रतिनिधि भी माना जाता है। बुध ग्रह लेखन, पत्रकारिता, एजेन्सी, दलाली तथा वैज्ञानिक एव गणित आदि विषयों का ज्ञाता भी बना देता है। बुध से प्रभावित व्यक्तियो को अंक पांच अक्सर प्रभावित करता है। जैसे उनका जन्म दिन, घर–मकान का अंक, वाहन का अंक अथवा शुभ घटनाओ का दिन भी अक "5" पर निर्भर रहता है।

छः

यह अक सहयोग, दाम्पत्य जीवन, परस्पर शारीरिक सम्बन्ध, सम्पर्क सूत्र एवं विपरीत योनि के प्रति आकर्षण तथा घनिष्टता का पर्याय माना जाता है। यह जहां दो विभिन्न व्यवहारों अथवा क्रियाओं के अन्तर तथा सम्बन्ध को प्रकट करता है वही सुलेमानी मोहर का प्रतीक भी है। आत्मा और भौतिकवाद अर्थात् भाग्यवाद एव मानवीय - सहृदयता, मनोविज्ञान, निर्माण–शक्ति, साम्यवाद, तिलहन, चमक–दमक, पूर्वज्ञान, पूर्वाभास कीमियागर, रगसाजी, तथा भेदशास्त्र जिसमे शाम, दाम, दण्ड, भेद की नीति सम्मिलित है। इस प्रकार की राजनीतिक का सूत्र भी अंक 6 से निकला है। महानता से भरे कार्य, समन्वय, मैत्री, सामजस्य, सुसगति, स्त्रीवर्गीय स्वभाव, समानता, शान्ति, सतुष्टि, प्रसन्नता तथा आधुनिक किस्म के भौतिक सुख अर्थात् नौकर–चाकर, ऐशोआराम, मकान, वाहन आदि का सूचक भी यह अक है। सभोग, परस्पर सौहार्द्र, कामुकता, सगीत, चलचित्र,

कामुक सम्बन्धो का प्रदाता भी अक 6 है, क्योंकि इस अंक का अधिपति ग्रह शुक्र है जिसका ग्रीक चिन्ह (०+) इस प्रकार से है ।

कुछ मामलो में अक 6 कुछ कमजोर भी माना जाता है । यह कमजोरी मनुष्य के चारित्रिक एव उद्देश्यपूर्ण व्यक्तित्व की गहराई को समाप्त कर देती है यदि नाम, नामाक, अथवा जन्माक कुण्डली मे एक साथ दो या अधिक अको का सयुक्ताक बनता हो ।

पाठक स्वत समझ जायेगे कि जब भी बाइबिल अथवा किसी भी आख्या की धारा मे अक 666 आता है तो उसमे क्रूरता, अनैतिकता एव अमानवीयता के सदर्भ स्वत जुड जाते है । जब दो या अधिक (666) एक साथ जुड जाते है तो अनाचार, दुर्व्यवहार, क्रोधाग्नि, जीवन और उद्देश्य मे जीव जन्तुओ को भी प्रभावित किए बिना नही रहती ।

सात

अक सात कालचक्र के नियम का प्रतीक है । प्रकृति और अध्यात्म को तोडने की पृष्ठभूमि, स्वतत्रता आन्दोलन, क्रान्ति, प्रतिक्रिया एव अलगाव का सूचक भी अक सात माना गया है । यह मनुष्य की सात अवस्थाओ का प्रतीक, सप्ताह के सात दिन, सात प्रकार के चिन्ह, सगीत के सात स्वर औ प्रकाश के सात रग– बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारगी तथा लाल रगो का मिश्रण भी है । इसका प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा है जिसके लिए यह अक सकारात्मक कहा गया है । इसकी सापेक्ष अभिव्यक्ति पूर्ण चन्द्र के साथ सबद्ध है जब चन्द्रमा सूर्य से ठीक विपरीत होकर अपना धवल प्रकाश पृथ्वी पर परावर्तित करता है । अंक सात एक रहस्यपूर्ण अक है । यही अक सभी प्रकार के जादू टोने के अनुष्ठान तथा रीति–रस्मो को सचालित करता है जिसको ठीक चन्द्रमा के उदयकाल के दौरान सम्पन्न कराया जाता है । इसके परिवेश मे अलौकिक आत्माओ का आह्वान किया जाता है । सभी प्रकार के झाड–फूक अथवा छल–छिद्र का निवारण अक सात के अधिपति ग्रह चन्द्र की विधि आदि के विश्लेषण के बाद ही कराया जाता है । प्राचीन यहूदी सस्कृति से लेकर चीन और मगोल

सभ्यता सहित श्रीलंका, वर्मा आदि देशो मे चण्डाल–चुडैल–प्रेतनी–डाकिनी–शाकिनी आदि भूत–बाधाओ के शमन मे पूर्ण चन्द्रमा अथवा लुप्त चन्द्र (अमावस्या) का विशेष ध्यान रखा जाता है ।

नोट अभिप्राय यह है कि लेखक ने अक सात को इसके अधिपति चन्द्रमा की दृश्य स्थिति से जोडकर सामाजिक अन्ध विश्वासो–बुजुर्गो अथवा मृत आत्माओ के द्वारा दिए गये शापमोचन मे एक नियत्रक केन्द्र के रूप मे माना है । भारतीय समाज मे व्याप्त तत्र शास्त्र और ऐन्द्र जालिक क्रियाओ मे अक सात का बेजोड समन्वय रहता है । तीसरी दुनिया के लोग आज भी इन पारपरिक शक्तियों को यथा समय मानते और पूजते रहते है ।

मनुष्य समाज मे उसकी घरेलू एवं पारिवारिक स्थितियो से भी यह अंक गहन रूप से जुडा रहता है । जैसे कि घर मे बच्चे का जन्म होता है और जब एक नई आत्मा को संसार मे व्यक्ति विशेष के परिवार से सम्बद्ध होकर जुडना होता है तो उस वक्त दाई–नर्स अथवा हकीम के रूप मे अंक सात की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

टिप्पणी अक सात के प्रतिनिधित्व मे जहा एक ओर हमारे जीवन मे अलौकिक आत्माओ के ससर्ग का प्रभाव क्षेत्र सिमटा है वही नर्स, दाई, नौकर, चाकर, सेवक, रखैल, वेश्या अथवा तात्रिक पडित, पादरी, मौलवी अथवा देवदूत की भूमिका भी जुडी रहती है । अक्सर परित्यक्ताओं, वेश्याओ, पुजारियों, जादूगरो के जीवन चक्र मे चन्द्रमा अर्थात् अंक सात का विशेष योगदान रहता है । वैसे तो पाश्चात्य विद्वानों ने पूर्ण चन्द्र को ही पहले अक सात का प्रतिनिधि माना था, परन्तु आधुनिक अंक शास्त्रियों ने नेपचून अर्थात् वरुण तथा केतु (छायाग्रह) को भी इसके कार्यक्षेत्र से सम्बद्ध किया है । मछुआरे, कसाई, कीमती सामान के व्यापारी, चलते–फिरते भोजनालय, लोकगायक, कवि, समाज सेवक आदि भी इसके प्रतिनिधि माने गये हैं ।

आठ

वह अंक पूर्णता अर्थात् कार्य सम्पन्नता का प्रतीक है । समय और स्थान, अवधि और दूरी, वृद्धावस्था, अन्तिम समय

अर्थात् जीवन की चौथी अवस्था तथा निर्वाण (मृत्यु) से भी इसका परोक्ष सम्बन्ध है ।

इतिहास मे इस अक से सम्बन्धित कई कथाए और मिथ जुडे हुए है । प्राचीन ग्रीक सभ्यता में इस अक को न्याय अथवा बराबरी का प्रतीक माना जाता है जिसको कि सम सख्या 2 या 4 से विभाजित किया जा सकता है । जन्म के आठवे दिन ही यहूदी जाति समेत मुस्लिम समाज मे अथवा पादरियो द्वारा खतना या सुन्नत की रस्म अदा की जाती रही है । उनके यहा जब समर्पण का निष्ठा भोज दिया जाता है तो आठ मोमबत्तियो को एक साथ आठ दिन तक जलता हुआ रखा जाता है । रहाब से आठ पादरी (पडित) ही अवरोहण करते है । फारसी सम्प्रदाय के भी आठ अक है । नूह आदम की आठवी आकृति है जो धरती पर अवतरित होती है । अक आठ के अन्तर्गत तीन अठ्ठो (888) का सयुक्त अक पराविद्या का अक माना जाता है । इस तीन अठ्ठो (888) के विरुद्ध अक तीन छक्कों (666) को Book of Revelation में पाशविक इन्सान का अक भी इगित किया जाता है । अक आठ का प्रतीक ग्रह शनि है । सभ्यता के आदि युग से ही यह ग्रह मनुष्य तथा राष्ट्रो के अमिट और अपरिहार्य भाग्य से भी जुडा रहता है । यहूदी जातियो की सभ्यता के विकास से भी शनि ग्रह का सीधा सम्बन्ध रहा है । इस पीढी ने हाथो के परिश्रम को ही विकास का सोपान समझा था । भारतीय समाज मे परम्परागत मजदूर, लोहरा, कुम्हार, किसान तथा दस्तकारो का प्रतीक भी यही ग्रह है । इस प्रकार अक आठ और शनि ग्रह मनुष्य के जीवन लक्ष्य की तरफ जाने का मार्ग ही नही, अपितु श्रमसाध्य जीवन को भाग्यवाद का स्वरूप देने वाला भी कहा गया है । यही ग्रह मनुष्य के लिए कर्म और महत्वाकांक्षा का वह मार्ग प्रशस्त करता रहा है जिसके बल पर आज इन्सान चाद तारों को छूने की होड करने लगा है । भाग्य तथा मजिल का रचनात्मक ढाचा अक आठ मे अन्तर्निहित शक्ति एव ऊर्जा का ही परिणाम है ।

नौ

यह अक क्रियाशीलता, ऊर्जा, लडाकूपन, युद्ध तथा झगडालू तत्व से भरपूर, संघर्षशील एव साहसिक अभिव्यक्ति का प्रतीक है । यह अक दुस्साहसपूर्ण खतरो को मोल लेने वाला,

शब्दो तथा कर्म मे भावुकतापूर्ण, उत्तेजना, विद्वेष और क्लेश का सूचक भी माना गया है। दुर्घटना, चोट, अग्निभय एव विस्फोटक कार्यो से भी अच्छा इसका सम्बन्ध रहता है। सार्वजनिक सम्पर्को से लाभ उठाना, नेतृत्व करना, सगठनात्मक योग्यता चाहे वह युद्ध का मैदान हो या समारोह के प्रबन्ध कौशल का क्षेत्र हो इसकी विशेषता ही कही जाना चाहिए। व्यावसायिक हित और अपनी स्वार्थ पूर्ति इसका मूल उद्देश्य रहता है। मगल ग्रह इस अक का प्रतिनिधि है।

अक नौ की अपनी कुछ अलग विशेषताएं भी है। इसको अगर गणितीय दृष्टि से देखे तो यह अपना चोला कभी नही त्यागता है। जैसे इसको अगर 7 से गुणा करे तो लब्धि 63 आयेगा जिसका योग 9 ही होगा। अत किसी भी सख्या से इसको गुणित किया जाये तो परिणाम मे प्राप्त अक का जोड 9 ही आयेगा, यथा $9x25=225$ अर्थात् $2+2+5=9$।

यह भी एक रोचक तथ्य है कि प्राचीन काल मे मृतक को कब्रिस्तान मे सिर्फ नवे दिन ही दफन किया जाता था। यहूदियों के पवित्र मुक्तिदूत का अन्त नवे दिन ही हुआ (ईसा 9 दिन तक क्रूस मे लटके रहे)। इसी प्रकार ज्यूख के पहले और दूसरे गिरजाघरो का विनाश भी नवें महीने के नवे दिन ही हुआ। आज के खगोलशास्त्र के अनुसार सौर मण्डल मे नौ ग्रहो का ही परिवार है। (सूर्य, बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपचून सहित) आठवे ग्रह यूरेनस की खोज 18वी शताब्दी (9) मे हुई जबकि नवे ग्रह की खोज सन् 1845 (9) मे हुई जो कि अक नौ से जुडे हैं।

इसके अतिरिक्त एक रहस्यमय तथ्य और है। यदि तीन छक्के $(6+6+6)=18$ को जोड कर देखे तो उसका योग $(1+8=9)$ भी 9 ही आता है। अतः तीन 666 का आध्यात्मिक अक सिर्फ 9 है।

गणित शास्त्र में भी अंक नौ की प्रधानता विचारणीय है। किसी भी संख्या से नौ के गुणनफल का परस्पर योग नौ ही आयेगा। सम्पूर्ण ब्रह्मांड का सार और सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान की परिधि अंक नौ के दायरे मे ही है।

शून्य अर्थात् जीरो

एक अन्तहीन और शाश्वत ज्ञान का प्रतीक महाशून्य है तो सम्पूर्ण ब्रह्माड का प्रतीक शून्य है। इसमे गहनता, अक्षमता, विस्तार की असीम स्थिति समाहित है। सब कुछ अन्त में शून्य मे ही विलीन हो जाता है। किसी भी अक के आगे शून्य जोड देने से उसका विस्तार होता जाता है। अत. यह अक जहा दैविक सत्ता–पराभौतिकीय ससार का प्रतीक है वहा आदर्श, सार्वभौमता, परिभ्रमण, विस्तार क्षेत्र एव वृत्ताकार ब्रह्माड का अकन भी करता है। ब्रह्माड का प्रत्येक पिण्ड गोलाकार है और ग्रहो का परिपथ तारो की मन्दाकिनी से लेकर धूल का कण, रफ्तार से जाने वाली गतिशील वस्तु का पहिया, चक्र आदि सब गोलाकार शून्य से ही परिभासित होते है। कोई भी असीम शक्ति, वस्तु या आत्मानुभूति का प्रारूप शून्य से ही मेल खाता है। धरती का परिपथ समुद्र का क्षेत्र, जल की बूद, अग्नि की लौ सब शून्य अर्थात् जीरो को ही आवर्तित करते है। अणु–परमाणु से लेकर प्रकृति में, जीव जगत में, मनुष्य, पशु–पक्षी पेड पौधे आदि सब मे किसी न किसी प्रकार से शून्य के वृत्ताकार रूप की ही अभिव्यक्ति करते है। शून्य का सम्बन्ध जहा अन्तहीन प्रकृति है, वहीं आदि–अनादि के अन्तहीन अवस्थामूलक सत्य से भी है। शून्य एक सीमित इकाई होकर भी असीमित संख्याओ तक है। इसका मूल्य कुछ भी नही है, परन्तु इसका मूल्य सब कुछ से भी ज्यादा है। पाश्चात्य विद्वान् प्लूटो नामक ग्रह से इसका सम्बन्ध जोडते हैं। अर्थात् काल रूप मे शून्य का अस्तित्व है जो कि अकाल और अस्तित्वहीन होकर भी विद्यमान रहता है।

शून्य को अगर एक के साथ जोडा जाय तो वह 10 हो जाता है। अगर 10 से जोडे तो 100 हो जाता है। इस प्रकार आवृत्ति मूलक सिद्धान्त से भी शून्य जुडा हुआ है। अत यह अक जहां परिवर्तन, प्रत्यावर्तन का प्रतीक है वहा दीर्घकालीन योजनाओ का सूत्रधार भी। यह प्रतिवाद का प्रतीक भी है। यह एक आणविक शक्ति का मूल स्रोत भी है तो महाविनाश का वृत्ताकार गुब्बारा भी इसमें निहित है। मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु चरित्र और लक्ष का न्यूनतम चिन्ह जो अज्ञात और अदृश्य शक्तियो के सहारे चलता है, जिसके लिए एक्स ("x") सिद्धान्त का सदर्भ

दिया जाता है, अर्थात् तमाम असफलताओ का परिणाम भी शून्य के दरवाजे पर ही दस्तक देता है ।

बीसवी शताब्दी को हम प्लूटो अर्थात् यम ग्रह की खोज के बाद एक दूसरे पैमाने से भी माप सकते है । अर्थात् अंक 10 का पैमाना जिसका अधिपति ग्रह यम अर्थात् प्लूटो को निर्धारित किया जाता है । यह वास्तविकता है कि यम का अक्षरांक तथा 20 वी सदी के अक्षरांक मे "जीरो" की एकरूपता है ।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि प्लूटो की खोज के उपरान्त बडे बडे रासायनिक बम्ब और हाइड्रोजन तथा परमाणु बमो का आविष्कार हुआ जो महाविनाशक ग्रह प्लूटो के प्रतीक मात्र है ।

उपरोक्त विश्लेषण के उपरान्त सप्ताह के सात दिनो का नामकरण भी हिब्रू मतानुसार कर दिया गया है । जैसे.

शून्य	0	अर्थात्	आकाश ब्रह्माड	(प्लूटो)
	1	तथा 4	रविवार	(सूर्य)
	2	तथा 7	चन्द्रवार	(चन्द्र)
	9		मगलवार	(मगल)
	5		बुधवार	(बुध)
	3		गुरुवार	(बृहस्पति)
	6		शुक्रवार	(शुक्र)
	8		शनिवार	(शनि)

<u>नोट</u>: उपरोक्त 1 मे सूर्य सकारात्मक तथा 4 में सूर्य नकारात्मक होगा ।

इसी प्रकार चन्द्रमा के लिए भी अक 2 सकारात्मक अर्थात् शुभ और 7 नकारात्मक अर्थात् अशुभ होगा । परन्तु कुछ आधुनिक अक शास्त्रियो ने सूर्य के नकारात्मक अंक 4 को यूरेनस अर्थात् प्रजापति तथा चन्द्रमा के नकारात्मक अक 7 को नेपचून अर्थात् वरुण से भी सम्बद्ध करने की राय दी है । बहुत से प्रयोगों से इन ग्रहो का समन्वय इस अक से किया जाता रहा है, परन्तु सभी अंक–शास्त्री जब एक मत होकर मान लेगे तभी यूरेनस और नेपचून को मान्यता मिलेगी । फिलहाल यह भी द्रष्टव्य होगा कि

राहु–केतु को पाश्चात्य ज्योतिष–शास्त्रियो एव अक–शास्त्रियो ने कोई मान्यता नही दी, फिर भी भारतीय ज्योतिर्विद अक 4 से राहु और अक 7 से केतु का तालमेल बिठाने मे भी अपना स्वर उठाते रहे है। यह प्रयोग भी बहुत हद तक सत्य के निकट पाया गया है कि अक 4 और 7 सूर्य चन्द्र के नकारात्मक अक वैसे ही प्रभाव देते है जैसे कि राहु–केतु का सामान्य फल सहिताओ मे वर्णित है।

इस सम्बन्ध मे विद्वान् सेफारियल ने कहा है कि उनके समकालीन ज्योतिर्विदों द्वारा यूरेनस, नेपचून तथा प्लूटो को किसी भी सामान्य श्रेणी के अकों से वर्गीकृत नही किया गया है, क्योकि ये ग्रह पहले ग्रह अष्टक की श्रेणी मे नही आते है। न ही इनकी विकिरणे पहले अष्ट ग्रहीय घेरे के विकिरणो के समान प्रत्यक्षत प्रभावशील है। फिर भी यूरेनस अर्थात् हर्षेल का बुध के ग्रह अष्टक के दायरे में आना स्वीकार्य है, क्योकि यह ग्रह भी बुध के समान धर्मी और विस्मयकारी प्रभाव के कारण अंक "5" तथा बुधवार पर विशेष प्रतिबिम्बित होता है। अत 5 यूरेनस का शुभ अक और 4 अशुभ अक तथा रविवार नकारात्मक दिन है जिसका कारण भारतीय ज्योतिष से भी मेल खाता है। चूकि यूरेनस के आधिपत्य की राशि कुंभ मानी गयी है जिसकी विरूद्ध राशि सिह का स्वामी सूर्य है। इसी प्रकार नेपचून शुक्र के अष्टक से ज्यादा समानता रखता है। अत· इसका सापेक्ष अक 6 और वार शुक्र है और नकारात्मक अक 2 और वार चन्द्रमा है। इसी प्रकार प्लूटो शनि ग्रह के अष्टक प्रभाव मे ज्यादा साम्यता रखता है। अत इसका सकारात्मक अक 8 और वार शनि अधिक उपयुक्त होगा। प्लूटो का विनाशक अर्थात् नकारात्मक अक 0 (शून्य) ही रहेगा।

<u>नोट</u>: हमारे विचार से हिब्रू अक शास्त्र और बीसवी शताब्दी के आखिरी दशक तक जो विश्लेषण अधिकाश ज्योतिर्विदो ने प्रस्तुत किया है उसके अनुसार सौर मण्डल के दसवें ग्रह सहित सप्ताह के सात दिनों का ताल–मेल निम्न प्रकार से होना चाहिए·

अंक	स्वामी ग्रह	नकारात्मक या सकारात्मक	सप्ताह का दिन
1	सूर्य	सकारात्मक	रविवार
2	चन्द्र	सकारात्मक	सोमवार
3	बृहस्पति	सकारात्मक	गुरुवार
4	सूर्य यूरेनस राहु (भारतीय मत)	नकारात्मक	रविवार
5	बुध / यूरेनस	सकारात्मक	बुधवार
6	शुक्र / नेपचून	सकारात्मक	शुक्रवार
7	चन्द्रमा / नेपचून अथवा केतु (भारतीय मत)		चंद्रवार
8	शनि (प्लूटो)	सकारात्मक	शनिवार
9	मगल	सकारात्मक	मंगलवार
0	प्लूटो	नकारात्मक	—

II

प्रकरण दो

हिब्रू कबाला (यहूदी अंक विज्ञान)

पिछले प्रकरण मे आपने पढा कि किस तरह से सूर्य से लेकर बुध, शुक्र, शनि, प्लूटो आदि ग्रहो का एक से लेकर नौ तक के अको सहित शून्य की इकाई से सम्बन्ध स्थापित होता है। इन दस अको का सात दिनो (वारो) से समन्वय भी कैसे बैठाया गया है यह भी प्रकरण के अन्त मे दर्शाया गया है। परन्तु इकाई की सीमा के बाद हिब्रू अक शास्त्र के अन्दर 10 से लेकर 22 तक के अको को विस्तार से दहाई विश्लेषण की सीमा मे लाया गया है। अर्थात् एक साथ अगर दो अक पड जाये तो उनके गुण–दोष कैसे होगे और अग्रेजी वर्णमाला के किन अक्षरो का प्रतिनिधित्व इकाई और दहाई के अंको से सयुक्त हो सकता है। हिब्रू अर्थात् यहूदी अक शास्त्र की इसी ज्ञान शाखा का नाम हिब्रू कबाला रखा गया है जिसके प्रणेता है सेफारियल। कबाला का अभिप्राय परपरागत शास्त्र ज्ञान से लिया जाता है। हिब्रू भी प्राचीन आर्यो की तरह यहूदी सभ्यता में विशिष्ट सम्प्रदाय के धर्मावलम्बी या प्रतिनिधि माने गये हैं।

हिब्रू वर्णमाला के 22 अक्षर होते है। इन 22 अंग्रेजी अक्षरो को 1 से लेकर 22 अंको के साथ जोड दिया गया है। वैसे तो अग्रेजी वर्णमाला के 26 अक्षर माने जाते है, परन्तु हिब्रू वर्णमाला मे कई–कई जगहो पर एक साथ दो–तीन अक्षरों को मिला कर एक वर्ण की सरचना की गई है। निम्नलिखित सारिणी में हिब्रू वर्णमाला के 22 अक्षरो को अग्रेजी 25 अक्षरो के साथ समाहित किया गया है। इसके साथ ही प्रत्येक अक्षर को एक अक दिया गया है जिसके स्वामी ग्रह तथा आकाश स्थित राशि चक्र की 12 राशियो का समन्वय भी स्थापित किया गया है।

हिब्रू अक्षर	अंग्रेजी अक्षर		संख्या ग्रह तथा राशि स्वामित्व
अल्फा Aleph	A	1	बुध
बीटा Beth	B	2	कन्या
गामा Gimel	G	3	तुला
डल्टा Daleth	D	4	वृश्चिक
ही He	H	5	बृहस्पति
वीय Vau	VUW	6	शुक्र
जेन Zain	Z	7	धनु
चेथ Cheth	H	8	मकर
टेथ Teth	TH	9	कुभ
जोड Jod	IJY	10	यूरेनस
काफ Caph	CK	11	नेपचून
लेम Lamed	L	12	मीन
मेम Mem	M	13	मेष
नन Nun	N	14	वृष
सेमक Sameck	X	15	शनि
ऐन Ayin	O	16	मंगल
पे Pe	FP	17	मिथुन
टाड Tzaddi	Ts Tz	18	कर्क
कोफ Quoph	Q	19	सिंह
रेस Resh	R	20	चन्द्र
सिन Shin	S	21	सूर्य
टा Tan	T	22	पृथ्वी

अक 10 एक समेकित और पहला दहाई अक होने से इसकी अपनी अलग विशेषता और प्रभाव आकर्षक होगा। पिछले अध्याय मे हमने इकाई के अंकों का विश्लेषण किया है। अब यहां पढे दहाई (10 से लेकर 22) तक का अंक शास्त्रीय प्रभाव–अक

10 यह अक स्वय ही प्रकट करता है कि दो इकाई अको को एक साथ जोड कर एक नई सख्या का निरूपण किया गया है। अत यह प्रतिबिम्बित करता है कि परिवर्तन और विकिरणीय अभिव्यक्ति के सयुक्त स्रोत इस दहाई सयुक्ताक के जरिए किस प्रकार स्थिति को बदल सकते है। मात्र एक शून्य को किसी भी इकाई अक के साथ जोडने से उसका प्रभाव कई गुणा बढ जाता है, चाहे वह भौतिक संख्या हो या आध्यात्मिक।

अंक 10

अक 10 भी इसी शृखला मे एक विभिन्न आयोजना को प्रस्तुत करने वाला, आध्यात्मिक और ईश्वरीय विधान से जुडा हुआ, सुदृढ मानसिकता से युक्त तथा विचारपूर्ण अक है। इससे जहा शारीरिक क्रियाओ की सृजनशीलता का बोध होता है वहीं भौतिक भोगवाद अर्थात् वस्तुवादी सम्पन्नता की परिलब्धि भी स्पष्ट होती है। जहा सेफारियल के मतानुसार सयुक्त अक 10 में से अक 'एक' बुध का प्रतीक है (इसके पीछे उनका अभिप्राय यह भी है कि खगोलशास्त्र के अनुसार सूर्य के साथ चलने वाला पहला निकटस्थ ग्रह बुध है)। यह ग्रह ही जातक के मस्तिष्क और युक्ति चेतना को नियत्रित करता है। दस "10" अक यूरेनस ग्रह के नियत्रण मे आता है जो कि बुध का आठवा ग्रह पिण्ड है। अक आत चार–चार अको के दो जोडे से बराबर विभाजित हो जाता है। अर्थात् 4x2=8 उसके आगे पहला सम सख्या अक 10 ही आता है– प्रेरणा और महानता (Inspiration and Genius)। बुध ग्रह जहा विचारधारा के साहित्यिक (बौद्धिक) पक्ष को उजागर करता है, यूरेनस इसके वैज्ञानिक और सासारिक व्यवहार प्रणाली से जोडने वाले महाविज्ञान का परिचायक है। यह ग्रह यही निर्णय करता है कि बौद्धिक ज्ञान के भण्डार से मनुष्य की मजिल, उपलब्धि या क्षमता को किस हद तक सक्षम और सर्वसुलभ बनाया जा सकता है। शायद पृथ्वी पर हर्षेल ग्रह का प्रभाव अब अधिक मात्रा मे पडने लगा है जिसके माध्यम से कल–पुर्जो का जोर मानव क्रियाओ के साथ ज्यादा फैलने लगा है। कुछ समय बाद ऐसा भी समय आयेगा कि मनुष्य की शारीरिक इच्छाए पूरी करने मे मशीनो का पूरा–पूरा अधिकार हो जायेगा। यही यूरेनस मनुष्य को नवीन विचारो, क्रान्तिकारी परिवर्तनो और

भाग्य–निर्माण मे अद्भुत कारनामो का सूचक भी है। थोड़ी–सी युक्ति लगाने वाला खोजी दिमाग एक दिन मनुष्य को महान् वैज्ञानिक बना देता है। यह कहावत प्रायः अधिकाश वैज्ञानिको की आरभिक भूमिका रही है। कर्म–क्षेत्र की हर विधा मे हर्षेल ग्रह का प्रभाव व्यक्ति को या तो महान् बना देता है या फिर वह ऐसा जीवन खो बैठता है जिसकी उपलब्धि अनेक योनियो के जीवन भोगने के बाद प्राप्त होती है। चमत्कारिक बुद्धि का स्रोत बुध और हर्षेल का योग ही है जिसके सहारे एक साधारण से क्लर्क का भाग्य एक दिन चमकते सितारे की तरह निखर उठता है।

<u>टिप्पणी</u> दस अक "10" प्रधान व्यक्तियो का अगर बुध ग्रह अच्छा हो, हर्षेल ग्रह मिथुन, कन्या या कुंभ राशि का हो तो व्यक्ति चमत्कारी विलक्षण बुद्धि का अवश्य होता है। यह भाग्य की विडम्बना है कि वह उसे पाप कर्म की ओर भी ले जा सकती है। उदाहरणार्थ वह एक नम्बर का सेधमार, जेब कतरा, हत्यारा, विध्वंसक कार्यों का संचालक, मिलावटखोर, सट्टेबाज, जुआरी अथवा अन्य समाज–विरोधी कार्यों का सचालक भी हो सकता है।

अंक 11

अक 11 का उत्सर्जन प्रकृति की कोमल देन भावुकता और कमजोर दिल भी होना है। कोमल भावनाओ मे मनुष्य का कमनीय आचरण, अच्छा व्यवहार, वात्सल्य, मातृत्व तथा देश–प्रेम है। यह प्रेम मातृत्व की छाया मे ही उपलब्ध है, परन्तु माता के समान किसी भी अन्य के द्वारा भी इसे यह वात्सल्यपूर्ण निस्वार्थ पवित्र प्रेम प्राप्त होने का प्रतिनिधि अक है 11 अर्थात् दो बार 1+1=2 अर्थात् नवग्रहो के बाद दूसरा सयुक्ताक चन्द्रमा का प्रिय अक।

अक 11 स्त्रीवर्गीय एव चुम्बकीय अक है। इसका गुणन फल ऐसा है जिसमे हर जगह प्रत्येक अक को युगल रूप में ही पेश होना पडता है। जैसे 11x5=55 (युगल 5) 11x2=22 (युगल 2), 11x3=33 (युगल 3)। इसी प्रकार 11x9=99, परन्तु दहाई अंको से गुणा करने पर यह तारतम्य टूट जाता है। अंक 11 के नियंत्रण प्रभाव पर नेपचून की भूमिका भी नकारात्मक नहीं है। जिस प्रकार चन्द्रमा हमें सलाह मशविरा और विकल्प देता है, उसी

प्रकार सकारात्मक सलाह देना नेपचून का भी प्रभाव है। अक 11 के जातक अपने जीवन मे इस प्रकार के पात्रो के अधिक निकट रहेगे जिनसे उन्हे मातृत्व, स्नेह, भाईचारा–सहोदर सुख अथवा मित्रो का वास्तविक सुख सहयोग मिलता रहा हो। चन्द्रमा के प्रधान गुणो को नेपचून ने प्रदर्शन मे लाना आरम्भ कर दिया है– जैसे कि अति भावुकता, सनक, अस्थायी उद्वेग, झटके के साथ उठना, जल्दबाजी तथा बात–बात पर दूसरो को उपदेश–प्रेरणा देना, सेवाए प्रस्तुत करना। दार्शनिक, मनोचिकित्सक, प्राध्यापक, सार्वजनिक कार्यो से जुडा हुआ लेखक, पत्रकार अथवा आधुनिक वैज्ञानिक उपक्रमो से सम्बद्ध व्यक्ति की जीवन कुण्डली मे अक 11 प्रधानता रखता है।

अंक 12

अक "12" भी एक भावनापूर्ण और क्रियाशील अक है जो मनुष्य के कोमल विचारो को तथा मानवीय परेशानियो को मद्दे नजर रखता है। इस भावुकतापूर्ण अनुभूति के चलते इस अक के लोग दूसरो के लिए त्याग करने वाले, त्यागी अथवा बलिदानी हो जाते हैं जो भी विरोधी का चाटा एक गाल पर पडने पर दूसरा गाल हाजिर कर देते है।

जीवन की अनेक विषमताओ के बावजूद भी उनके अभिभाषण मे, मुलाकात मे एक गर्मी होती है। दूसरो से व्यवहार करते समय हसी मजाक का लहजा भी उनमे विद्यमान रहता है। राशि चक्र के बीच मे जिस प्रमुख राशि का इस पर व्यावहारिक नियत्रण पाया गया है उसमे मीन राशि प्रथम है। वैसे इस सयुक्त अक के जोड 1+2=3 का स्वामी बृहस्पति है। यह अक सेवा और प्रशासन का है जिसके बिना कोई भी व्यवस्था सुचारु रूप से नही चल सकती है।

अंक 13

अक तेरह भी बदलने वाली परिस्थितियों के बीच फसा हुआ अक है। खगोल शास्त्रीय परिधि मे यह अक जीवन और मृत्यु जैसे दोहरे आवरणों से लिपटा हुआ अवश्य है। यह जीवन के उस अछूते वृत्त को लेकर जीवन यात्रा आरभ करना चाहता है

जहा धन–सपत्ति अथवा पद और अधिकार के बल पर दूसरो को लज्जित नही किया जा सकता है। भौतिक समृद्धि से अधिक आत्मबल के व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए चुनता है। दूसरे शब्दो मे यह अक बहादुरी, नेतृत्व और कर्तव्य परायणता का प्रतीक है तथा राशिचक्र की मेष राशि से बहुत हद तक आन्तरिकता रखता है। अक तेरह उस धैर्यशील क्रान्ति का प्रतीक है जिसके ऊपर जीवन और मृत्यु का विकल्प झूलता रहता है और वह निष्काम मुद्रा से सब–कुछ देख–सुन और कर रहा होता है। आम जीवन मे जोखिम भरे कार्यो को करने वाला कार्मिक कभी जरा सी भूल से ही अपनी जान गवा सकता है– जैसे कि यात्रिक वाहन को चलाने वाला चालक या सर्कस मे करतब दिखाने वाला नट या रस्सी के सहारे पर्वतारोहण करने वाला साहसी व्यक्ति।

अंक 14

अक 14 एक वस्तुवादी तथा भौतिक समृद्धि से जुडा हुआ अक है। यह प्रकृति से सम्बद्ध अक है जोकि प्राकृतिक बल को अपने प्रभाव मे खीच लेता है। वैसे तो यह सरक्षित अक है, परन्तु इसकी शक्ति और क्षमता बहुत ही विस्तृत और ग्राह्य गुणो की है। कुछ हद तक यह अक उत्पत्ति के सिद्धान्त से जुडा है– रहन सहन के तरीको की आधुनिकता, सौन्दर्य, कला, सगीत, गायन की व्यावसायिक सफलता इसके शुभ प्रभाव मे निहित रहती है। अति भौतिकवाद के दायरे मे आने से यह अक बहुमूल्य रत्नो, आभूषणो और चरम सुखद यात्रिक वस्तुओ का प्रतिनिधि भी माना जाता है। राशिचक्र मे वृषभ राशि का प्रभाव इस अक के साथ जोडा गया है। यह स्थिरता, कठोरता, दृढता, निष्क्रियता, अकर्मण्यता हठवादी दुराग्रह के बावजूद आकर्षक, प्रभावशाली और सक्रियता की शक्ति से भरपूर है, जिसको कुण्ठा और विफलता कभी भी नही मिलती है।

अंक 15

अक 15 का सम्बन्ध सौभाग्य और लक्ष्य प्राप्ति से जुडा हुआ है। यह अक जहा शक्ति और अधिकार का साम्राज्य देता है

वही उसे हरण भी कर लेता है। कुछ सीमा तक यह अक उस रहस्यमय दुनिया का भी रास्ता दिखाता है जिसको पापकर्म की दूसरे नम्बर की दुनिया कहते है। अपराध जगत की श्रेष्ठ हस्तियो पर यह अक प्रभावी रहता है। नरक का राजा बनाने मे इस अंक का सहयोग महत्वपूर्ण है, व्यक्ति की आत्मा इसके फलस्वरूप आजीवन घुलती रहती है, और अपने कुकृत्यों से व्यक्ति का चित्त सदैव व्यग्र रहता है। यह इसकी चेतावनी देती है कि अपनी शक्ति और अधिकार क्षेत्र का कभी दुरुपयोग नही करना चाहिए। अहकार के मद मे अन्यायपूर्ण कर्मो का दण्ड देना भी इस अक की नियति हो जाती है। सिद्धान्त और न्याय–नीति से जुडे व्यक्ति के लिए यश और प्रतिष्ठा का अखण्ड स्रोत भी यह अंक है। अत सिद्धान्तवादिता तथा समता इसका प्रमुख ध्येय रहा है। अन्यथा 'जो जस करहिं सो तस फल चाखा' अर्थात् जैसा बोया जायगा वैसा ही काटा जायेगा का दर्शन भी अक 15 से जुडा हुआ है। शनि ग्रह का इस पर नियत्रण पूरा है। यह ग्रह इस बात की सच्चाई सामने लाया है। अगर राज्याधिकार अथवा शासनाधिकार अथवा किसी भी प्रकार की नेतृत्व शक्ति का दुरुपयोग किया जायेगा तो एक दिन उस पद से अवश्य ही हटना पडेगा और भविष्य मे सासारिक कर्म की जिम्मेदारी बढ जायेगी। अगर अधिकारो का उपयोग न्याय और सामजस्य की स्थापना के लिए किया जाये तो इस बात की उपलब्धि होती है कि मजिल से पहले ही मजिल मिल जाती है। अर्थात् 'कर भला हो भला' की कहावत उस पर चरितार्थ हो जाती है।

अंक 16

अक 16 भी एक शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण अक है जोकि अच्छे और बुरे गुणो का उन्नायक कहा गया है। मनुष्य की शारीरिक क्षमता और वासना को यह नियत्रित करता है। अक 16 से प्रभावित जातक आक्रामक भावना, जल्दीबाजी, क्रोध के साथ ही रचनात्मकता और पहल करने वाला भी होता है। जब लडने मरने की या सघर्ष की स्थिति आयेगी तो सबसे पहले अक 16 के प्रभाव गुणों वाला मनुष्य ही आगे शुरूआत करेगा। दूसरो के द्वारा की जा रही क्रूरता, अन्याय, अत्याचार को उखाडने मे पहल करने मे भी यह अक अपनी प्रधानता रखता है। विरोधी भावना को

जागृत करने मे यह बहुत सक्रिय रहता है और जब इस द्वेष भावना को शान्त नही किया जाये तो भारी नुकसान भी करवा सकता है। परन्तु जब स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हो तो सार्वजनिक हित के लिए मनुष्य कटिबद्ध रहता है। यह कर्म करने वाले को ऊचाई की हद तक उठा कर शोहरत और ख्याति देता है, अपार दौलत का स्वामी बनाता है। यह अक मंगल द्वारा नियत्रित और प्रभावित होता है। मगल साहस, शौर्य, द्वन्द्व सघर्ष के साथ–साथ पाशविक अपराधो का भी सृजक होता है। खोज–अनुसधान और शारीरिक परिश्रम द्वारा धरती को स्वर्ग बनाने मे भी यह अक सक्रिय रहता है।

अंक 17

अक 17 पूर्णत दार्शनिक और आध्यात्मिक अक है। यह अक अमर–अजर अस्तित्व के सिद्धान्त से भी जुडा हुआ है। जीवन चक्र के विभिन्न दृश्य इस अक के अधीन है––जैसे शुभ विचारो और सिद्धान्तो की शाश्वत गति––ऐसे कर्म सिद्धान्त की परिणति जिसमे मरने के बाद भी व्यक्ति को ख्याति और सम्मान मिलता रहा हो। महान् शास्त्रो के लेखको, विचारको, ज्ञान–विज्ञान की प्रत्येक शाखा के सपूत और युग पुरुषों को अक 17 ने ही प्रभावित किया है। इन व्यापक सिद्धान्तो का सार है सच्चाई, आशावाद, विश्वास, दानशीलता जिनको सर्वजन हिताय भूत, वर्तमान और भविष्य मे सभी सभ्य समाजो ने समान रूप से अपनाया है। सभी जातियो, धर्मो और भूभागो मे इन पुनीत सिद्धान्तो को मान्यता मिली है।

यह अक हमे जीवन को स्वर्णिम बनाने में, अपने व्यक्तित्व को चार चाद लगाने में सहायक होता रहा है। जीवन मे व्याप्त ज्ञान–विज्ञान तथा दर्शन से जुडा इस अक का सोपान महान् आत्माओ ने ग्रहण किया है और महात्माओ की श्रेणी मे अपने को ले गये है। राशि चक्र की मिथुन राशि का इस पर नियत्रण रहता है। मिथुन राशि बौद्धिक शक्ति, पूर्वानुमान तथा विवेकशीलता तथा रचनात्मक कार्य शैली की प्रतिनिधि भी है। बुध ग्रह को मिथुन का स्वामीत्व बौद्धिक जागृति के कारण ही प्राप्त है।

अंक 18

अक 18 को बहुत ही समस्या ग्रस्त और कठिन अंक आका गया है। यह भौतिकवादी, मायावी दुनियां का सुखद, अध्यात्मवादी विचारधारा पर आक्रमण करने जैसा है। यह अक जहा एक ओर धोखाधडी तथा ठगी का रास्ता दिखाता है वहीं झूठे मित्रो और गुप्त शत्रुओ से भी टक्कर होती रहती है। अत यह अक विश्वासघात और अन्य जान लेवा खतरो से चेतावनी देता है। यह अंक मित्रो तथा परिवार के सद्भाव रखने वाले सदस्यो से मनमुटाव के अवसर पैदा करता है, इसके अलावा पानी से, आग से विस्फोटक पदार्थो से उत्पन्न खतरो से भी सचेत रहने की चेतावनी देता है। हिब्रू यहूदी मान्यताओं के अनुसार कर्क राशि को इस अक का प्रतिनिधित्व प्राप्त है जो आमतौर पर अपने उद्देश्य के लिए दृढ वर्ती, अध्यवसायी, बनाता है। फिर भी एक अज्ञात भय उसमे समाया रहता है।

अंक 19

यह अक सचमुच ही भाग्यशाली और ख्याति प्राप्त अक है। इस अक के साथ ही प्रसन्नतावर्धक और आनन्दमयी परिस्थितिया खिच कर चली आती है। यह अक सभी वाछित इच्छाओ की पूर्ति मे सहायक रहता है–– चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बच्चा हो या युवा, साधारण व्यक्ति हो या गभीर कर्मठ कार्यकर्ता। शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप मे यह अक रचनात्मक गतिविधियो का सूत्रधार है। इसके अलावा एक ऐसे निस्वार्थ प्रेम का प्रतीक भी है जो बिना किसी स्वार्थ के सब के बीच प्रसन्नता और सद्भाव के रूप मे अपनी अभिव्यक्ति करता है। यह अक बहुत ही उन्नतिगामी, प्रगतिशील और अत्याधुनिक उपलब्धियो से भी परिपूर्ण है। राशिचक्र में सिह राशि इस अक का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका प्रतीक ग्रह सूर्य है। यह अक वस्तुत उदीयमान, सफल, आदरणीय और सम्मान प्राप्त कराने वाला होता है।

अंक 20

यह अंक भी एक विश्वसनीय एव शुभ अनुकूल भाग्य का अंक है जो अक धारक के विश्वास और कर्म पर निर्भर अधिक रहता है। यह अंक जागृति, सतर्कता और पुनर्जीवन की मान्यता वाले व्यक्ति का सूचक भी है। अंक 20 के व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से यह स्वीकारना भारी नही लगता है कि इस जीवन का अन्त होने के बाद आत्मा दूसरे शरीर मे प्रविष्ट हो जाती है। परन्तु इसका आभास व्यक्ति तभी प्राप्त कर सकेगा जब उसने अपने आपको आध्यात्मिक स्तर पर सम्पन्न एव सुदृढ कर लिया हो। इसके अलावा यह विश्वास भी होना चाहिए कि वह जो कुछ भी ज्ञान और क्षमता रखता है उसको कार्यरूप देने मे भी समर्थ है ताकि यह सुनिश्चित हो जाये कि उसकी धारणा आधारहीन नही है और जीवन के एक विशेष क्षेत्र मे उन्नति करने के लिए यह व्यक्तिगत क्षमता ही सौभाग्य के द्वार खोलती है। महज दूसरो के बताए रास्ते पर चलने से आत्मविश्वास और केन्द्रीकृत शक्ति बहुत दुर्लभ है जिसके बिना एक आस्तिक एव महत्वाकाक्षी का जीवन अर्थहीन एव अरुचिकर बन जाता है। चन्द्रमा इस अक का प्राधिकृत नियत्रणकर्ता है। यह अक उत्पत्ति के नियमो को प्रतिष्ठापित करता है।

अंक 21

यह अक प्रगतिशीलता एव उन्नति का प्रतीक है। यह इस बात का भी सत्यापन करता है कि प्रयास और चेष्टाओ के परिणामस्वरूप ही उपलब्धियो के द्वार खुलते है। कोशिश करने ही का परिणाम आज विकसित वैज्ञानिक समाज और सभ्यता है जिसमे अपनी लालसा को प्रयासो में बदलकर अधिकार, प्रतिष्ठा, मान्यता और सगठनात्मक ढांचे का नियत्रक बन सकता है। एक लम्बी लडाई के बाद विजयमाला पहना सकने मे समर्थ अंक 21 है चाहे भौतिक उपलब्धि हो या आध्यात्मिक, एक व्यक्ति जो कार्यरत रहता है वह शिखर पुरुष बनता ही है। यह अक एक मुखिया, राजा, मत्री अथवा अध्यक्ष का अथवा किसी वर्ग के महा नेता का होता है। घर के मुखिया से लेकर क्षेत्र, सभा–सोसायटी एव किसी भी विचारधारा का संरक्षक व्यक्ति अंक 21 से अवश्य जुडा

रहता है। यह अक सूर्य के नियत्रणाधीन है। यही तथ्य प्रतिपादित करता है कि सकारात्मक प्रयास हमेशा लक्ष्य के निकट ले ही आते है अथवा मजिल को पाने के लिए सही मार्ग का अनुसरण करना ही सत्य है।

अक 22

अंक 22 एक दुभाग्यपूर्ण अंक है। यह अक व्यक्ति के अन्तर्मन मे शकाओ, अविश्वासो और कुण्ठाओ को जागृत करता है। व्यक्ति अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध चलता है और अविश्वसनीय विचारधारा के कारण खतरो मे भी घिर जाता है। झूठा दभ, अहकार तथा असहयोगात्मक रवैया उसे कर्म क्षेत्र मे बदनाम कर देता है। बहम और शक की उस दुनिया से आदमी जब वापस लौटता है तो विनाशकारी वक्त की एक पूरी पीढी बीत जाती है। व्यक्ति अपनी ही मूर्खताओ और बेवकूफी के परिणाम स्वरूप अपना सर्वस्व लुटा देता है। यह अक पृथ्वी के नियत्रण मे रहता है जिसके परिणामस्वरूप भौतिकतावाद की गहनता से इसका पर्याय जुडा रहता है। कभी कभी यहा पर प्रकृति प्रदत्त मान्यताओ के टूट जाने तथा आस्थाओ के लोप हो जाने से भयकर दुष्कर्म और अनहोनी भी अपनी जगह बना लेती है। अगर इस जडवाद और पापाभिमुख वर्चस्व को तोडना हो तो एक सार्वभौमिक सह अस्तित्व की भावना का पैदा होना ही एक मात्र उपाय है जो भौतिकतावाद की स्वार्थी दुनिया पर काबू रख सकता है। अको की व्याख्या या तो इकाई (Unit) प्रणाली से की जाती है या फिर हिब्रू कबाला के सिद्धान्तो से। इसमे भेद यह है कि इकाई पद्धति से सिर्फ ग्रहो को प्रधानता दी जाती है और राशिचक्र की अन्य राशियो से कोई सम्बन्ध नही रहता। जबकि कबाला पद्धति मे राशियो को भी अको का स्वामित्व प्राप्त है। अग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षरो का इकाई प्रणाली (Unit System) के साथ क्या सम्बन्ध है, उसका ग्रह–विकिरणीय प्रभाव कैसा है, इसका उल्लेख निम्नलिखित सारणी मे किया गया है

इकाई पद्धति (Unit System)

अक्षर	अक	ग्रहीय प्रभाव
AIJY	1	सूर्य सकारात्मक
BCKR	2	चन्द्रमानकारात्मक
GLS	3	बृहस्पति
DMT	4	सूर्य नकारात्मक
EN	5	बुध
UVW	6	शुक्र
OXZ	7	चन्द्रमासकारात्मक
HFP	8	शनि
TH, TS, TZ	9	मगल

<u>टिप्पणी</u> इकाई पद्धति मे यह व्यवस्था नही है कि यूरेनस, नेपचून तथा प्लूटो को कोई स्थान नही दिया गया है ।

हिब्रू कबाला और यूनिट सिस्टम की विशेषताए अपनी–अपनी जगह है, परन्तु भारतीय अक शास्त्रीय पद्धति से यूनिट प्रणाली अधिक मेल खाती है । आगे के प्रकरणो मे इन सिद्धान्तो को उदाहरण सहित पेश किया जायेगा । पाठकगण तब इस प्रकार के मतान्तर से अपना निर्णय निकालने मे सक्षम होगे ।

III
प्रकरण तीन

नाम तथा अंक

किसी भी नाम के वर्णसमूह का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अक शास्त्र मे प्रत्येक वर्ण या आधार का अक मान प्राप्त करके, वर्ण समूह के सभी अक्षरो का अक मान आपस मे जोड लिया जाता है। उसके उपरान्त प्राप्ताक को या तो इकाई पद्धति (Unit System) के अनुसार 1 से लेकर 9 अको तक सकुचित किया जाय या फिर कबाला पद्धति अपनानी हो तो 1 से लेकर 22 तक के अको तक सीमित कर लिया जाए––जैसे कि पिछले और दूसरे प्रकरण मे कबाला पद्धति के अनुसार 1 से लेकर 22 तक की सख्या का ग्रहीय विवेचन किया जा चुका है। प्रत्येक अक का अपना अलग प्रभाव है, अपनी अलग सत्ता और अस्तित्व है।

यहा पर अग्रेजी वर्णसमूह मे कुछ प्रसिद्ध नामो का विश्लेषण किया जायेगा जिनका आम आदमी के जीवन से एक भाग्यवशात् सम्बन्ध है। यह अक शास्त्रीय सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्ति के प्रसिद्ध अथवा पुकारने के नाम से जुडा है। जैसे हम एक व्यक्ति को पुकारते है जोसेफ (JOSEPH) भाई। रामकुमार भाई। इसमे रामकुमार या जोसेफ चाहे किसी प्रकार के चरित्र–गुणो और पेशे वाला व्यक्ति हो परन्तु उस पर उसके नामाक्षरों के सयुक्त एव एक अक का प्रभाव विचारणीय होगा।

हमने दोनो मतो के अनुसार अर्थात् हिब्रू कबाला एव यूनिट प्रणाली के अक मान के आधार पर कुछ प्रसिद्ध नामो का विश्लेषण किया है।

उदाहरण –

यूनिट सिस्टम	कबाला सिस्टम
1 A R T H U R	A R T H U R
1+2+4+8+6+4=25=7	1+20+22+8+6+20=77–14
2 KEWAL	KEWAL
2+5+6+1+3	11+5+6+1+12
17=8	35=8
ANAND	ANAND
1+5+1+5+4	1+14+1+14+4
16=7	34=7
JOSHI	JOSHI
1+7+3+8+1=20=2	10+16+21+8+10=65=11
8+7+2=17=	8+7+11
=17=8	26=8

विश्लेषण उदाहरण– 1(ARTHUR) उपरोक्त

उपरोक्त उदाहरण – (1) में यूनिट प्रणाली में नामाक्षरो का योग 7 आया। दूसरी ओर कबाला प्रणाली मे 14 प्राप्त हुआ। यूनिट पद्धति अक 7 का स्वामी चन्द्रमा है जोकि सकारात्मक अक है। जबकि कबाला मे अक 14 का स्वामी शुक्र, राशि वृष है। अब अगर दोनों के बारीक चारित्रिक अंक शास्त्रीय प्रभाव को देखना हो तो फिर दोनो अंको का विश्लेषण सामने रखते हुए निर्णय लेना होगा कि ARTHUR में क्या क्या गुणो का समावेश हुआ है अन्यथा किसी एक ही अक से भी कई प्रधान गुणो और चारित्रिक रहस्यो का पता चल ही जायेगा। अब यूनिट प्रणाली से चन्द्रमा अगर अक सात का स्वामी है तो प्रकरण चार मे पृष्ठ सख्या 65 पर अक 20 का प्रभाव देखना होगा और कबाला में वृष राशि के प्रभाव को जानने के लिए अंक 14 को (उसी प्रकरण मे) देखना अभीष्ट होगा। अब दोनों का तुलनात्मक विवेचन आपके सामने है

और व्यक्ति विशेष पर उसका कहा तक समायोजन होता है यह निर्णय करना ज्योतिषी का काम है ।

उदाहरण– (2) उपरोक्त

इसके अन्तर्गत यूनिट प्रणाली मे कुल योग 8 आता है। इसी प्रकार कबाला पद्धति मे 26 आता है जोकि 22 से अधिक है। अत इसको सीमित करने पर 8 ही प्राप्ताक निकलता है। अत दोनों मतो मे कोई भिन्नता नही होने से अक 8, स्वामी शनि, राशि मकर का प्रभाव व्यक्ति पर अधिक पडेगा । प्रकरण 4 मे ही अक 8 का अभिप्राय इस व्यक्ति पर खरा उतरता है ।

कुछ और उदाहरणः

इकाई पद्धति (UNIT SYSTEM)	कबाला (KABALA)
E D W A R D	E D W A R D
5 4 6 1 2 4	5 4 6 1 20 4
=22=4	=40=4

इस उदाहरण मे दोनो पद्धतियों से अक 4 ही अन्तिम प्राप्तांक है । इस प्रकार के अक मे दोनो पद्धतियो मे जब एक ही प्राप्ताक हो तो उस पर ग्रह विशेष का और भी सुदृढ और गभीरता से विकिरण प्रभाव अकित होता है । अक 4 को राशि चक्र मे वृश्चिक राशि का प्रतीक माना गया है। इसका सम्पूर्ण गुण–चरित्र प्रकरण 4 मे पृष्ठ 54 पर अकित अक 4 के विश्लेषण से जानकारी प्राप्त करे ।

यूनिट सिस्टम	कबाला सिस्टम
S I D N E Y	S I D N E Y
3 1 4 5 5 1	22 10 4 14 5 10
=19=10=1	=65=11

यहां पर एक ही नामाक्षर के दो प्राप्तांक आये है । यूनिट पद्धति मे 1 और कबाला में 11 आता है । अंक 1 का स्वामी सूर्य है जिसके लिए पृष्ठ 52 पर दिये अक 1 से मिलान करना होगा । दूसरी ओर अंक 11 का स्वामी नेपचून है जिसके लिए अक 11 को प्रकरण चार में अक 11 के विश्लेषण के साथ मिलान करना

होगा। वही चरित्र गुण प्राप्त होगे जो दोनो में सामान्य रूप से विद्यमान होगे।

यूनिट प्रणाली	कबाला प्रणाली
G E O R G E	G E O R G E
3 5 7 2 3 5	3 5 16 20 3 5
=25=7	=52 7

उपरोक्त मे दोनों का प्राप्ताक 7 है जिसमें यूनिट पद्धति मे 7 अक का स्वामी चन्द्रमा है जिसके लिए प्रकरण 4 मे अंक 20 (स्वामी चन्द्र) का प्रभाव विचारणीय होगा, जबकि कबाला पद्धति मे धनु राशि पर इस अक का प्रभाव केन्द्रित होता है। जिसके लिए प्रकरण 4 मे अंक 7 का प्रभाव विचारणीय होगा।

यूनिट प्रणाली	कबाला प्रणाली
A L F R E D	A L F R E D
1 3 8 2 5 4	1 12 17 20 5 4
=23=5	=59=14

यूनिट प्रणाली में अक 5 बुध के प्रभाव क्षेत्र मे आयेगा जिसका विवेचन प्रकरण 4 पृष्ठ 54 पर अक 5 के अन्दर है, जबकि कबाला पद्धति मे अक 14 वृष राशि का अक है जिसको प्रकरण 4 पृष्ठ 60 पर 14 अक मे देखे।

यूनिट प्रणाली	कबाला पद्धति
H E R B E R T	H E R B E R T
8 5 2 2 5 2 4	8 5 20 2 5 20 22
=28=10	=82=10

यूनिट प्रणाली में उपरोक्त अंक 1 का स्वामी सकारात्मक सूर्य है, जबकि कबाला में अंक 10 यूरेनस के स्वामित्व मे आता है। सूर्य के लिए प्रकरण 4 के पृष्ठ 65 पर अंकित अंक 21 का प्रभाव और अंक 10 के लिए प्रकरण 4 पृष्ठ 58 पर अंक 10 के प्रभाव का विश्लेषण करें। इन दोनों का मिश्रित रूप HERBERT के चरित्र गुण में विद्यमान होगा।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
J O H N	J O H N
1 7 8 5 =21=3	10+16+8+14=48=12

अब फर्क यह है कि एक पद्धति मे 3 और दूसरी मे 12 योग आया है। अगर 12 को छोटा कर दें तब भी 3 हो जाता है। परन्तु कबाला पद्धति मे 22 तक के अको को प्रभावशाली माना है। अत इस लिहाज से अक 3 जिसका स्वामी यूनिट पद्धति से बृहस्पति है उसके लिए प्रकरण 4 पर अंक 5 के विश्लेषण को मिलान मे रखना होगा, जबकि दूसरी ओर अक 12 के स्वामी मीन राशि का प्रभाव भी ध्यान में रखना होगा। प्रकरण 4 पृष्ठ 59 पर अक 12 द्रष्टव्य है।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
G A B R I E L L E	G A B R I E L L E
3 1 2 2 1 5 3 3 5	3 1 2 20 10 5 12 12 5
=25=7	=70=7

यहा पुन दो पद्धतियो से एक ही अक 7 आया है। यूनिट पद्धति मे अक 7 का स्वामी चन्द्रमा है जिसके लिए प्रकरण 4 मे (अक 28 चन्द्रमा) वाला प्रभाव विचारणीय होगा तो कबाला पद्धति मे अक 7 (स्वामी–धनु राशि) को प्रकरण 4 पृष्ठ 55 पर अक 7 के चरित्र गुणों से विश्लेषित करना होगा।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
G A B R I E L	G A B R I E L
3 1 2 2 1 5 3	3 1 2 20 10 5 12
=17=8	=53=8

यहा भी पुन दोनो अक एक ही हैं। परन्तु अक 8 को यूनिट पद्धति मे शनि का प्रतिनिधित्व प्राप्त है जबकि कबाला पद्धति मे मकर राशि को प्रतिनिधि माना गया है। अंक 8 को यूनिट पद्धति मे शनि प्रभाव के लिए प्रकरण 4 पृष्ठ 60 पर अंक 14 से मिलान करना होगा जोकि शनि का अंक है। दूसरी ओर कबाला 8 स्वामी मकर को पृष्ठ 56 पर अक 8 के समक्ष दिये गये

वेवरण से मिलाना होगा। दोनो का मिश्रित प्रभाव व्यक्ति पर पडेगा।

यूनिट प्रणाली से	कबाला प्रणाली से
M A U D E	M A U D I
4 1 6 4 5	13 1 6 4 5
=20=2	= 29 11

यूनिट पद्धति के अनुसार अक 2 के स्वामी चन्द्र का नकारात्मक प्रभाव है। इसके लिए प्रकरण 4 मे पृष्ठ 65 पर अक 20 का फलादेश देखे। जबकि कबाला पद्धति से अक 11 का प्रतिनिधि ग्रह नेपचून है, जिसके लिए प्रकरण 4 मे पृष्ठ 58 पर अक 11 के आगे उद्धृत फलादेश का अनुसरण करे।

इकाई (यूनिट) पद्धति	कबाला पद्धति
M A U D	M A U D
4+1+6+4	13+1+6+4
=15=6	=24=6

दोनो पद्धतियों से यहा एक ही अक 6 आया जिसका स्वामी ग्रह भी दोनो पद्धतियो के अनुसार एक ही ग्रह शुक्र है। इसके लिए प्रकरण 4 के पृष्ठ 55 पर दिए गए अंक 6 के फलादेश का अनुसरण करें।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
P A U L E T T E	P A U L E T T E
8 1 6 3 5 4 4 5	17 1 6 12 5 22 22 5
=36=9	=90=9

इकाई पद्धति के अनुसार अंक 9 का प्रतिनिधि मगल ग्रह जबकि कबाला पद्धति के अनुसार अक 9 का स्वामी कुंभ राशि है। अब इकाई पद्धति के अक 9 स्वामी मंगल का प्रभाव जांचने के लिए हमें अंक 16 का विवेचन ग्रहण करना चाहिए और कबाला के अनुसार प्रकरण 4 के पृष्ठ 57 पर अकित अंक 9 के प्रभाव को ध्यान में रखकर उपरोक्त व्यक्ति के चरित्र–गुणों का मिलान करना चाहिए।

<u>नोट</u> – यह सेफारियल ने एक गलती की है। मूल पुस्तक मे यूनिट पद्धति के अक 9 का स्वामी कुंभ राशि के प्रभाव मे माना है, परन्तु प्रकरण दो के अन्त मे दी गई इकाई पद्धति मे अक 9 को मगल के ग्रहीय प्रभाव (Planctary Influence) मे माना है। शायद यह सपादन की भूल भी हो सकती है।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
P A U L I N E	P A U L I N E
8 1 6 3 1 5 5	17 1 6 12 10 14 5
=29=11=2	=65=11

यहा पर यूनिट पद्धति के अनुसार अक 2 को चन्द्रमा का अधिकार क्षेत्र प्राप्त है जबकि अक 11 को कबाला मे नेपचून का प्रभाव प्राप्त है। इसके लिए यूनिट पद्धति के अक 2 को प्रकरण 4 के पृष्ठ 65 पर दिये गये अक 20 के फलादेश से मिलान करना होगा और शेष प्रभाव जानने के लिये प्रकरण 4 के पृष्ठ 58 पर दिए गये अक 11 से फलादेश जानना होगा। इन दोनो प्रकार के विश्लेषण से ही इस नामाक्षर के चरित्र गुण प्रकाश मे आयेगे।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
D O R O T H Y	D O R O T H Y
4 7 2 7 4 8 1	4 16 20 16 22 8 10
=33=6	=96=15

इकाई पद्धति के अनुसार अक 6 का स्वामी शुक्र है जिसके लिए प्रकरण 4 के पृष्ठ 55 पर दिए गये अक 6 के फलादेश और अक 15 के लिए शनि ग्रह का प्रभाव पृष्ठ 61 पर अक 15 के फलादेश का अनुसरण करना चाहिए। इसमे दोनो पद्धतियो की भिन्नता से मिश्रित चरित्र गुण पाये जायेगे।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
L I L I	L I L I
3 1 3 1	12 10 12 10
=8	=44=8

दोनो मे अक 8 का स्वामी शनि आता है। परन्तु कबाला अक आठ का अधिपति मकर राशि है। अत यूनिट पद्धति मे 5 8 स्वामी शनि के लिए प्रकरण 4 मे अक 14 का परिणाम 5 60 पर जाने, जबकि कबाला अक 8 के लिए प्रकरण 4 पृष्ठ पर दिए गये अक 8 का अनुसरण करना उचित रहेगा।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
A D A	A D A
1+4+1	1+4+1
=6	6

दोनो मे अक 6 का स्वामी शुक्र आता है। अत प्रकरण 4 पृष्ठ 55 पर दिए गये अंक 6 के विश्लेषण को मान्य समझें।

इकाई पद्धति	कबाला पद्धति
A L I C E	A L I C E
1 3 1 2 5	1 12 10 11 5
=12=3	=39=12

यूनिट पद्धति मे अंक 3 का स्वामी गुरु आता है, जिसके लेए आपको प्रकरण 4 पृष्ठ 54 पर दिए गये अक 5 (स्वामी बृहस्पति) का फलादेश देखना चाहिए, जबकि कबाला मे अंक 12 का स्वामी मीन राशि है। अत प्रकरण 4 में पृष्ठ 59 पर दिए गये अक 12 के फलादेश को भी देखना चाहिए। दोनों का मिश्रित प्रभाव जातक पर पडेगा।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
D A I S Y	D A I S Y
4 1 1 3 1	4 1 10 21 10
=10=1	=46=10

यूनिट पद्धति में सख्या 1 का स्वामी सूर्य होता है, जिसके लिए प्रकरण 4 के पृष्ठ 65 पर दिए गये अंक 21 के फलादेश को देखे। अक 10 कबाला के लिए यूरेनस का प्रभाव विचारणीय है, जिसके लिए प्रकरण 4 के पृष्ठ 58 पर दिए गये अंक 10 के विवेचन को ग्रहण करे। दोनों का मिश्रित रूप होगा जातक के चरित्र में।

यूनिट पद्धति

E L I Z A B E T H

5 3 1 7 1 2 5 4 8

=36=9

कबाला पद्धति

E L I Z A B E T H

5 12 10 7 1 2 5 22 8

=72=9

दोनो पद्धतियो से अक 9 ही आया। यूनिट पद्धति में अक 9 का स्वामी मगल होता है जिसके लिए कृपया प्रकरण 4 के पृष्ठ 62 पर दिए गये मगल के प्रभाव के लिए अक 16 का फलादेश पढे, जबकि कबाला पद्धति मे अक 9 का स्वामी कुभ राशि है, जिसके लिये प्रकरण 4 के पृष्ठ 57 पर दिए गये अक नौ के फलादेश को देखना जरूरी है। इन दोनो फलादेशो का ही मिश्रित रूप होगा Elizabeth के चरित्र गुणो के अन्दर।

<u>टिप्पणी</u> सेफारियल द्वारा लिखित अंक विज्ञान के यूनिट और कबाला पद्धतियों के प्रयोग के लिए पर्याप्त अग्रेजी नामों के उदाहरण दिए गये है। यहा यह विचारणीय है कि प्रकरण दो मे दिए गये चरित्र गुण एक ही नाम मे दो प्रकार के हो सकते है, परन्तु किसी–किसी नाम मे वह एक ही अंक और अक–स्वामी के क्षेत्र मे आ जाता है। ऐसे चरित्र ज्यादा मजबूत और गंभीर पाये गये हैं, जिनमे एक जैसा ही ग्रह राशि स्वामी हो और एक ही सख्या प्राप्ताक मे आये।

अग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों के आधार पर ही आप किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या जाति के नामो का विश्लेषण प्राप्त कर सकते है। परन्तु शर्त यही है कि अग्रेजी वर्णाक्षर मे लिखा जाने वाला यह उस व्यक्ति का प्रसिद्ध नाम होना चाहिए, जातिगत नाम नही। क्योकि पुकारे जाने वाले नाम के साथ ही ग्रहीय प्रभाव (Planetary Influence) को लागू किया जाता है। फिर भी कोई व्यक्ति कहे कि मेरे पूरे नाम का क्या गुण है तो उसका पूरा नाम जाति सहित लिखकर जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए हमने पिछले पृष्ठो पर पहले उदाहरण लिया KEWAL ANAND JOSHI, जिसका प्राप्तांक दोनो पद्धतियों मे 8 आया, पर फलादेश दो भिन्न भिन्न जगहों से लगाया।

कभी–कभी पूरे नाम को बहुत छोटा करके पुकारा जाता है। ऐसी परिस्थिति मे पुकारे जाने वाले संक्षिप्त नाम का असर ज्यादा होगा। जैसे किसी का नाम EDWARD है उसे पुकारते

त TED कहते है । अत TED का अंक मान जो भी आता है : अंक भी ग्रहीय प्रभाव से उसे अवश्य प्रभावित करेगा ।

संक्षिप्त नाम

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
TED (Edward)	TED
4 5 4=13=4	22 5 4 31- 4

दोनो का एक ही अंक आया सख्या 4, जिस पर यूनिट द्धति के अनुसार सूर्य (नकारात्मक) का नियत्रण है । इसके नए प्रकरण 4 के पृष्ठ 65 पर उद्धृत अक 21 का फलादेश पढ़ें । कबाला पद्धति मे अक 4 का स्वामी राशि वृश्चिक है । अत सके विवेचन पर प्रकरण 4 मे अंक 4 का विवेचन लागू करे ।

इस मामले मे विचारणीय है कि EDWARD, जिसका वेश्लेषण पूर्व पृष्ठ 48 पर किया गया है, का भी अंक 4 ही आता है । अत. दोनों के ग्रह प्रभाव और राशिगुण मिलते जुलते प्राप्त होगे ।

एक सक्षिप्त नाम का उदाहरण और देखे

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
(पूरा नाम)	
R O B E R T	R O B E R T
2 7 2 5 2 4=22=4	20 16 2 5 20 22=85=13
(सक्षिप्त नाम)	
B O B	B O B
2 7 2 =11=2	2 16 2 =20=2

संक्षिप्त नाम BOB का दो अंकों में सार आता है । यूनिट पद्धति मे अक 2 का स्वामी चन्द्रमा होता है और कबाला पद्धति मे भी अक 20 का स्वामी चन्द्रमा होता है, परन्तु कबाला में अक 2 की प्रतिनिधि राशि कन्या है जिसके लिए आपको प्रकरण चार के पृष्ठ 52 पर दिए गए अक 2 के विश्लेषण पृष्ठ 65 पर अक 20 के विश्लेषण को मद्दे नजर रखना होगा ।

एक स्त्री का सक्षिप्त नाम और देखे

यूनिट सिस्टम	कबाला सिस्टम
B E T T Y (ELIZABETH)	B E T T Y
2 5 4 4 1 =16=7	2 5 22 22 10 =61=7

दोनो पद्धतियो मे एक ही अंक प्राप्त हुआ। अक 7 का यूनिट पद्धति मे चन्द्रमा (सकारात्मक) स्वामी है, जिसके लिए चन्द्रमा का प्रभाव (अक 20) प्रकरण 4 के पृष्ठ 65 पर देखना होगा। कबाला मे अक 7 पर धनु राशि का नियत्रण रहता है। जिसके लिए पृष्ठ 55 पर दिए गए अक 7 का फलादेश विचारणीय होगा।

जैसा कि हमने पहले विश्लेषण किया था– ELIZABETH का पूर्ण विश्लेषित अक दोनो पद्धतियो से 9 आता है, जिसमे एक का स्वामी 9 अंक के लिए मगल और कबाला मे धनु राशि आती है। BETTY और जुड जाने से एक अतिरिक्त अक व्यवहार मे आयेगा, जिसका ध्यान विश्लेषण करते वक्त अवश्य रखना होगा।

अकों का ग्रहीय प्रभाव जांचने के लिए यहा पर पर्याप्त उदाहरण दिए जा चुके हैं। अक मान निकालने मे दोनो पद्धतियो मे थोडा–सा अन्तर है, जो कही–कही झलकता है, परन्तु एक ही अक मान (Numerical Value) के बावजूद यूनिट पद्धति तथा कबाला पद्धति में अलग–अलग निकलता है। यह अकमान Numerical Value देखने के लिए प्रकरण दो मे दिए गये अक मान सारिणी को अवश्य कठस्थ करना चाहिए।

IV
प्रकरण चार

अंक तथा उनके चरित्र गुण

अक विशेष का किसी पुरुष या स्त्री के जीवन पर जो प्रभाव पडता है वह उसके चरित्र, गुण, स्वास्थ्य, विवाह, वियोग, निकटवर्ती जनो से सम्बन्ध, दोस्त–दुश्मन, धन, वित्त, कार्यशैली, व्यापार–नौकरी, सट्टा, जुआ, लाटरी–रेस, वसीयत, पुरस्कार आदि से जीता हुआ धन, विवाद, मुकदमा, नौकरी, बेकारी, आलस्य–फुर्ती, यात्राओ, मस्तिष्क के प्रखर तेज, कलात्मक योग्यता आदि के रूप मे अभिव्यक्त होता है ।

आकाश गंगा मे अवस्थित 12 राशियो और 10 ग्रहों के मिले जुले प्रभाव का विश्लेषण कबाला अक विज्ञान की अमूल्य धरोहर है । अत अक 1 से लेकर अंक 22 तक के विकिरणीय प्रभाव को निम्नाकित विवेचन में दिया जा रहा है । इसके आधार पर आपको प्रत्येक अक–मान के गभीर विश्लेषण और चरित्र गुण की विशेषता का ज्ञान अवश्य हो जायेगा ।

पिछले प्रकरणो के आधार पर अब तक यह बताया गया है कि आपके नाम का अग्रेजी वर्णाक्षरो के अनुसार अक–मान दो विभिन्न पद्धतियो के अनुसार कैसे निकाला जाता है । साथ ही वर्णो और अक्षरो और अको का आपस मे क्या ताल मेल है, यह भी स्पष्ट किया जा चुका है । इस प्रयोग से आप अपना, अपने मित्रो और शुभचिन्तको और यजमानो का नामांक और उसका अक–मान ज्ञात करके उसके चरित्र गुण एव ग्रहीय क्षमता की जानकारी ले सकते है । एक नये जन्मे बालक का विश्लेषण करके अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक नाम उसके लिए अक–शास्त्र की दृष्टि से कैसा रहेगा । अगर कुछ खराब या अशुभ गुणो की झलक मिले तो उसके नाम मे परिवर्तन किया जा सकता है ।

टिप्पणी हिन्दू ज्योतिष पद्धति के अनुसार नाम को नक्षत्र के अनुसार निकाला जाता है। परन्तु नाम अच्छा रखने से किसी व्यक्ति के जन्मजात ग्रहीय गुण या अवगुण मिट नहीं जाते। जैसे नाम तो है सत्यवीर, परन्तु है झूठा। नाम हो बहादुर सिह और हो डरपोक तो वह नाम रखना सार्थक नही होगा।

अंक एक

इस पर हिब्रू मतानुसार बुध ग्रह का प्रभाव रहता है जो कि बुद्धि एव मस्तिष्क पर नियत्रण करता है। अच्छी बौद्धिक क्षमता बुध का ही सबल प्रभाव है। यह अक शारीरिक श्रम के बजाय दिमागी कार्य की ओर अधिक आकर्षित होता है। इसी लिए यह शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान अध्यापन, प्रशिक्षण से जुडा रहता है। इसी कारण अक 1 के जातक प्रशासनिक एव दूसरे प्रकार के प्रबन्ध एवं कार्यान्वयन व्यवस्थाओ से सम्बद्ध रहते हैं। इस प्रकार के महानुभाव स्वतत्र निर्णय लेने वाले, स्वावलम्बी, स्वतत्र रूप से कार्य करने की क्षमता वाले, चतुर, परिस्थिति के अनुसार अपना रुख बनाने में समर्थ वास्तविकता के अच्छे और बुरे दौर को समझने मे कुशल और अपने कार्य–क्षेत्र मे आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करने मे कुशलता से युक्ति निकाल लेते है। इस अक के व्यक्ति निरीक्षण–परीक्षण और अवलोकन करके अपने अनुभवो का दायरा बढाने मे उत्सुक रहते है। यात्राए और भ्रमण करने से भी ज्ञान क्षेत्र सबल होता है। लम्बी यात्राओ के बजाय छोटी–मोटी यात्राएं इनको प्रिय लगती हैं। साहित्य की किसी न किसी विधा पर लिखने–पढने की भी इनकी अभिरुचि रहती है। जैसे पत्रकारिता, लेखन जीवी, कहानीकार, व्यंग्यकार एवं चित्रकार। अखबार एवं प्रकाशन सस्थाओ से भी जुडे रहते है।

अंक दो

इस पर कन्या राशि का प्रभाव माना गया है। यह अक किसी भी मामले मे अच्छे–बुरे का निर्णय करके उस पर सही आदेश देने की प्राकृतिक क्षमता रखता है। व्यापार और सहकारी चैनल मे बुद्धिकौशल का यह एक नायाब तरीका खोज निकालता है। अपने निर्धारित लक्ष्य के प्रति सजग रहना और सभी प्रकार की परिस्थितियो से रास्ता निकाल लेना इसकी विशेषता है। या किसी दूसरे के द्वारा बनाये गये दैनिक नियमो का परिपालन भी कर सकने मे समर्थ है। यदि किसी और कार्यप्रणाली मे सुधार के

निमित्त कदम उठाना हो तो भी यह अक विशेष दक्षता दिखाकर अडचनो की राह मे नया रास्ता निकाल सकने मे प्रवीण होता है। तमाम सघर्षो को झेलते हुए भी यह अक किसी दुष्प्रवृत्ति से प्रभावित हुए बिना प्रत्येक झझट को हटाने मे समर्थ रहता है। कमजोरी और सच्चाई को छुपाने की इसकी नीयत नहीं होती है। साफ–सफाई तथा टिप–टाप के आप विशेष इच्छुक होते है। अनुशासन और सरल पद्धति से कार्य करते हैं। यह अंक कभी–कभी कष्टकारक और अपवाद का भी सूचक है। अत दूसरो की कमी–बेशी निकालने मे इनको सोच समझ कर काम करना चाहिए। चाहे कितना ही कडवा सच हो उसको उगलने मे सतर्क रहना होगा, अन्यथा दूसरों के साथ सम्बन्ध खराब भी हो सकते है।

अंक तीन

इस की प्रतिनिधि राशि तुला है। यह अक सदैव शान्ति और न्याय तथा समता का प्रतिनिधि रहा है। किसी भी जोर जबर्दस्ती और जुल्म के खिलाफ होने मे इसको देर नहीं लगती। दूसरो के साथ आपके सम्बन्ध हमेशा मधुर और व्यवहार कुशलता से परिपूर्ण होते हैं। स्वच्छता और आत्मनिर्भरता के बीच आपको मानसिक आजादी से ज्यादा लगाव रहता है तथा दूसरों द्वारा आरोपित होना और प्रतिकूल स्थितिया पैदा करने की प्रवृत्ति अपनाना आपके जीवन का उद्देश्य नहीं होता। फिर भी ऐसी स्थिति आ जाने पर आपका विरोधी मुह की खाता है। किसी भी विवादास्पद और तर्कपूर्ण मामले से बचना आपका स्वभाव है। विरोध को बर्दाश्त कर लेना और इसके बाद नई युक्ति निकाल कर विरोधी को मात देना भी आपकी कूटनीति का एक हिस्सा होता है। सामाजिक और सार्वजनिक महत्व के कार्यो से आप जुडे रहना चाहते है। इसके माध्यम से आप पदोन्नति और प्रतिष्ठा भी अर्जित करते रहते है। आपके मातहत कार्यकर्ता और घरेलू सदस्यो पर हुकूमत करना भी आपके हित में नहीं होगा। वैसे तो आप बडी जल्दी घुल–मिल जाते है पर बडी जल्द नाराज भी हो सकते है। दूसरो की आलोचना से आपको परेशानी हो जाती है। क्रोध चिरस्थायी होता है और अपने विरोधी को आप कभी भी कहीं पर मात देने मे कुशल माने जाते है।

अंक चार

इस को वृश्चिक राशि के प्रभाव क्षेत्र मे माना गया है। यह राशि अक्सर अलग थलग रहने वाली आत्मकेन्द्रित तथा कुछ हद तक गुप्त कार्यो मे रुचि रखने वाली मानी गई है। या यह आपको बहुत–सी बातो मे दूसरो से गोपनीयता बरतने वाला बना देती है। यद्यपि इस प्रक्रिया के कारण दैनिक सामाजिक जीवन मे कोई बाधा नही आती है फिर भी इसको छुपा रुस्तम भी कभी कभी कहना पडता है। परन्तु छुपा रुस्तम होना यह भी दर्शाता है कि आपकी पहुच बहुत ऊची होगी और सामाजिक दायरा बहुत से काम के आदमियो से भरा है। जो काम दूसरो को जरा कठिन लगता है वह आपके हाथों से खेल खेल मे हो जाने वाली मामूली घटना है।

इस अंक वालो मे जबर्दस्त प्रतिरोधी शक्ति होती है। बीमारी, भय और शोषण को सहन करने की क्षमता होती है। अच्छे–बुरे दिनो मे आपका चेहरा वैसा ही सहज रहता है जैसे कि आप निश्चिंत होकर जीवन व्यतीत कर रहे हो। आपके अन्दर लडाकू प्रवृत्ति और बहसबाजी करने की योग्यता भी रहती है। शक्ति तथा कूट क्रिया भी आपके अन्दर बहुत होती है। नाटकीयता, गोपनीयता, अपने स्वार्थ पूरे करने के गुर तथा चालबाजी मे कुशलता इस अक की प्रधान विशेषता है। अपनी बुद्धि को श्रेष्ठ समझना और मनमाना जीवन व्यवहार आपका चरित्र गुण होगा। दुस्साहस, पलायन अथवा कतराने वाली बात भी कोई नही करते। आपकी मर्जी के खिलाफ आप से कोई कुछ नही करवा सकता।

अंक पांच

इस अक पर वृहस्पति का ग्रहीय प्रभाव रहता है। इसके प्रभाव से आपको उदार और सहनशाली दृष्टिकोण प्राप्त होगा। इसके कारण ही आपकी सार्वजनिक कीर्ति प्रखर होगी तथा किसी विशिष्ट वर्ग का नेतृत्व अथवा अधिनायकत्व प्राप्त होगा। आप हमेशा दूसरो के सकट मे सहायक बनते है, परन्तु इसमें आपको कुछ सावधानी भी बरतनी चाहिए। कभी–कभार कोई आपकी इस विशेषता का अनुचित लाभ उठा सकता है। धार्मिक और दार्शनिक विषयो पर आपकी गहरी पैठ होती है। आस्तिक विचार धारा के साथ ही घूमने फिरने में आपकी बेहद रुचि रहती है। इसके साथ

ही किसी महान् कार्य को पूरा करने का बीडा उठाना भी आपको रुचिकर लगता है। इस दिशा मे बौद्धिक, शैक्षणिक भावनाए भी आप मे विद्यमान रहती है। ईश्वरवादी होने के साथ-साथ एक अच्छी सीमा तक आप आशावादी भी है, जिसके चलते कभी कभी महत्वपूर्ण कार्यो या मामलो को भाग्य के भरोसे छोड देने से नुकसान भी उठा सकते है। इस अक के व्यक्तियो को जीवन म एक बात का तो विशेष ध्यान रखना चाहिए-- वह यह कि यदि आप आशावादी बनकर जीना चाहते है तो कर्म से कभी मुंह नही मोडे। अगर पुलाव खाना चाहते है तो खयालो से नही, वास्तविकता से उसकी युक्ति भी निकाले तभी जीवन की सार्थकता आपको नजर आयेगी।

अंक छः

इस का प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है। अत शुक्र ग्रह की प्रधानता इस अक के नामाक्षर वाले व्यक्तियों में बहुत आसानी से नजर आयेगी। शुक्र प्रधान व्यक्ति सजे–संवरे, सुन्दर वेशभूषा तथा कमनीय आकृति वाले, धनी, सौभाग्यशाली, कामुक, कलात्मक अथवा अति कोमल भावुक सवेदनाओ से परिपूर्ण होते हैं। शुक्र ग्रह प्रेम, यौन–सुख, स्त्री–सुख तथा सौन्दर्य–सुख का प्रतीक भी है। इन्ही चारित्रिक गुणों के कारण विपरीत योनि का आपके जीवन मे विशेष योगदान होता है। अगर आपकी कल्पना के अनुरूप जीवन साथी या दाम्पत्य सहयोगी न मिले तो आपके लिए जीवन एक समस्या भी बन जाता है। ऐसी स्थितियों मे कभी–कभी गुरुतर घटनाए भी आपके जीवन मे घट जाती है। मित्रता और पारपरिक सम्बन्ध आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अगर वैवाहिक सहचर मनोनुकूल साबित हो तो आपको प्रगति करने में देर नहीं लगती। कलात्मक अभिरुचियों के कारण कभी–कभी कलाकारी दिखाने का मौका भी इनको मिलता है जिससे दूसरों को आकर्षित करने मे देर नही लगती। अच्छे कवि, नाटकीय कर्म करने वाले, सगीतज्ञ, गायक, सज्जाकार, पाक विशेषज्ञ, रगकर्मी तथा ललित कलाओ का ज्ञाता भी आपको माना जा सकता है।

अंक सात

इस अक का राशिगत स्वामी कुम्भ राशि को नियत किया गया है। यह प्रभाव अंक धारक को स्पष्टवादी और मुहफट अधिक बनाता है। स्वतत्र अस्तित्व, आजादी और विचारो के

निर्बाध प्रवाह पर भी इसका आधिपत्य है। व्यक्तिगत जीवन की आजादी के अलावा यह आपको कार्यक्षेत्र, व्यवसाय अथवा सभी गतिविधियो मे पूर्णत आत्मनिर्भर बनाता है। सामान्य परिस्थितियो मे आप बहुत ही परम्परावादी और रीति–रिवाजों को निभाने वाले होते है। परन्तु जब जीवन एक रस होकर दिनचर्या नीरसता की ओर बढने लगे अथवा कोई भी शक्ति आपके ऊपर नियत्रण/हस्तक्षेप करने लगे तो आपका विद्रोही रूप सामने आ जाता है और परिणामों की चिन्ता किए बिना आपके हाथो से कार्रवाई आरभ हो जाती है जिसके कारण बहुधा आपको अपयश या तिरस्कार का पात्र भी बनना पडता है।

आप प्राकृतिक रूप से कर्मशील, चुस्त, सक्रिय, शक्तिशाली ऊर्जावान तथा आशावादी रहते हैं। भावनापूर्ण स्पन्दन और दिमाग की लहरे आपको कहीं भी बहाकर ले जा सकती है, परन्तु आवेग और जोश को अपनाने के दौर मे आपको वाछित आराम को भी स्थान देना चाहिए, अन्यथा दूसरे प्रकार के शारीरिक कष्ट या मानसिक द्वन्द्व आपके मन में उठ सकते है। आप स्वय एक स्वनिर्मित पद–प्रतिष्ठा के स्वामी होते है और दूसरों को भी आप अपना उदाहरण देकर प्रभावित करते है। खेल–कूद तथा मनोरजन मे आपकी रुचि जन्मजात ही होती है।

अंक आठ

इस अंक पर राशिचक्र की शनि प्रधान राशि मकर का प्रभाव रहता है। इसके फलस्वरूप यह आपको महत्वाकांक्षी, व्यवहारशील, लोभी और जमाखोर भी बनाता है। इस अंक धारक की प्रकृतिदत्त इच्छा अधिकार और सत्ता को प्राप्त करने मे विशेष क्रियाशील रहती है। परन्तु दूसरो का अनावश्यक बोझ अपने ऊपर नहीं लाद सकते। अत· घर–परिवार मे भी अकेले आत्मलीन रहने वाले अधिकाश व्यक्ति होते है। पदाधिकारी, नेतृत्व संचालक, पथप्रदर्शक अथवा मसीहा बनने के तत्व गुण इनमें पाये जाते है। अपने काम मे माहिर, कठोर परिश्रमी और लगनशीलता इनका प्रधान गुण है। दूसरे लोगो पर आप सदैव हावी रहते है और दूसरों के लिए कीर्तिमान बन जाते हैं। जो काम दूसरो को कठिन और अकल्पनीय लगते है उनका सम्पादन करना आपके लिए एक खेल है।

इस कार्यक्षमता के गुण विशेष के होने से आपके अन्दर एक अहकार और अधिनायकत्व भी जगह बना लेता है। आप चाहते है कि दूसरे भी जब आपके आदेश का पालन करे तो वैसी ही कार्यकुशलता दिखाएं जिसकी आपको अपेक्षा है और यदि उसमे दूसरे से कोई त्रुटि रह जाये तो आप सन्तुलन खो बैठते है और बुरी तरह दूसरे पर बिगड सकते है। ऐसी प्रवृत्ति से प्रत्येक व्यक्ति आपके निकट नही आ सकता है। तनाव, नैराश्य और खेद आपके विरोधी तत्व हैं। परन्तु यही चीजे जब आपको कभी पीडित करती है तो आप जीवन दर्शन के परमार्थ पथ की ओर झुकने लग जाते है और एक दिन विरक्त होकर साधु सन्तों जैसा जीवन वृद्धावस्था में ग्रहण कर लेते है। चिन्ता और तनाव के दौर मे आपको अकेला नहीं रहना चाहिए, अन्यथा आत्मघाती विचार उठने लगते हैं। दूसरो को नीसहत देना आपके लिए सुलभ मनोरजन है जिससे सचमुच तनाव भी दूर होते हैं और एक मर्यादा भी आप समाज के बीच स्थापित करने मे सफल हो जाते है।

अंक नौ

अक नौ पर राशिपथ की कुभ राशि का प्रभाव माना जाता है। यह अक यही घोषित करता है कि आप एक आदर्श विचारक, प्रदर्शन प्रिय, परावर्ती और अध्ययनशील है। अपने मित्रों के विषय मे आप एक सलाहकार के रूप मे अपने को पेश करते रहते है और आपके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध भी बिना किसी भेदभाव के बने रहते है। बाद मे यह स्थिति हो जाती है कि सभी शुभचिन्तक और सहकर्मी आपकी सलाह पर निर्भर रहने लगते है। परन्तु जहा पर आर्थिक समस्या अथवा किसी के एहसान का सवाल है उसके दौरान मित्र अथवा रिश्तेदार, सम्बन्धी आदि में भेद करना भी आप नहीं भूलते है। सामान्यत यह देखा गया है कि यह अक आपको सदैव प्रसन्नचित्त, खिलखिलाहट भरा, समझदार और आशावादी बनाए रखता है। आपकी कुछ विशेष पसन्द और नापसन्द भी है। वहा पर आप बहुत ही दृढ़ चरित्र साबित होते है जहा पर आपके सिद्धान्त, मान्यताएं और आदर्श आडे आते है। आपकी इच्छा के विरुद्ध आपके अधिकार–क्षेत्र में कोई भी काम नहीं हो सकता है। किसी भी अनचाहे मामले का आपके द्वारा तीव्र प्रतिवाद होता है।

अंक दस

दस के अक पर यूरेनस ग्रह का प्रभाव अकित होता है। इस ग्रह की कुछ उग्रवादी और तीव्र प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति का प्रदर्शन भी आपके चरित्र गुणो मे होता है। आपके अन्दर जहा एक असाधारण प्रतिभा, विचार शक्ति और प्रेरणा होती है, वही आपके अदर शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान है। सकटकाल मे बचाव के उपाय खोजने मे आप बेजोड साबित होते है। अपने विचारों को आप त्वरित गति और तीव्रता से लागू करने मे विश्वास रखते है। अगर इनके लागू होने मे कोई व्यवधान आये तो आप फटाफट रास्ता बदलने की तजबीज भी निकालने लगते है। इसके चलते कुछ विवाद और झगडे भी आपके और सहयोगियो के बीच उठ सकते है। इसके कारण व्यावहारिक कठिनाई आती है और किसी–किसी समय तो व्यवसाय अथवा नौकरी भी खतरे मे पड सकती है। इस दृष्टि से आप अपने कानूनवेत्ता है तथा कुछ भी हो जाये, अपनी राह चलना ही आपको समयोचित तथा बुद्धिमत्तापूर्ण लगता है। दूसरो की इच्छा और आदेश की आप परवाह नही करते है।

अंक ग्यारह

अक ग्यारह का प्रतिनिधि ग्रह नेपचून है। यह अक आपकी अन्तरात्मा को किसी भी सक्रिय मामले से जोडता है और आपको न्यूनतम साधनो से ही अच्छे परिणाम निकालने मे सबल तथा सफल भी बनाता है। आप के काम करने के तरीके, सुविधाजनक तत्र का विश्वास और कार्यकुशलता खुद ब खुद आपको जन साधारण से जोड देती है। आपके नेतृत्व मे किए गये कार्य असाधारण सफलता तो प्राप्त करते ही है, साथ ही प्रतिक्रियास्वरूप आपकी मनोवृत्ति भी सतुष्ट रहती है।

इस मामले मे यह सावधानी भी रखनी चाहिए कि आपकी सम्मति और सलाह का दूसरे लोग दुरुपयोग करके आपके लिए सिरदर्द न खडा करे या फिर कोई ऐसा कार्यक्रम जो सद्भावना के चलते दूसरो के निहित स्वार्थो की पूर्ति का मार्ग न बन जाए और आपके लिए अपना ही भविष्य सदिग्ध हो जाए। इन अपवादो का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। आपके अन्दर अद्भुत मनोवैज्ञानिक शक्ति और क्षमता है जो यथोचित रूप मे विकसित होकर एक विशेष व्यक्ति का परिवेश आपके अन्दर भर देती है।

तमाम किस्म की विशिष्टताए, योग्यताए, निखार और व्यावहारिक एकाधिकार भी आपको अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति एव मधुर व्यवहार के मिश्रण से मिलता है जिसमे आप कही पर भी मध्यस्थ बनते है तो सावधानी से किए गये पेचीदे कार्य भी पलक झपकते ही बनते जाते है। दूसरो पर असर डालने की क्षमता और युक्ति आपको सफल व्यक्ति बनाती है जबकि आडम्बर और क्षणिक जोश हमेशा ही पीछे रह जाता है।

अक बारह

अक बारह पर मीन राशि का प्रभाव अधिक सबल परिलक्षित होता है। इससे जाहिर होता है कि एक तो आप आदर्शवादी है और दूसरे शान्तिप्रिय भी। बहुत ही सवेदनशील और भावुकतापूर्ण चरित्र की विशेष ग्रन्थि आपके अन्दर विद्यमान रहती है। योग्यता का जहां तक प्रश्न है, आप जिस दायरे मे रहते है वहा पर आपसे ज्यादा योग्य दूसरा नही हो सकता। कभी–कभी आप असीम प्रसन्नता से चहक उठते है। इस वक्त आप बहुत आशावादी नजर आते है। जब आप अपने आनन्दमय मूड मे रहते है, तब दूसरो के प्रति सहानुभूति और हमदर्दी का इजहार भी करते है। दूसरा व्यक्ति अगर कष्ट या परेशानी मे हो तो उसके प्रति पूर्ण सहानुभूति का रवैया आपको ख्याति यश भी देता है। यही आपकी प्रगति का रहस्य भी है।

दूसरो की हल्की बात अथवा अवाछनीय वक्तव्य से आप बडी जल्दी आहत और मर्मान्तक हो जाते है। इस प्रकार की अफवाहो से आपको अपना वातावरण खराब और दूषित हो जाने का भय हो जाता है। ऐसी स्थिति में आपको लगता है जैसे सारी दुनियां आप पर ही नजर गडाये बैठी हो। परन्तु जीवन मे कभी–कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब बहुत से लोग आपके द्वारा उठाये जाने वाले कदम की ओर ध्यान लगाकर बैठे रहते हैं। आपकी हार या जीत एक पूरे समुदाय के स्वाभिमान का प्रश्न हो जाती है। अपना प्रतिवाद करना आपको अच्छी तरह आता है। फिर भी अफवाहो से कई बार आपको अपने अभिन्न मित्रो से अलग होना पडता है।

अंक तेरह

अंक तेरह पर राशि चक्र की मेष राशि का प्रभाव अधिक प्रकट होता है। यह अक आपको स्वतत्र, स्वच्छद, चुस्त, क्रियाशील,

सक्रिय और दूसरो का सचालन या नेतृत्व करने की अभिलाषा से पूर्ण बनाता है। वैसे कुदरती तौर पर हर एक समूह, समाज अथवा सहकारी कार्य में आप ही नेता अथवा नायक बन बैठते हैं। वक्त पडने पर आगे–आगे रहने की यह प्रवृत्ति आपको नेतृत्व शक्ति और अधिकार प्राप्त करने में सहायक बन जाती है। प्रकृति प्रदत्त गुणो के अनुसार आप मे साहस, शौर्य विद्यमान रहता है। जब भी कोई खतरा आता है तो आप निर्भय होकर उस पर विचार करने लग जाते है। परन्तु आपके द्वारा भी ऐसा मौका आ जाता है जब खतरा सामने खडा हो उठता है। ऐसी स्थिति मे सभी का स्तब्ध और भयभीत हो जाना आपके नेतृत्व के दोष को उजागर कर देता है। अपनी इच्छा के अनुसार चलते हुए अपने किसी भी उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा कर लेने पर लोग आपकी बौद्धिक क्षमता, शारीरिक शक्ति, तेजी और फुर्तीलेपन की सराहना करते है। आप एकाएक एक दिन चोटी पर पहुचे हुए भी दिखाई पडते है। चतुराई और उत्साह एव प्रतिबद्धता के चलते सफलता प्राप्त करने मे आप कीर्तिमान स्थापित करते है। प्रगति का उदाहरण देते वक्त आपका नाम अपने दायरे मे कई बार आता रहता है। अगर अपराध अथवा असामाजिक दिशा मे आपके कदम उठ जाए तो आपका सारा बल और प्रयास गलत दिशा मे मुड जाने पर अपने पाव मे कुल्हाडी मार लेने जैसा साबित हो जाता है। इसके कारण आप सम्पूर्ण जीवन समाज मे प्रतिष्ठा नही प्राप्त कर सकते है और लोग आपसे सावधान होकर चलते है।

अत· क्रोध और असतुलित मस्तिष्क से किए गये कामो से आपकी प्रगति प्रभावित हो सकती है। वैसे आप सदा ही अन्याय, अनाचार और गुलामी तथा शोषण जैसे मामले मे विद्रोह कर अपनी आवाज उठाने मे आगे रहते हैं। अवाछित तथा असहनीय स्थितियो से सघर्ष करना आपका ध्येय सदा ही रहता है। परन्तु जब यही अवगुण आपके कारनामो मे झलकने लगे तब लोग आपकी क्या हालत बनाएगे यह भी आपको जान लेना चाहिए।

अंक चौदह

अंक चौदह पर राशिचक्र की दूसरी राशि वृषभ का प्रभाव अकित हुआ है। इस राशि का प्रतिनिधि चिन्ह बैल है जो आज्ञाकारी, सेवा करने में प्रवीण, सक्षम, सबल और सदैव साथ

देने वाला पशु है । शुक्र इस राशि का स्वामी है । यह अक आपको प्रयोग वादी, कार्यकर्ता, मेहनती, उद्यगी, धैर्यवान तथा जीवन के महत्वपूर्ण हितो को सफलतापूर्वक सचालित करने वाला बनाता है । आपको योजनाओं को बनाना और उन्हे कार्य रूप देना एक रुचिकर अभ्यास जैसा लगता है । इस क्रिया के लिए आप अपना तन मन धन और समय सीमा को पूर्णत· अर्पण करते हैं । वस्तुवादी–भोगवादी प्रकृति के साथ धन सम्पति के कार्य आप बड़ी गभीरता से अजाम देते है । व्यापार, कृषि अथवा लेखन कुछ भी आपका व्यवसाय हो सकता है । आपकी तमाम इच्छाए धन की आपूर्ति से पूर्ण हो जाती है । एक सच्चा प्यार– दोस्तों की दोस्ती– मा बाप का आशीर्वाद भी आप पैसो के बदौलत खरीद सकते है– ऐसी आपकी मान्यता है । पैसा अर्थात् धन दौलत ही सफलता है यह भी आपकी मान्यता है ।

अपनी मान्यता और बुद्धि बल पर आप विशेष निर्भर रहना उचित समझते है । अपने इरादो और साहसपूर्ण कामों के आगे अगर कोई समस्या दूसरों की वजह से पैदा हो जाये या कोई पैदा करे तो उसे आसान तरीके से रास्ते से हटा देने मे भी आप माहिर माने जाते है । दूसरो की सलाह को आप अपने फायदे के लिए जरूर मान लेते है, अन्यथा उसकी योग्यता को आप उसके दायरे तक ही देखना पसन्द करते है । सह अस्तित्व और सहयोग आपको रुचिकर लगता है ।

अंक पन्द्रह

इस अक पर शनि ग्रह का विकिरण प्रभाव रहता है । इस कारण आपके चरित्र से गभीरता व्यक्त होती है । प्रतिदर्शी, प्रतिक्रियावादी, कुछ हद तक अन्तर्मुखी रहने वाले और बड़े–बड़े पदाधिकार ग्रहण करने और प्रशासन को कुशलता से चलाने की क्षमता का होना भी एक आपकी विशेषता है । जिम्मेदारी और कर्तव्य का यथासमय पालन करना आपका प्रथम गुण माना जायेगा । जीवन आपके लिए हमेशा सहज नही रहता । आपको हमेशा ही अन्याय, प्रतिबन्ध और सीमित अधिकारो के खिलाफ लडना पडता है । कुप्रबन्ध, बेईमानी और अकुशल पदाधिकारियों के आप शत्रु बन जाते है । अपने धैर्य और सहिष्णुता के माध्यम से आप अनेक कठिनाइयों को पार कर लेते है । प्रगति मार्ग पर आने वाले हर रोडे को आपको हटा कर चलना पडता है ।

शनि जीवन के उत्तरार्ध पर अपना प्रभाव रखता है। अत यह निश्चित है कि जीवन के पूर्वार्ध मे आई कठिनाइया, मायूसिया और सघर्ष आपके जीवन के उत्तरार्ध मे अवश्य रग लाते है। पूर्व भाग मे आई अडचनो, अभावो और विवशताओ का पुरस्कार बाद की अवस्था मे अवश्य मिल जाता है। यह ग्रह एक ओर तो स्वच्छ राजनीति की ओर आकर्षित करता है तो दूसरी ओर दया, धर्म और मानवोपयोगी अभियानो का नेतृत्व संचालन करने की दिशा मे भी आपका ही चुनाव होता है। आपके अन्दर सगठन क्षमता रहती है। यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अब एक ऐसा समय भी आयेगा जब दुनिया बहुत तरक्की कर चुकी होगी। ऐसी स्थिति में शनि प्रभाव वाला अक पन्द्रह का व्यक्ति ही योजनाओ का प्रारूपकार होगा और वही उनको कार्यान्वित करेगा। आपके व्यक्तित्व से यह निश्चित हो जाता है कि मेहनत और कठोर परिश्रम करने की क्षमता एक मात्र आपके अन्दर रहती है और छोटे–मोटे मामलो की बजाय आप सदैव महान उद्देश्यो को प्राथमिकता देते है। अत कष्ट, पीडा और अवसाद के बीच से निखर कर केवल आप ही इस संसार मे स्वर्ग की कल्पना को साकार करने मे योगदान दे रहे है। शेष भोगी जातको से तो विश्व ससाधनो का दोहन ही हो रहा है। जैसे लोग गरीबी के परिश्रम से अपनी जिन्दगी का बोझ ढो रहे है, यह स्थिति आपके साथ नही है। यही सतोष है।

अंक सोलह

इस अंक पर मगल ग्रह का प्रभाव झलकता है। यह यही दर्शाता है कि आपके चरित्र गुणो में साहस और शौर्य विशेष रूप से विद्यमान है। ये गुण शारीरिक और मानसिक स्तर पर विद्यमान है और कैसा ही प्रतिकूल अवसर आये आप उसका मुकाबला करने मे सक्षम रहेगे। अपने सघर्षों से जूझने मे आप कोई कसर नही उठा रखते हैं– भरपूर शक्ति से जुट जाते है, चाहे समय कितनी ही विपरीत परिस्थितिया पैदा कर दे। यह भी बडा मुश्किल काम होगा कि कोई आपकी भावनाओं और इच्छाओं को दबा सके, या आपके जल्दी ही क्रुद्ध हो जाने वाले मूड को बदल सके। अत· कुछ तामसिक गुणों से युक्त व्यक्तित्व के लिए यह भी मुश्किल हो जाता है कि वह अपने स्वजनो और परिजनो को खुश रख सके। आपको इस झक्खी मिजाज के कारण और

बदलाव–परिवर्तन न सह सकने के कारण घरेलू क्लेश का शिकार भी होना पडता है। आप किसी जोखिम पूर्ण अभियान, बहादुरी के कार्य एव आन्दोलन तथा नेतृत्वपूर्ण श्रम–संगठन के लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकते है। चलता–फिरता रहना अथवा आये दिन नये पेचीदे कार्यों का संचालन करना आपकी प्रकृति के लिए अधिक लाभकारी और प्रतिष्ठा के अनुकूल है। कभी–कभी जब परिस्थितिया आपके ऊपर प्रहार करती हैं तो या तो आप भडक उठते है, या दूसरों के द्वारा परित्यक्त हो जाते है जिनका आपसे वैर–विरोध रहता है।

अंक सत्रह

अक सत्रह पर मिथुन राशि का आकाशीय प्रभाव अधिक स्पष्ट रहता है। इसका यही तात्पर्य रहता है कि आप शारीरिक और बौद्धिक तौर पर पूर्णत क्रियाशील, चुस्त और कार्यरत व्यक्ति बनेगे। बहुतायत और विविधता अथवा बदलाव करते रहने की आपकी अभिलाषा उत्कट और उग्र रहती है। अपनी इन लिप्साओ को हाथ से निकल जाने देना भी आप नहीं चाहते। विचारो और कार्यो की गति और इसके ताल–मेल को बैठाने मे आप सदैव सक्रिय रहते है। जो कुछ सोचते है उसको कार्यरूप देना आपके लिए कठिन नही है। अपने उद्देश्य से यदा–कदा हटते है जबकि वैसा करना आपके लिए अपरिहार्य हो जाता है। योजनाओ मे व्यवधान आने पर आपको उनके कार्यान्वयन का माध्यम नही बदलना चाहिए, जब तक ऐसा करना जरूरी न हो। अन्यथा यह कदम आपकी उन्नति को अवश्य रोकता है। बहुत सारे काम एक साथ लेकर चलाना भी आपकी सफलता मे बाधक है। अत· एक समय मे एक या दो काम ही आपकी क्षमता के लिए अनुकूल हो सकते है अन्यथा कई काम एक साथ लेने मे जहा व्यावहारिक दिक्कतें आयेंगी वहां आपका सकल लाभ भी घट जायेगा। अत· अपनी बहुमूल्य शक्ति, समय और धन को आप अगर सही राह पर लगाना चाहें तो सीमित तरीके अपनाते हुए महत्वपूर्ण कार्यो को ही प्राथमिकता दे।

अंक अट्ठारह

इस अक पर कर्क राशि का प्रभाव अधिक व्यक्त होता है। इन व्यक्तियो मे एक तीव्र गति की भावना और उच्च श्रेणी की भावुकता का समावेश रहता है। आपकी कल्पना शक्ति भी

विचित्रता और विविधता सहित अपने ताने–बाने बुनती रहती है। आप किसी भी पुरानी घटना का जीवन्त प्रस्तुतीकरण कर सकते है भले ही उसके दायरे मे आपका जीवन–चक्र कभी नही घूमा हो। आप अपने भूत काल से हमेशा सबक लेने की चेष्टा करते है। इसके आधार पर ही आप अपने वर्तमान से निबटते है और आने वाले दिनो को भी दृष्टि मे रख लेते है। घर और परिवार की घटनाओ का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव पडता है तथा आपके निर्णय और क्रियात्मक दृष्टिकोण पर भी इसका प्रभाव पडता है। आपके रहन–सहन की हमेशा प्रशसा होती है। अगर कोई दूसरा व्यक्ति आपका मेहमान हो तो आप उसके लिए अनेक आरामदायक उपाय करते है। चन्द्रमा की राशि आपको बहुत अच्छी स्मरण शक्ति प्रदान करती है। विचारो की सघनता और सहजता और प्रचार के हथकण्डो मे आप माहिर है और दूसरो का या अपना फायदा देखते हुए इनका बहुतायत से इस्तेमाल किया जा सकता है।

अंक उन्नीस

अक उन्नीस पर सिह राशि का प्रभुत्व माना गया है। यह अक आपको एक विशेष मात्रा मे महत्वाकाक्षी और उच्च विचारों की प्रेरणादायक शक्ति देता है जिसके जरिए आप जीवन की राह को सुगम और सहज बनाते हुए महत्वपूर्ण अधिकारो से सुसज्जित हो सकते है। यह हमेशा ही एक सत्यापित तथ्य है कि अपने दायरे मे आप एक केन्द्रीय भूमिका को निभाने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति बन कर रहते हैं। दूसरों के लिए आप जितना भी अच्छा सभव हो, करने के लिए तैयार रहते है। स्वाभिमान और मान प्रतिष्ठा की रक्षा करना भी आपको बहुत अच्छी तरह आता है। देशभक्ति और स्वामीभक्ति को आप हमेशा इज्जत देते है। स्वय भी इन्ही जन्मजात गुणो मे पले बढे होते है। जीवन मे ऐसे भी क्षण आते है जब भावावेश और जल्दीबाजी मे किए गये फैसलों को भी अपनाना पडता है भले ही कभी–कभी इसके चलते आपका पदच्युत हो जाना भी निश्चित होता है। एक बार आपको ज्ञात हो जाये कि आपने गलती की थी या कोई गलत निर्णय को अजाम दिया था तो तत्काल अपनी भूल सुधार करने मे भी आप तत्पर रहते हैं। परिस्थिति को संतुलित करने के लिए सभी प्रकार के संशोधन भी आप मंजूर कर लेते है, भले ही इसके चलते किसी

वर्ग विशेष का नुकसान हो रहा हो। आपकी सगठनात्मक शक्ति विलक्षण है। लोग भी आपके ऊपर अन्ध श्रद्धा रखते है। आपको अपना मुखिया, प्रधान या राजा या प्रतिनिधि चुनने में सबको खुशी होती है। आप जैसे परोपकारी और नि.स्वार्थी व्यक्ति समाज को बहुत कम तादाद मे मिलते है। एकता, अखडता तथा राष्ट्र प्रेम आपके कार्य कलाप में भी अभिव्यक्त होते हैं।

अंक बीस

इस अंक पर चन्द्रमा का ग्रहीय प्रभाव ज्यादा दृष्टिगोचर होता है। इसके चारित्रिक गुणों का प्रभाव आपके चरित्र मे भी देखने मे आता है। आप मे भी एक के बदले दूसरा रास्ता पकडने का साहस सहज रूप में रहता है। आप जब चाहे किसी भी लक्ष्य की राह पकड लेते है। विकल्प की स्थिति मे आपका कोई नुकसान नहीं होता; बल्कि दूसरो की बजाय आप अपना रास्ता मोडते हुए मजिल के करीब जल्दी पहुच जाते हैं। कभी–कभी आपकी थोडी–सी शक्ति ही इतना बडा आकार ग्रहण कर लेती है कि सभी दग रह जाते है और आप एक के बाद दूसरे काम सहजता से पूरे कर लेते हैं। कभी–कभी इसके विपरीत भी रहता है, जैसे कि आप पूर्ण ताकत से दिमाग को केन्द्रित करके किसी मार्ग पर चलते हैं और धीरे धीरे आपकी दौड धीमे होने लगती है। आप अन्तत निर्जीव या निष्क्रिय होकर बैठ जाते हैं। निराशा और उत्तेजना की यह प्रवृत्ति वैसे ही है जैसे चन्द्रमा पहले तो क्षीण से पूर्ण आभा की ओर बढता है और फिर पूर्ण आभा से घटता–घटता एक दिन लुप्तप्राय हो जाता है। चन्द्रमा की स्थिति की तरह आपका मिजाज भी परिवर्तनशील और घट–बढ करने वाला है। घर–परिवार के लिए आपकी कल्पनाए हमेशा साकार होकर चमकी है। कृषि, व्यापार, दुग्धशाला या फलो का उद्यान लगाने में आपका उर्वरक मस्तिष्क बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। पशु–पक्षियों के प्रति आपके अन्दर सहज आकर्षण होता है। लोग भी आपको बहुत पंसद करते हैं। अपने संकट से छुटकारा पाने में दूसरों की मदद लेना आपकी फितरत है।

अंक इक्कीस

अंक इक्कीस पर प्रधान ग्रह सूर्य का प्रभाव अधिक अकित होता है। यह ग्रह दूसरों पर राज करने वाला, सबका अभिभावक,

संरक्षक अथवा अधिकारी बनकर सामने आता है। अत आपके अंदर भी जीवन के आरंभ से यही तत्व पाया गया है कि दूसरों पर कैसे नेतृत्व और अधिकार जमाया जाए। अपने जीवन दर्शन मे श्रेष्ठता की ओर बढना आपका परम ध्येय बनता है। यही कारण है कि सरकार या कारोबार में आप जैसा व्यक्ति एक शिखर पुरुष बनकर ही प्रवेश करता है। बेशक जब आप ऐसे अधिकारपूर्ण पद पर सुशोभित होते है तो आपको यह भी देखना चाहिए कि आपके आदेश जन साधारण की भलाई मे लागू होते भी हैं या नही। किसी प्रकार के अधिनायकवाद अथवा तानाशाही की ओर प्रवृत्त न होते हुए आपको सार्वजनिक विरोध का भी सम्मान करना चाहिए। अगर आप अपनी गलती या अधिकार मद मे संभलते नहीं है तो आपके बहुत से शत्रु खडे हो जायेगे तथा जीवन के उस सर्वोत्कृष्ट उपहार या पारितोषिक से भी वचित हो जायेंगे जो समय आने पर आपको मिलने वाला है। बाल कल्याण की ओर आपका विशेष सम्मान रहता है। इसके अलावा शिक्षा, कला, रंगमंच आदि में भी आपकी अभिरुचि उल्लेखनीय होती है। आप एक अच्छे कलाकार अथवा हुनरमन्द व्यक्ति भी बन सकते है बशर्ते कि आप छोटे मोटे मामलो मे सतर्क रहे और अपने प्रशासनिक अधिकार दूसरो पर छोड दे। नेतृत्व शक्ति के सिद्धान्त अगर लेकर चलते है तो रचनात्मक कार्यो के लिए सदैव अग्रणी माने जाते है और ख्याति तथा सम्मान भी आपको यथासमय मिल ही जाता है। विशिष्टता की श्रेणी में रहना आपका प्रकृति प्रदत्त गुण है।

अंक बाईस

अंक बाईस पर पृथ्वी का आधिपत्य माना जाता है। इसका अभिप्राय यही है कि जिस ऋतु या मौसम में आप जन्मे है उसका प्रत्यक्ष भौतिक प्रभाव के साथ–साथ मौसम का असर भी आपके चरित्र पर अवश्य होगा।

टिप्पणी माना आपका जन्म सितम्बर मे होता है तो यह महीना वर्षा के बाद हल्की शीत युक्त शरद ऋतु का अभिप्राय है। शरद ऋतु का प्रथम उपहार हमे खरीफ की पकी फसल के रूप मे मिलता है। इस मौसम में आकर लोग राहत की सास लेते है और आगे आने वाली हेमन्त और शिशिर ऋतुओं के लिए अन्न तथा खाद्य पदार्थो का भण्डारण करते हैं। शरद ऋतु अनेक प्रकार के

यौहारो के आगमन का सूचक है। इस ऋतु मे ही हिन्दुओ के दशहरा और दीपावली सहित मुस्लिम और ईसाई त्यौहार भी आते है। शरद ऋतु मे पैदा होने वाला व्यक्ति इसी आधार पर अच्छे खान–पान वाला, बौद्धिक क्षमता और परिश्रमपूर्ण जीवन जीने वाला धनी मानी और प्रख्यात व्यक्ति होगा। अगर आप बसन्त में पैदा हुए हैं तो आपके अन्दर क्रियात्मक प्रेरणाए, आगे बढने की उत्कट इच्छा तथा उद्यमी स्वभाव, सुन्दर छवि, तथा मित्र समूह के प्रेय भी होगे। बहुरंगी प्रतिभा के साथ साथ बसन्त (फरवरी–मार्च) के दौरान पैदा हुए व्यक्तियों मे स्पष्टवादिता दृष्टिगोचर हो जायेगी। अपने काम करने के तरीके से, सफल आचरण से तथा मजबूत आधार शिला के कारण आपका उदित होना एक चमत्कार को साकार करने वाला होगा। किसी भी वस्तुस्थिति का विश्लेषण करना और अच्छे बुरे की पहचान रख कर उसके हिसाब से उसका भुगतान करना भी आपके चरित्र की विशेषता है। सकीर्णता आपको पसन्द नहीं––उदारता की आप दूसरो से भी उम्मीद रखते है। सत्यवादी एव दयालु होना आपको रुचिकर लगता है; परन्तु जो दोष आप दूसरों मे ढूढते है, उससे ज्यादा विकार स्वयं आप मे फलता–फूलता रहता है।

यदि आप ग्रीष्म ऋतु मे पैदा हुए हैं तो आपके अन्दर बेहद सगठन शक्ति होती है। सरकार मे या स्थानीय शासन–व्यवस्था में आप एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन सकते है। अपने शुभचिन्तको से आप दूसरे दर्जे का रिश्ता रखते है। यह मान कर चलते हैं कि सब पर रौब मारना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। आपकी योग्यता और बुद्धि कौशल पर सबको भरोसा रहता है। 40 से 60 साल की आयु तक आप आसमान की ऊंचाइयों को छूने के प्रयास मे गुजार देते हैं। यदा–कदा आप सफल भी हो जाते है, परन्तु असफलता आपको मिटा देने मे भी नही चूकती। आत्मविश्वास कम हो जाने पर आपकी हार कहीं पर भी हो सकती है। अतः गलत होते हुए भी आप अपने तर्क पर अडिग रहते हैं। जीवन मे एक बार अवश्य ही आप उन्नति के शिखर पर जा पहुंचते हैं। अगर आप पतझड ऋतु (मार्च उत्तरार्ध से मई पूर्वार्ध के बीच) मे पैदा हुए है तो आपके कुदरती गुणों में तुलनात्मक दृष्टि रखना, मिलान करना, जोड़–तोड करना तथा अन्ततोगत्वा अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए कानूनी प्रक्रिया

अथवा पचाट आदि का आश्रय लेने मे भी सकोच नही होगा। पतझड के दौरान पैदा हुए व्यक्तियो के जीवन मे रद्दोबदल अथवा उतार–चढाव के कई पडाव आते है। आपको जीवन की राह मे दृढ निश्चयी होकर अपने उद्देश्य एवं ध्येय के प्रति कार्यरत रहना चाहिए। सबका दोस्ताना, सहयोग तथा साथ भी आपको मिलता रहे तो अच्छा ही है।

यदि आप शिशर ऋतु मे जन्मे है तो निश्चय ही पुरानी चीजो के प्रति आपको स्नेह, लगाव अथवा प्रेम हो सकता है। अपने आदर्शो मे आप बहुत ऊचे होगे। अत· यदा–कदा आप अकेले भी रह जायेगे। इसकी परिणति मे आप की गणना औरो से अलग होने लगती है। जीवन का पहला भाग सघर्षपूर्ण, परन्तु दूसरा भाग उम्मीद पूरी करने वाला तथा सभी प्रकार की दबी–सिमटी इच्छाओ को पूरा करने मे मदद देने वाला होगा।

टिप्पणी· इस अक का स्वामी पृथ्वी होने से यही अर्थ लगाना चाहिए कि यह अक अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार किसी भी तरह से ढाला जा सकता है। एक अच्छे तथा सुसस्कृत परिवार मे पैदा हुआ व्यक्ति 20 से 30 वर्ष की आयु मे आत्म–निर्भर हो सकता है। व्यसन, बाधाए और आपदाए इस अक के लिए आये दिन की घटनाए है।

V

प्रकरण पांच

आपके प्रेम–प्रणय तथा दाम्पत्य सुख का अंक

जीवन चक्र को चलाने मे हम जहा स्वास्थ्य और धन को एक जरूरी उपादान समझते है वहां जीवन में शुष्कता को हटाने के लिए प्रेम–प्यार और निरापद सेक्स की सुलभता के लिए अपना कहलाने वाला एक जीवन साथी भी होना चाहिए। दाम्पत्य जीवन जहा एक नियमित आदर्श और वैध प्रणय व्यवहार है वहां आये दिन इधर उधर स्नेह लेकर प्रेम व्यापार के किस्से बनना दूसरी बात है। जीवन साथी की चाह रखना मानव क्या, पशु–पक्षियो तक की एक आवश्यक प्रक्रिया है। स्त्री और पुरुष का, मेल और फीमेल का युग्म रूप प्रकृति की देन है। परन्तु यही दाम्पत्य सुख की कल्पना सुख और दुख की कहानी भी बनती रहती है। प्रेम प्रकरण के जरिए या तो हम अपनी पसन्द का पार्टनर प्राप्त कर लेते है या फिर भावना के आवेग में आकर किसी से दिल लगाकर टूट जाने का क्लेश भी साथ लेकर चलते है। अथवा आपसी ताल–मेल न होने या शारीरिक इच्छाओं के अपूर्ण हो जाने के कारण तलाक करके विवाह–विच्छेद या किसी दुखान्त कहानी के पात्र भी बहुत से बन जाते हैं। जब हमको अपने नाम का प्रेम–प्रकरण एव विवाह का अंक ज्ञात हो तो हमें अपनी सभावनाओं का पता लग जाता है और इससे सच्चाई को स्वीकार करने की शक्ति और ढाढस उत्पन्न होता है। इसकी सहायता से हम अपने को गलत राह पर जाने से प्रतिबन्धित कर सकते है और रचनात्मक सहयोग देकर दुर्भाग्य के दायरे से जीवन को अलग ले जाकर मानव समाज की सेवा कर सकते हैं।

अपना प्रणय–विवाह अंक जानकर एक तो हम उसी दिशा मे खोज–बीन कर सकते है ताकि सही जीवन साथी का चुनाव समय पर हो सके अगर दूसरे के विपरीत अको की विकिरणीय

तरगे हों तो उससे बचाव के प्रयास भी समय रहते कर सकते हैं। अंक–शास्त्र द्वारा इस प्रकार की मेलापक प्रक्रिया अपनाने से जहा अच्छी सतुलित गृहस्थी हासिल की जाती है वहा अच्छी सन्तान, सामाजिक सुयश तथा महत्वपूर्ण वक्त पर एक दूसरे का सम्बल बन सकते है।

टिप्पणी· सेफारियल द्वारा लिखा गया यह प्रकरण ठीक उसी तरह हमारे समाज में उपयोगी सिद्ध हो सकता है जैसे भारतीय ज्योतिष मे मेलापक अर्थात् वर–कन्या के नक्षत्र राशि के गुणो का मिलान किया जाता है। मेलापक का उद्देश्य भी प्रत्येक युवा दम्पत्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ और निर्दोष जीवन साथी खोजने में सहायक होना है। भारत में तलाक इसीलिए शायद कम होते है कि यहा अधिकाश विवाह जन्म पत्रियां मिलाकर होते है।

आपको अपने विवाह और यौन साथी का अक ज्ञात करने के लिए अपने सारे प्रचलित नाम को अग्रेजी वर्णमाला के अनुसार जान लेना चाहिए। फिर दोनो प्रकार की प्रणालियों अर्थात् यूनिट और कबाला पद्धति के हिसाब से उनका मूल अंक ज्ञात कर लेना चाहिए। यूनिट पद्धति से प्राप्त अक से संतुलित और असतुलित अक ज्ञात हो सकते है जो जीवन साथी के मूल अक को मिलाकर विश्लेषण में लिए जाते है। कबाला पद्धति से प्राप्त अंक जीवन साथी के गुण रूप एव चरित्र आदि का सकेत देगा जिसका उल्लेख पिछले प्रकरणों में किया जा चुका है।

नाम के सदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि जब किसी का नाम–उपनाम–जाति नाम एक ही शब्द का हो तो ऐसी स्थिति में उसी नाम के अग्रेजी वर्णाक्षरो का योग फल प्रयोग किया जायेगा। प्रकरण तीन मे एक नाम है EDWARD जिसका योग यूनिट एवं कबाला दोनो पद्धतियो से 4 आता है। अब अंक 4 को आप मेलापक एवं सामंजस्य सारणी में (आगे के पृष्ठों मे) देखें तो ज्ञात होता है कि अक 4 का अक 6 के साथ सामंजस्य रहता है। जिनका अंक 1 या 8 है उनको यह आकर्षित करता है। परन्तु 3 और 5 के साथ यह बेमेल तथा विरुद्ध साबित होता है। अक 2, 7 तथा 9 के साथ इसका सम्बन्ध पवित्र एव संतोषनजक नही होता है। जब अंग्रेजी के नाम में दो या दो से अधिक नाम उपनाम या जातिवाचक नाम आ जाते है तो प्रत्येक खण्ड को अलग–अलग करके विश्लेषण करना होगा। इसके बाद

तीनो या दोनो खण्डो को जोडना होगा । वही उस व्यक्ति का दाम्पत्य/प्रेम प्रकरण अक होगा ।

इस प्रकार के एक उदाहरण को देखते है ।

यूनिट पद्धति	कबाला पद्धति
E D W A R D	E D W A R D
5 4 6 1 2 4	5 4 6 1 20 4
=22=4	=40=4
W I L L I A M	W I L L I U M
6 1 3 3 1 1 4	6, 10, 12, 12, 10, 1, 13
=19=10=1	=64=10
4+1=5	4+10=14

उपरोक्त नाम में से यूनिट पद्धति से आकलन किया गया अक 5 इस व्यक्ति का प्रेम–विवाह का अंक है । इसके साथ मेल खाने वाले अको का पता आपको सगम सारणी से लग जायेगा । अब कबाला के हिसाब में जो अक 14 आया है जिसका अभिप्राय यही होगा कि इस व्यक्ति का दाम्पत्य एव यौन जीवन बाह्य तौर पर अक के स्वामी शुक्र ग्रह से प्रभावित होगा । प्रेम प्यार के प्रकरण मे कबाला पद्धति के 22 अको का प्रभाव इस प्रकरण के समापन भाग में दिया गया है । इस प्रकरण को भली भाति समझने के लिए कुछ और उदाहरण प्रस्तुत है ।

यूनिट पद्धति

R O B E R T	H E N R Y
2 7 2 5 2 4	8 5 5 2 1
=22=4	=21=3

4+3=7

अब देखे कि अक 7 के साथ दूसरे अंको का मेलापक कैसा है ।

कबाला पद्धति

R O B E R T	H E N R Y
20 16 2 5 20 22	8 5 14 20 10

85 = 13 = 57 = 12

13 + 12 = 25 = 7

कबाला पद्धति से परिणाम जानने हेतु इन दोनों अको को 22 की सख्या से नीचे तक सक्षिप्त करना होगा । उपरोक्त 25 का सक्षिप्त अंक 7 आ गया है । यह 7 अक ROBERT HENRY के दाम्पत्य जीवन की सभावनाओ पर क्या प्रकाश डालेगा इसकी सूचना इस प्रकरण मे किए गये अंक 7 के विश्लेषण के आधार पर निर्धारित करें ।

एक और उदाहरण:

यूनिट पद्धति

A L I C E	J E A N N E
1 3 1 2 5	1 5 1 5 5 4
=12=3	=21=3

3+3=6

इस अक का समवर्ती सामजस्य अंक आगे की गई सारिणी मे देखें ।

कबाला पद्धति

A L I C E	J E A N N E
1 12 10 11 5	10 5 1 14 14 5
=39=12	=49=13

12+13=25=7

इस नाम में भी वही प्राप्ताक आया जो कि पिछले नाम से प्राप्त हुआ, अत दोनों नामो की तरगित किरणे एक जैसी शक्ति रखती है । अर्थात् प्रणय और विवाह के लिए धनु राशि के प्रभाव का विश्लेषण अधिक खरा उतरेगा ।

एक और उदाहरण

यूनिट पद्धति कबाला पद्धति

M A R GA RE T	M A R G A R E T
4 1 2 31 2 5 4	13 12 0 3 12 0 5 22

=22=4	=85=13
R O S E	R O S E
2 7 3 5	20 16 21 5
=17=8	=62=8
4+8=12=3	13+8=21

(इस अक 3 का तालमेल और सामजस्य किससे बैठेगा यह आगे दी गई सारणी मे देखे) ।

उपरोक्त अक 21 का पार्टनर मार्गरेट रोज के लिए कैसा होगा यह आगे दिये गये विश्लेषण से मिलान करे) ।

अगर दो या दो से अधिक शब्दो वाला लम्बा नाम हो तो सबको अग्रेजी वर्णाक्षरो के साथ यूनिट और कबाला पद्धति के अनुसार आकलित कर लेना चाहिए । तदुपरान्त अतिम अक्षर 1 से 9 तक यूनिट पद्धति से और 1 से 22 तक कबाला पद्धति से ही व्यक्ति के गुण दोषो की परख करने हेतु विचार मे लाना चाहिए । बहुधा कुछ परिणाम किसी खराब ग्रह के प्रभाव विशेष के कारण किसी में बहुत अधिक विपरीत पाये जाते है । ऐसी स्थिति मे यह शास्त्र वही तक अपनी राय देगा जहां तक इसकी सीमा होगी ।

(यूनिट पद्धति के अनुसार अंको की परस्पर अनुकूलता और प्रतिकूलता की संगम सारणी)

अक	तरगित और चमत्कारी अंक	आकर्षण एंव सहयोगी अक	असहमत या विरूद्ध स्वभाव के अक	तटस्थ अथवा उदासीन अक
1	9	4 तथा 9	6 तथा 7	2, 3, तथा 5
2	8	7 तथा 9	5	1, 3, 4, तथा 6
3	7	5, 6 तथा 9	4 तथा 8	1 तथा 2
4	6	1 तथा 8	3 तथा 5	2, 7, तथा 9
5	5	3 तथा 9	2 तथा 4	1, 6, 7 तथा 8

6	4	3 तथा 9	1 तथा 8	2, 5 तथा 7
7	3	2 तथा 6	1 तथा 9	4, 5 तथा 8
8	2	1 तथा 4	3 तथा 6	3, 7 तथा 9
9	1	2, 3 तथा 6	7	4, 5 तथा 8

<u>उपरोक्त सारणी का विश्लेषण.</u>

1 जो अंक दूसरे का चमत्कारी अक है तथा तरगित होता है उसके साथ विवाह–मेल करना साझेदारी या मित्रता करना सफलतासूचक कहा गया है। होने वाले दम्पत्तियों के नामो को यूनिट एव कबाला अंक से स्पष्ट करके देखना चाहिए कि दोनो में परस्पर कितना मेलापक है। यही गुण–मिलान की पद्धति भारतीय ज्योतिष मे वर्षो पुरानी परम्परा है।

2 परस्पर आकर्षण और सहयोग रखने वाले अको का परस्पर व्यवहार भी एक दूसरे के लिए अनुकूल होता है। पति अगर कुछ दिनो बेकार भी बैठा रहे तो पत्नी उसका निकम्मापन बर्दाश्त कर ही लेती है। आकर्षण रखने वाला अंक भी दाम्पत्य मेल के जीवन के लिए सर्वमान्य है।

3 एक अंक दूसरे अक से विरुद्ध स्वभाव का होगा तो दोनो मे पर्याप्त चतुराई, कूटनीति और दिखावटीपन आयेगा। अगर दोनों के दाम्पत्य जीवन का निर्वाह सफलपूर्वक नही होता है तो उनका रिश्ता हमेशा दो नावों पर पैर रखने वालो के समान होगा।

4 उदासीन तथा तटस्थ अंक न एक दूसरे का भला कर सकते है, न बुरा।

5. अगर दोनो अक एक जैसे हो तो बिना किसी सोच–विचार के कह सकते है कि उनका दाम्पत्य जीवन टिकाऊ और सदा–बहार होगा। सुखी प्रेम–प्रकरण चलते रहेगे।

प्रत्येक अक का दाम्पत्य जीवन एवं प्रणय–प्रेम का व्यवहार ग्रहों के कितने शुभ और अशुभ प्रभाव को प्रकट करता है इसका शोध यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी अंकों का व्यवहार पक्ष एक विचारणीय प्रश्न है। अगर व्यवहार पक्ष मेल खा जाये तो अन्य कमिया भी पूर्ण हो जाती है।

<u>अंक एक</u>– यह प्रतिबिम्बित करता है कि व्यक्ति के अन्दर के प्रेम प्रकरण एव प्यार व्यवहार में विविधता की विशिष्ट चाह रहती है। अत इनके लिए यह बात जरा असभव–सी है कि किसी एक सम्बन्ध को लेकर टिके रहें और उसे अन्तत. विवाह में अजाम दे सकें। आपका आकर्षण सदैव बौद्धिक चरित्र की ओर अधिक रहेगा। अपने जीवन साथी मे भी आप यही तलाश करना चाहते है। अत इसी पूर्वाग्रह के कारण आपके अन्दर रोमान्टिक उत्तेजना या आवेश का अभाव रहेगा। इसके कारण इस बात की कुछ कठिनाई रहेगी कि प्रेम–प्रकरण तुरत–फुरत पनपे। आप अपने वैवाहिक साथी को यात्रा के दौरान अथवा उत्सव, सभा, समारोहो के दौरान खोजे तो ज्यादा अच्छा है। क्योकि इस अक पर कुछ सीमा तक बुध का प्रभाव होने से आपके चचेरे या ममेरे सम्बन्ध भी प्रगाढ हो सकते हैं। अगर एक बार वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो जाए तो फिर आपसी समन्वय और सामंजस्य बनाना जरूरीहोगा, क्योकि रोमाटिक आवेश अथवा प्रगाढ उत्तेजना और आकर्षण की न्यूनता के स्तर पर कही ऐसा न हो कि दोनो मे गलत फहमिया उजागर हो जाएं और अन्तत विवाह कडवाहट अलगाव या विच्छेद की सीमा तक चला जाए।

<u>अंक दो</u>– यह प्रदर्शित करता है कि प्रेम एव वैवाहिक जीवन की मान्यताओ पर आप पृथक एव अलग तरह का दृष्टिकोण अपनाते हैं। वैवाहिक जीवन के भोग के प्रति जहा आपके अन्दर एक व्यग्रता उजागर होती है वहा उसके साथ चलने वाले भौतिक सुखों की उपलब्धता पर भी आपका विचार तत्र उलझा रहता है। इन तर्कों को साथ लेकर चलते आपके प्रणय जीवन अथवा विवाह सुख मे कभी कभी गडबडियां और विवाद पैदा होते है, चाहे वे बनने की प्रक्रिया मे लम्बित सम्बन्ध हो या परिपक्व प्रगाढ सम्बन्ध। आलोचना, टीका–टिप्पणी या दोष दर्शन आपके दाम्पत्य सुख को तबाह भी कर सकता है। अत इस प्रकार के दूसरे विकार, जैसे आपके मित्रो या आश्रित पारिवारिक सदस्यो के कहने पर आलोचना करने पर सहमत होना या चुगलखोरी के कारण जीवन साथी पर शक की निगाह रखना भी अलगाव के द्वार खोल सकता है। अगर ऐसी परिस्थिति चलती रही तो अप्रसन्नता और तनाव उत्पन्न होना सरल रहता है। परन्तु ऐसे क्षणो मे सहानुभूतिपूर्ण दृढता का रुख अपना लिया

जाय तो परेशानियों और कडवाहटो को धीरे–धीरे खत्म किया जा सकता है । इससे आपके सहचर पर यही असर पडेगा कि चलो, मीन–मेख निकालना तो मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । फलत विवेकपूर्वक चलने वाला तथा बौद्धिक विचारो का जीवन साथी आपके अक प्रभाव को अच्छे धरातल से जोड देगा । बौद्धिक आनंद के साथ–साथ सांसारिक और शारीरिक सुख को समान महत्व का समझने वाला जीवन साथी ही इस अंक वाले के साथ निर्वाह कर सकता है । वित्तीय मामलो के साथ–साथ नाजुक क्षणो को समझने वाला भी उसे होना चाहिए ।

<u>अंक तीन</u> यह प्रदर्शित करता है कि जीवन साथी अथवा सखा–मैत्री पर भी आपका अटूट विश्वास है और प्राकृतिक रूप मे आप दाम्पत्य जीवन को श्रेष्ठ मानते है । विवाह को एक आदर्श सम्बन्ध मानते हुए आप इस ओर विशेष व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते है । अपने कार्य क्षेत्र में उतरने पर किसी न किसी व्यक्ति विशेष पर आपका तीव्र आकर्षण दूसरी ओर से एक पक्षीय होता है । इसके चलते आप दूसरी ओर पूरी तरह समर्पित नही हो पाते हैं । आपके साथ वही जीवन साथी सफलता से चल सकता है जो आपके प्रति रुचि ले, आपके व्यक्तिगत, सामाजिक एव सार्वजनिक कार्य–कलापो मे रुचि ले, अथवा उन भावनाओ को सम्मान दे जिन्हे आप विशेष रूप से अपने काम–काज मे अपनाये हुए रहते है ।

<u>अंक चार</u> मे प्रणय–व्यवहार एवं भावनात्मक आवेश की बहुलता पाई जाती है जिसके प्रतिफल में आप विवाह करना एक स्वप्नमय ससार की मृग–मरीचिका संजोए रखने के तुल्य मानते है । परन्तु अपने मन के अनुरूप साथी प्राप्त करने में आपको किसी युक्ति विशेष के सहारे चलना चाहिए । चूंकि ईर्ष्या–द्वेषपूर्ण रवैया अपना कर प्रणय–सहयोगी से भिडने के परिणामस्वरूप आपको उस पूर्व–संचित सुख से दूर जाना पड सकता है । व्यक्तिगत भावुकता पर नियत्रण रखते हुए आपको हर प्रणय सम्बन्ध पर यह अन्दाजा नही लगाना चाहिए कि उसकी वैवाहिक परिणति आपके अनुकूल सिद्ध होगी । आपके लिए सही और अनुरूप जीवन साथी वही साबित होगा जो शारीरिक तौर पर साहसी नजर आए, धार्मिक आस्थावान हो, परंपरा एवं चमत्कार को सच माने और किसी तकनीकी या यात्रिक कार्य मे भी दक्ष हो । आपके चरित्र की

सर्वव्यापकता, विशाल परिचय क्षेत्र तथा सर्वज्ञता एक गुण हो सकता है; परन्तु अभिमान तथा अक्खड मिजाजी के कारण कभी–कभी भावनात्मक सम्बन्धों में बिगाड या दरार भी जल्दी पैदा हो जाने का भय रहता है। स्वार्थपरता तथा अपनी इच्छानुसार चलने का दम्भ आपके दाम्पत्य सुख में एक अभिशाप भी सिद्ध हो सकता है।

<u>अंक पांच</u> की यह धारणा रहती है कि प्रणय सम्बन्ध अथवा दाम्पत्य जीवन की शुरूआत करने से या तो कुछ विशेष लाभकारी समय होगा या प्रसन्नताए सदैव बनी रहेगी। या समय पर विवाह कर लेने से धन एव सुख–सपदा मे तत्काल बढोतरी हो जायेगी। (इस धारणा के चलते दहेज प्राप्ति की लालसा भी बलवान हो जाती है)।

इनमे स्नेह प्राप्त करने की व्यग्र पिपासा और प्यार करने की चाहत भी एक मुद्दा होती है। इसके पीछे इनकी सदाशयता, सूझबूझ और शराफत का भी योगदान माना जाता है। ये एक आदर्श विचारों के खूबसूरत जीवन–संगी अथवा संगिनी को प्राप्त कर ही लेते हैं। विवाह पूर्व का प्रणय चक्र इन्हे विरासत मे अथवा प्राकृतिक तौर पर मिल जाता है जोकि धीरे धीरे कालान्तर मे दाम्पत्य जीवन का आधार बन सकता है! साहित्यक, सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक विचारो का रचनात्मक आदान प्रदान इस सम्बन्ध को विकसित करने मे सहायक होता रहा है। विवाह वास्तव मे बहुत सहायक और आरामदायक प्रतिष्ठापूर्ण सिद्ध होता है। यही वजह है कि आगे चलकर इन युगलों की व्यावसायिक एवं आर्थिक स्थिति मे वाछित सुधार होता देखा गया है।

<u>अंक छः</u> के लिए मित्रता और सम्बन्धो की प्रगाढता का सद्भाव प्रकृति प्रदत्त होता है। इनके जीवन का मुख्य अध्याय भी प्रेम–प्रकरणों से भरपूर रहता है। विपरीत योनि के प्रति इनमें विशेष आकर्षण का भाव जागृत रहता है। प्यार मोहब्बत की हसरत भी इनमे कुछ ज्यादा ही उभर कर आती है। प्रेमी स्वभाव के बावजूद इनको प्रेम के मामले में जल्दबाजी और भावावेश से बचना चाहिए। अन्यथा असतोषजनक परिणति की सभावना भी बनी रहती है। या फिर प्रेम–प्रकरणो में ठगे जाने की आशंका भी तीव्र होती है। अगर बिना किसी परख से बनाए गये रिश्ते

वैवाहिक सम्बन्धों मे बदल जाए तो उनकी परिपक्वता नही हो पाती है। दुखद प्रकरण उभरने लग जाते है। परन्तु बाहरी आकर्षण और सच्चे प्रेम का विश्लेषण करते हुए आप चलते है तो विवाह एक सफल घटना का प्रतीक भी बन सकता है। इस अक के बारे में इतना जरूर है कि इनमें वासनात्मक आवेग ज्यादा मात्रा में होता है और अगर किसी परिस्थिति वश इनका अस्थायी अलगाव या जुदाई हो जाय तो तत्काल दूसरी जगह शारीरिक सम्बन्ध स्थापित होने मे देर नही लगती है। ऐसे अनैतिक सम्बन्ध कभी कभी लम्बे दौर तक भी चल सकते है और किसी मोड पर आकर दाम्पत्य जीवन के लिए खतरनाक भी साबित हो सकते है।

<u>अक सात</u> एक से अधिक प्रेम सम्बन्धो का प्रतीक अंक है। इसके अलावा यह भी प्रमाणित होता है कि इनके विवाह भी एक से अधिक हो सकते है। यह अंक प्रकट करता है कि प्रेम सम्बन्ध एक से अधिक होगे या एक से अधिक विवाह होगे। अंक सात यह भी इंगित करता है कि वास्तविक जीवन साथी से खेल –प्रतियोगिताओं तथा सामाजिक व धार्मिक फतिविधियो के दौरान भेट होगी। यद्यपि अंक सात के प्रभाव से राशि का स्पन्दन अनुकूल ही होता है तो भी वास्तविक जीवन साथी के मिलने और विवाह सम्पन्न होने से पूर्व कई सम्बन्ध जुडेगे और टूटेगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस अंक वाले को विवाह हो जाने के बाद अपने और जीवन साथी के बीच जाति या धर्म को लेकर किसी प्रकार की भ्रान्ति उत्पन्न नही होने देनी चाहिए ।

<u>अंक आठ</u> यह संकेत करता है कि आपकी कुछ महत्वाकांक्षाए प्रेम या विवाह सम्बन्धों से जुडी है । परिणामस्वरुप विवाह के बाद जीवन–साथी के सहयोग से आप अपने सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्र मे उन्नति करेंगे। यह भी सम्भव है कि सही जीवन साथी आसानी से न मिलें और प्रेम सम्बन्ध स्थापित होने में या विवाह सम्पन्न होने में बिलम्ब तथा विध्न बाधाओं की परिस्थितियॉ उत्पन्न हो जायें। आपका जीवन साथी उम्र मे आप से बडा हो सकता है । विवाह का योग विवाह योग्य सामान्य आयु के बहुत बाद बनेगा। अपने जीवन–साथी को स्वस्थ रखने के लिए आपको उसे घरेलू मामलों से उत्पन्न होने वाले मानसिक तनाव से बचना होगा । ऐसे अवसर भी आयेगे जबकि आपके

जीवन तनाव से बचना होगा। ऐसे अवसर भी आयेगे जबकि आपके जीवन साथी के मन मे सच्चा प्रेम निहित हो, किन्तु वह उसे प्रदर्शित न करे।

<u>अंक नौ</u> प्रेम और विवाह सम्बन्धों को नियन्त्रित करते हुए यह प्रदर्शित करतोहै कि आपके जीवन की बहुत –सी आशाये और अभिलाषाए इनसे जुडी है। विवाह के लिए आप प्रेम सम्बन्धो को बढाना चाहेगे। विवाह सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर जीवन की अन्य आशाओ और अभिलाषाओ की पूर्ति आसान हो जायगी । सामाजिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र मे प्रतिष्ठा और व्यापार व्यवसाय में आर्थिक लाभ प्राप्ति मे जीवन–साथी की सहायता बहुमूल्य सिद्ध होगी । विवाह के लिए प्रेम सम्बन्धो की शुरुआत मे पर्याप्त कठिनाइयो का सामना करना पडेगा। अक नौ के प्रभाव से प्रणय जीवन के आरम्भ मे अपने से बडी आयु के विपरीत लिगियो के प्रति आकर्षण उत्पन्न होगा जो दुखद सिद्ध होगा । बडी आयु तक अविवाहित रहने पर अपने से छोटी आयु के विपरीत लिंगियो के प्रति आकर्षण उत्पन्न होगा। इससे आपके वाछित जीवन साथी को चाहने वाले दूसरे प्रतिद्वन्द्वियों के मन मे प्रतिस्पर्धा जागृत होगी।

<u>अंक दस</u> रोमास का अक है। यह प्रकट करता है कि आपके जीवन मे कई प्रेम–प्रसग आयेगे जिनमें से कुछ तो बहुत ही उत्तेजक होंगे। इनमे से कई जल्दबाजी मे होगे, कई अचानक बनेगे, कुछ प्रेम सम्बन्ध बनकर बिगडेगे और टूटेगे भी। इस प्रकार विवाह से पूर्व प्रेम व्यापार हलचलपूर्ण रहेगा। विवाह अचानक और अप्रत्याशित रुप से होगा । विवाह हो जाने के बाद भी उस के टूटने और सम्बन्ध बिगडने की सम्भावना बनी रहेगी। सम्बन्ध विच्छेद या तलाक भी सम्भव है। बात बिगडते देर नही लगेगी । अतः आपको सचेत रहना होगा, क्योंकि आप प्रकृति से ही रोमांटिक है और एक ही समय मे दो या दो से भी अधिक विपरीत लिगियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

<u>अंक ग्यारह</u> की प्रेम प्रकरणो के मामले मे और इसके फलस्वरूप परिपक्व हुए दाम्पत्य सम्बन्ध के विषय मे विचित्र धारणा रहती है। इसके अनुसार प्रेम सम्बन्ध और दाम्पत्य सम्बन्ध के बीच एक दार्शनिक धरातल होना चाहिए। परन्तु परिस्थिति वश इनके दोनो सम्बन्ध एक अजीब सी गोपनीयता के शिकार हो

जाते है । आपको यह भी महसूस होगा कि आपकी मौखिक और अन्त करण की अवधारणा का एक अनिश्चित प्रभाव भी दूसरी ओर पड जाता है । जब तक आप नैतिक रूप से सुदृढ नही रहते है, आपको लोभी–लालची होने का खतरा भी बना रहता है । किसी प्रकार का प्रतिदान पाने की इच्छा अथवा दूसरे के जरिए लाभान्वित होने की प्रवृत्ति आपको भविष्य मे कभी भी परेशानी मे डाल सकती है । अत क्रमानुसार जब कभी ऐसा लेना–देना होता है आपको सचेत रहकर अपनी जरूरत के अनुसार दूसरे से प्राप्त होने वला प्रतिदान लेने की चेष्टा करनी चाहिए । चाहे प्यार का दौर हो या विवाह की स्थिति, एक दूसरे को ठगने या बेवकूफ बनाने से बचना चाहिए । अत· आपकी विवाह की स्थिति धन एवं व्यवसाय की सफलता पर बहुत हद तक निर्भर करती है– अगर इसमे कही भी त्रुटि या कमी रह जाये तो दाम्पत्य जीवन सफल नही होता है ।

<u>अंक बारह</u> स्नेह–प्यार और दाम्पत्य जीवन को एक आदर्श विचारधारा का धरातल देना चाहता है । यह अक यह भी दर्शाता है कि प्रेम मार्ग और सुखी वैवाहिक जीवन की परिकल्पना को साकार करने मे बहुत से त्याग और बलिदान के लिये भी तत्पर रहना होता है । यह अंक यह भी दर्शाता है कि प्रेम विवाह के द्वारा बहुत से उतार–चढात आते है और यह मामला उतना सीधा सादा और निरापद नही है जितना कि आप समझते रहे है । कभी कभी आपके त्याग–बलिदान के बावजूद भी जिसे आप चाहते है उसके द्वारा उपेक्षित होना पडता है । आपके जीवन में इस आधार पर एक से अधिक प्रणय सम्बन्ध स्थापित होते है । परन्तु इनके टूटने के बहुत से कारण होते है । उदाहरणार्थ गलत निर्णय ले बैठना, स्वार्थी प्रवृत्ति या जीवन साथी के संदिग्ध आचरण की भनक लगना, या फिर उसके जीवन मे एक असंतुलित व्यवस्था, कजूसी अथवा स्वभाव की संकीर्णता आदि असतोष की उपज बन सकती है । एक महत्त्वाकाक्षी भागीदार, जो व्यवहारकुशल भी हो, आपके लिए आदर्श पति या पत्नी साबित हो सकता है । व्यक्तिगत एवं घरेलू जीवन को भी आप कुशलता से चलाने की आकाक्षा रखते हैं । परन्तु ऐसा व्यक्ति आपको मिलता नहीं । अगर कहीं दिखता भी है तो उसके सम्बन्ध दूसरी जगह पक्के हो जाते है ।

<u>अंक तेरह</u> यह अभिव्यक्त करता है कि विवाह एव प्रेम सम्बन्धो के मामले में आप थोडे से विचारवान और अच्छे टेस्ट वाले––आदर्श की भावना से परिपूर्ण हैं। व्यवहार कुशलता की आपके अन्दर कमी रहती है। अथवा हमेशा आप व्यवहारवादी नही रहते है। विशेष प्रकार के गुण और व्यक्तित्व अथवा बाहरी चकाचौध पर आपका खास रुझान रहता है। कभी–कभी यह भी संभव है कि एक जगह सम्बन्ध चल रहे है, आप चटपट दूसरी तरफ आकर्षित हो जाते है तथा भावना का ज्वार आपको उस कगार पर ले जा सकता है जहां पर आप अपने सच्चे दोस्त को भी खो सकते है। प्यार व्यवहार की एक तीव्र भावना, गर्मजोशी का होना आप जरूरी समझते हैं और यही आपके लिए सफलता का भी रास्ता है। आपके प्रेम–सम्बन्ध अथवा वैवाहिक जीवन का चक्र सदैव सीधा ही नहीं चलता। कभी–कभी उल्टा भी घूम जाता है, जब आप दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यो की अवहेलना कर जाते है, उसके दुख दर्द के बजाए सिर्फ अपने शारीरिक सुख पर नजर गडाए रखते हैं। कभी–कभी आपकी लापरवाही और लेट लतीफ होना भी इस प्रकार से सम्बन्धो को ठडा कर सकता है, क्योकि हो सकता है दूसरे को आपकी ढीली ढाली प्यार करने वाली शैली रुचिकर नहीं लगे और कोई बेहतर व्यक्ति उसके जीवन मे इस दौरान आ जाए। एक प्रकार का अधिकारपूर्ण या तानाशाही आचरण भी प्रेम/विवाह सम्बन्ध बिगाडने में सक्रिय रहता है।

<u>अंक चौदह</u> अपने आप ही प्रणय भावनाओ को बढाने वाला सकारात्मक अक है। जहा पर मौका होता है ये चटपट अपने प्रेम का इजहार कर बैठते है, परन्तु एक विशेष प्रकार की इच्छा अनिच्छा या भेद–भाव करने की आदत भी आपकी है। अतः सहज रूप से प्रेम सागर मे प्रवेश करना आसान नही होता है। यह अंक चापलूस नही है; परन्तु जहां यह समझदारी और सहृदयता अर्पित करता है वहां वैसा ही दूसरे से प्राप्त भी करना चाहता है––वफा के बदले वफा। अत· जहा आपको इस प्रकार का उत्साही जीवन भागीदार मिल जाता है तो प्रेम सम्बन्ध स्थायीकरण की ओर बढने लगते हैं, अर्थात् विवाह का हो जाना निश्चित है। अगर परिस्थितिवश कभी कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घट जाए तो विवाह सम्बन्ध टूटने में भी देर नहीं लगती अथवा भागीदार अगर सच्चाई से आपके प्रति उन्मुख नही हो तो दोनो के बीच

कटुता भरे सम्बन्ध भी जन्म ले सकते है जिनकी स्मृति मिटाने में अच्छा खासा समय लग जाता है। अगर वैवाहिक जीवन आजीवन चलता रहे और बाद की अवस्था मे एक की मृत्यु हो जाये तो दूसरा विवाह नहीं होता है।

<u>अंकपन्द्रह</u> का स्वाभाव प्यार–व्यवहार के मामले मे बहुत सुस्त, बाधाग्रस्त और संकोच एवं उदासीनता से परिपूर्ण होता है। विपरीत योनि तक पहुंच कायम करने मे एक तो आपको बहुत समय लगता है और फिर सही ढग से अपनी बात प्रस्तुत न कर सकने अथवा प्यार के इजहार का बेवकूफी भरा मार्ग अपनाने से भी बने–बनाये सम्पर्क बिगड सकते है। परन्तु ज्यो–ज्यो आपकी आयु बढती रहती है त्यों–त्यों आपको पिछले अनुभवो से सीख मिलती है तथा सहज रूप से विपरीत योनि से आप का मिलना जुलना जारी रह सकता है। अन्ततोगत्वा अपना ही अनुभव आपके लिए विवाह सम्बन्ध सुदृढ करने मे सहायक हो जाता है। आपको प्रेम की तीव्र कामेच्छा का स्वाद आमतौर पर नही मिलता। न ही आपका पार्टनर उतना उग्र और समर्पित गुणो वाला होता है कि आपकी तरफ ही हर वक्त झुकाव बनाए रखे। आपके साथ वही व्यक्ति सफलतापूर्वक दाम्पत्य जीवन बिता सकता है जो स्थिर और सहज हो, एक जगह पर आकर आगे नही बढे। आपके प्रति वही आदमी/औरत समयानुसार अनुकूल सिद्ध होता है जो दुख के दिनो मे भी आपकी मदद करे।

<u>अंक सोलह</u> चूकि मोह–बन्धन की लहरो का उत्सर्जन करता है, अतः स्वाभाविक है कि इनके एक से अधिक संख्या में प्रेम–प्रकरण रहते है। इन्हे किसी के सान्निध्य की सदैव तलाश रहती है, अत कई बार तो इनका प्रेम एक ऊपरी आवरण अथवा आडम्बर मात्र होता है। कभी–कभी मजाक के तौर पर भी यह प्रेम काण्ड करके दूसरे को बेवकूफ बनाने की प्रक्रिया में संलग्न हो जाते हैं। जब तक किसी प्रकार का नुकसान किसी को न हो तब तक यह काण्ड एक मामूली हादसा बनता है, परन्तु जब इसके चलते कोई तीसरी पार्टी प्रभावित होने लगे तो फिर मजाक के तौर पर किया जाने वाला प्रेम वासना का सम्बन्ध आपके भविष्य के लिए प्रश्न चिन्ह भी छोड सकता है। एक बार प्रेम सम्बन्धो की शुरूआत अगर हो जाये तो अधिकाश के मामले मे यह विवाह बन्धन की सीमा मे आ जाता है। परन्तु एक अस्थायी

लगाव के जरिए आप अगर विवाह तय करने की सोचने लगें तो आपको भविष्य की ऊँच–नीच को भी नजर अंदाज नही करना चाहिए। क्योकि अस्थायी सम्बन्धों के बीच अगर कोई तीसरा आकर्षण पैदा हो जाये तो सब कुछ अशातिपूर्ण करने मे भी देर नही लगेगी।

<u>अंक सत्रह</u> की स्थिति यह है कि इनका एक से अधिक जगहो पर प्रेम–प्रकरण चलता है। अतः यह पक्का है कि एक से अधिक विवाह होगे। इसके बावजूद आपको इस मामले मे विवेकपूर्ण भेद रखना चाहिए कि कौन सा सम्बन्ध आपको विवाहोपरान्त अधिक सफलतासूचक होगा––बनिस्पत आपकी क्षणिक कामोद्दीपक लालसाओ की तृप्ति के––जो कि आपको अधिक समय तक समर्पित ढग से प्यार दे सके अथवा सतही और वासनात्मक सम्बन्ध आपके लिए न तो चिरस्थायी होगे और न ही आप उन जटिलताओ को दूर कर सकेगे जो कुछ समय बाद दाम्पत्य जीवन को कटु बनाने मे सहायक होगी। सही जीवन साथी आपके लिए वही सिद्ध होगा जिसमे बौद्धिक और भावनात्मक व्यक्तित्व का मेल होगा––उसमे बातचीत करने की कुशाग्रता तथा घरेलू एव सामाजिक व्यवस्थाओ को नियत्रण मे रखने की क्षमतायें एव गुण होगे। घर और बाहर के व्यक्ति से आदर और स्नेह प्राप्त करने की भी क्षमता होगी। यह भी सभव है कि आपका जीवन साथी आपसे किसी यात्रा के दौरान मिले या फिर वह साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा या परिवहन जैसे सस्थागत माध्यमो मे आयोजित किसी समारोह में मुलाकात करे।

<u>अंक अट्ठारह</u> यह इगित करता है कि आपके मन मे घरेलू सुख आराम की प्रबल इच्छा रहती है। अत विवाह के प्रति आपके दिल मे प्राकृतिक लगाव है और इसको सफल बनाने मे अपनी तरफ से आप कोई भी कोर कसर नहीं रखते है। इसके साथ ही यह भी संभव है कि विवाह की सफलता मे जीवन साथी की गतिविधिया और चरित्र की प्रवृत्ति कहा तक निर्भर करती है। इस मामले में एक दूसरे की व्यावसायिक सफलता, भौतिक इच्छा और अन्य बातो का ताल–मेल भी एक आवश्यक बिन्दू है जिस पर सफलता या असफलता का उद्देश्य निर्भर करता है। आपकी महत्वाकाक्षा या जीवन साथी की महत्वाकांक्षा मे कही पर अगर टकराव अथवा उपेक्षा होने लगे तो भी दाम्पत्य जीवन मे दरार

पडने की तीव्र सभावना रहती है। सामाजिक क्षेत्र मे अथवा सार्वजनिक क्षेत्र मे या फिर व्यवसाय की सिद्धि में कोई रुकावट आ जाये तो भी विवाह–विच्छेद की प्रक्रिया आरभ हो जाती है। इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि आपको जीवन साथी की योजनाओ से अधिक कल्पनाशील मस्तिष्क का होना चाहिए– अधिक रचनात्मक विचारो वाला भी बनना चाहिए। एक–दूसरे के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना जरूरी है।

<u>अंक उन्नीस</u> यह दर्शाता है कि आपकी प्रेम सम्बन्धो के प्रति तीव्र उत्कठा रहती है; परन्तु इसमें आपकी कुछ विशिष्ट महत्वाकाक्षाए भी छुपी हुई हैं जिन्हें आप दाम्पत्य सुख के लिए अनिवार्य मानते है। आपकी पहली महत्वाकांक्षा दाम्पत्य साथी की व्यावसायिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का सुदृढ होना है। परन्तु यह भी विचारणीय है कि आपको अपनी इच्छाओं के प्रति सजग भी रहना चाहिए, कही ऐसा न हो कि आपकी किसी विशेष अभिलाषा से आपका सहचर नाराज या परेशान हो उठे। या फिर आपकी महत्वाकाक्षा के चलते कोई ऐसी दीवार बीच मे न पैदा हो जाये जो आपके दाम्पत्य जीवन मे अप्रसन्नता का विष घोल दे। जीवन साथी के साथ व्यवहार मे आपको उसके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को नजर अन्दाज करना होगा या फिर आपको मध्यम वर्गीय या उच्च स्तरीय परिवार में ही वैवाहिक सम्बन्ध बनाना चाहिए। वित्तीय या आर्थिक समता की बात भी ध्यान देने योग्य है तथा कुछ मामलो मे आपका निर्णय जीवन साथी को रुचिकर भी लगेगा। बच्चों के मामले में आपके निर्णय का जीवन साथी सदैव स्वागत करेगा, क्योंकि सुदृढ दाम्पत्य का आधार बच्चे ही होते है।

<u>अंक बीस</u> की प्रेम तरंग का परिदृश्य एक दम अलग किस्म का होता है। एक शानदार घर गृहस्थी की प्रबल इच्छा ही प्रेम की परिणति होती है। आपका प्रेम करने का आशय लगभग यही रहता है कि वह तब तक बना रहे जब तक विवाह की परिणति न हो जाये। अत· आपका बेहतर जीवन साथी वही बन सकता है जिसको घरेलू माहौल खुशगवार बनाने का शौक हो। जैसे अच्छा खाना बनाना, घर की सजावट, सफाई और आधुनिक किस्म के शो पीस तथा अन्य उपक्रम जो घर को स्वर्ग बना दे। या फिर उसमें यह इच्छा तो हो कि एक अच्छा घर बने और

उसमें उसका भरसक सहयोग और प्रयास भी सार्थक हो सके। ऐसे गुणो वाला जीवन साथी प्राप्त करना आपके लिए अत्यन्त भाग्यवर्धक हो सकता है, या फिर ऐसे गुण आपके अन्दर हो तो दूसरे को अपना भाग्य सराहने की खुशी हो सकती है। विवाह से पहले आप तथाकथित तितलियों पर आकर्षित हो सकते है। परन्तु जीवन साथी के बतौर ऐसी चटक मटक आपके सफल विवाह में पर्याप्त सतुष्टि नही दे सकती। विवाह के बाद एक शान्त और सहज दाम्पत्य जीवन आपकी महत्वाकाक्षा की मजिल होती है। यदि बच्चो की सख्या का सवाल आये तो फिर दाम्पत्य जीवन एक पहेली भी बन सकता है।

<u>अंक इक्कीस</u> कई मामलो मे प्रेम तथा विवाह के क्षेत्र में एक अनुकूल पक्ष बनकर उभरता है। दाम्पत्य जीवन के सुख के लिए यह दोहरा रास्ता अपनाता है। इसकी व्यक्तिगत इच्छाएं प्रेम के मामले मे बहुत प्रगाढ, परन्तु तनावपूर्ण रहती है। जीवन की वास्तविकता से भी यह अक भली भांति अवगत रहता है, तो भी कुछ असाधारण अभिलाषा को भी यह अपने प्रणय मे साकार देखना चाहता है। इसके बीच अगर कोई व्यवधान आ जाये तो वह विवाह के लिए नकारने मे भी देर नही लगा सकता है। प्यार और विवाहेतर जीवन के सुखद पहलू को भोगने के लिए यह अक जहां सहज रूप से चर्चित रहता है, वहा कुछ दुश्रान्त पक्ष भी इसके प्रेम से जुड जाते है। अत प्रेम एव विवाह के मामले मे बहुत सावधानी अपनाना आपको अपेक्षित रहेगा। अगर सचमुच ही आप अपने प्रेमी से विवाह करते हैं तो त्याग और बलिदान के लिए आपको तैयार रहना चाहिए।

<u>अंक बाईस</u> आपको जहां जीवन के विषय मे एक विस्तृत दृष्टिकोण अपनाता हुआ दिखाई देगा वहा प्यार और विवाह के मामले मे भी उतना ही उदार और विशाल अन्तर्मन लिए चलता है। यद्यपि जीवन साथी के लिए आपके अन्दर एक प्रकृति प्रदत्त चाह होती है तथा विपरीत योनि के सदस्य भी आपके इर्द गिर्द आते जाते रहते है, फिर भी आप इससे सतुष्ट न रहकर एक व्यावहारिक क्षेत्र तक इन मामलो को ले जाने मे विश्वास रखते हैं। अगर आपका एक प्रेमी आपको छोड देता है तो आप दार्शनिक अवस्था मे आ सकते है और इसे जीवन की परम घटना मान कर उदास भी हो सकते हैं। इस धारणा को स्वीकारने से

ही आपके प्रेमी हृदय का कष्ट कुछ कम होगा। यही उदासीन भावना आपके दर्द दिल को कम करेगी और किसी दूसरे सहारे की तलाश मे जुट जायेगी। आमतौर पर यह अक विवाह के लिए प्रतिकूल नही होता है। फिर भी पर्याप्त धन न हो तो विवाह के वास्तविक सुख मे बाधाए महसूस हो सकती है। सामाजिक तथा व्यक्तिगत रुचियो के मामले में भी आपको एक दूसरे के प्रति विश्वास पात्र बनना चाहिए तथा कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए भी सदैव तैयार रहना चाहिए।

टिप्पणी सेफारियल द्वारा विश्लेषित किया गया अक 1 से अक 22 के प्रेम तथा विवाह का फलित कुछ हद तक पाश्चात्य सभ्यता और सस्कृति के आधार पर दिया गया है। भारतीय परिवेश कुछ भिन्न है।

फिर भी सेफारियल ने प्रत्येक अंक को प्रेम तथा विवाह ही उन्मुक्त स्थिति मे जो कुछ भी एक व्यक्ति को मिल सकता है उसका अद्भुत एव आश्चर्यजनक चित्रण किया है।

VI
प्रकरण छः

आपके भाग्य और धन का अंक

आपका भाग्याक तथा धन प्राप्ति का अक निर्धारित करने के लिए उपादानो की दोहरी शृखला अपनानी होगी। भाग्य का अक और धन का अक हमेशा एक दूसरे से कुछ अलग होते है, जो आपके जीवन की सामान्य स्थितियो का निरूपण करते है। लेकिन आपके भाग्याक के सहारे धन प्राप्ति के अक को पहचाना जा सकता है जो कि किसी दिन विशेष के मध्य पडता है। अर्थात् भाग्यांक के घटे के दौरान यदि आप आर्थिक व्यवहार या लेन–देन करते हैं तो आपको ज्यादा लाभ हो सकता है। मान लिया जाय कि आपका भाग्याक 11 है। अत जब आप किसी विशेष दिन 11 बजे के निकट ही अपना आर्थिक उपक्रम करेगे तो आपको समय अधिक लाभकारी होगा।

भाग्याक ज्ञात करने के लिए आपको सप्ताह का वह दिन याद रखना चाहिए जिस दिन आप पैदा हुए है और वह घंटा भी याद रखना होगा जिसमे आपका जन्म हुआ है। सही–सही मिनट तक जाना जरूरी नही है। अगर आप 6-17 प्रातः पैदा हुए हैं तो आपको मात्र 6 बजे सुबह का समय याद रखना होगा।

यदि आप ईस्वी सन् 1916 को पैदा हुए हैं या उसके बाद पैदा हुए है–चाहे वह दुनियां का कोई भी कोना हो, और जहा सिगल समर टाइम या डबल समर टाइम लागू हो : हो तो एक या दो घटे के अन्तराल को समाहित करना भी न भूलें। जैसे कि मान लें, आपका जन्म 4-30 ए०एम० पर हुआ है तो जहा सिगल समर टाइम लागू होता है तो आपको निर्धारित 4-30 मे 1 घंटा कम करना होगा। 3-30 बजे आपके जन्म का समय माना जायेगा जिसके आधार पर 3 से 4 बजे का समय आपके भाग्यांक का

घटा माना जायेगा। इसी प्रकार यदि आपका जन्म 8-30 बजे हो और डबल समर टाइम लागू होता है तो 8-30−2=6-30 बजे आपका भाग्योदय का घटा निर्धारित होगा। अर्थात् 6 से 7 बजे के मध्य भाग्योदय का समय माना जायेगा।

अगले पृष्ठ पर दी गई सारणी मे रविवार से शनिवार तक 1 से 12 बजे दिन और रात की प्रति घटे को नियंत्रित करने वाले भाग्य अक की प्रविष्टि दी गई है। जिस दिन और जितने बजे आप पैदा हुए है वह आपका भाग्यशाली अक माना जायेगा। इस सारणी मे दो प्रकार के मुद्रित अक है। कुछ अक गहरे अक्षरो में तो कुछ अंक पतले अक्षरो मे लिखे गये है। जो गहरे अक्षर है वे सकारात्मक अक है और जो पतले अक है वे नकारात्मक अक है। अत गहरे अक्षरो वाले घटे और पतले अक्षरो वाले घटे मे यही भेद रहेगा। सकारात्मक घंटे अधिक प्रामाणिक, विश्वसनीय और भाग्यशाली अंक होगे जो आनुपातिक रूप मे तत्कालीन समय मे अधिक प्रबल एव भाग्य को समृद्ध करने वाले होगे। अत जिस भी घंटे मे आपका जन्म हुआ हो वह चाहे मोटा अक्षर (सकारात्मक) हो या पतले अक्षर (नकारात्मक) हो, वही आपका भाग्याक होगा।

सप्ताह के दिन और घटो के आधार पर, जिसमे आपका जन्म वार और जन्म समय पडता है, जब आपका भाग्यशाली अक निर्धारित हो जायेगा तो फिर सम्पूर्ण चार्ट मे सप्ताह के दौरान कब यह शक्तिशाली अक पडेगा—यह देखना बहुत आसान हो जायेगा। मान लो, गुरुवार को रात्रि 8-30 बजे आपका जन्म हुआ है। उसे हमने पाया गहरे अक्षर (सकारात्मक) 8 और अब यह देखे कि आठ अक अन्य दिनों मे कब—कब सकारात्मक होता है। इस दौरान ही कोई काम करे तो अवश्य ही भाग्यवर्धक होगा।

जन्म वार और समय के अनुसार भाग्यांक बोधक सारणी

जन्म समय	रविवार		सोमवार		मगलवार		बुधवार		गुरुवार		शुक्रवार		शनिवार	
स्टैडर्ड टाइम	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप	पूर्वा	–अप
0–1 बजे	1	–3	7	–6	9	–8	5	–1	3	–7	6	–9	8	–5
के बीच मे														
1–2 बजे	6	–9	8	–5	4	–3	2	–6	4	–8	5	–4	3	–2

जन्म समय	रविवार	सोमवार	मगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
स्टैडर्ड टाइम	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप	पूर्वा–अप
2–3 बजे	5–1	3–7	6–9	8–5	1–3	7–6	9–8
3–4 बजे	2–6	9–8	5–4	3–2	6–9	8–5	4–3
4–5 बजे	8–5	1–3	7–6	9–8	5–1	3–7	6–9
5–6 बजे	3–2	6–9	8–5	4–3	2–6	9–8	5–4
6–7 बजे	9–8	5–1	3–7	6–9	8–5	1–3	7–6
7–8 बजे	4–3	2–6	9–8	5–4	3–2	6–9	8–5
8–9 बजे	6–9	8–5	1–3	7–6	9–8	5–1	3–7
9–10 बजे	5–4	3–2	6–9	8–5	4–3	2–6	9–8
10–11 बजे	7–6	9–8	5–1	3–7	6–9	8–5	1–3
11–12 बजे	8–5	4–3	2–6	9–8	5–4	3–2	6–9

उदाहरण स्वरूप मान लिया जाये कि आपका जन्म सोमवार को साय 6-15 पर हुआ है। इसको सारणी मे पहले कालम के 6-7 बजे के बीच वाले समय मान के मध्य माना जायेगा जिसको सोमवार के दिन 5 अंक का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। यह 5 अक अब आपके लिए जीवन भर के लिए बतौर भाग्य का अंक होगा। अब इस हफ्ते के दौरान जब भी किसी घटे के बीच अक 5 आता है तो वह एक घटे का समय मान आपके भाग्याक का पोषक होगा। इस दौरान आप कोई भी विशेष श्रेणी का कार्य करके लाभान्वित हो सकते है, क्योकि आप पूरे सप्ताह के दौरान उन घटो का प्रयोग सौभाग्यवर्धक कार्यो के लिए कर सकते है जहा भी सकारात्मक अक 5 पडता है।

जैसे– बुधवार के दिन रात्रि 12 से 1 बजे का समय, अथवा दोपहर 12 से 1 का समय या बुध के दिन ही दोपहर 2 से 3 बजे का काल या शुक्रवार के दिन 8 से 9 का समय। यह ध्यान रखे कि अगर आपका भाग्यांक गहरे अक्षरो मे पडे तो अन्य दिनों भी गहरे अक्षरो वाला सम संख्यक अंक ही आपको माफिक रहेगा, पतले अक्षर नकारात्मक भाग्याक वाले है। कोई भी सकारात्मक घटा या घटे ही प्राकृतिक अवस्था में शुभ एव लाभकारी परिणाम देने मे सक्षम होते है– क्रियाशील और परिश्रमी व्यक्तियो के लिए

यही अक–विज्ञान जहा पर लाभकारी होता है वहा आपको प्रत्येक घंटे का वर्गीकृत भाग्याक भी ज्ञात हो जाता है ।

परन्तु आपके भाग्य का नकारात्मक अक भी सारा का सारा अनिष्टकारक नही कहा जा सकता । पतले टाइप मे नकारात्मक (Negative) अक दिए गये है । यदि (Positive) सकारात्मक अक 5 का जन्म है और आप नकारात्मक अक 5 के समय खण्ड के दौरान इसका प्रभाव जानना चाहते है तो नकारात्मक घटे आपको लेखन या अध्ययन मे, अनुसधान कार्य मे, खोजबीन करने मे या कोई भी बौद्धिक कार्य करने मे पूर्णत फायदेमन्द साबित हो सकते है । जैसे यह समय फुटबाल के कूपन या फिर घुडदौड या श्वान दौड की तरफ मुखातिब होने मे लगाया जा सकता है । यह उल्लेखनीय है कि नकारात्मक भाग्य अक के घटे के दौरान प्रेरणा शक्ति ज्यादा सशक्त रहती है बजाय सकारात्मक घटे के दौरान । सकारात्मक को गतिशील जीवन के हित के लिए अधिक उपयोगी समझना चाहिए ।

किसी भी व्यक्ति का आर्थिक अंक (Money Number) उसके भाग्य अक के अनुसार उसके पूरे नाम और उप नाम के आधार पर मूल्याकित किया जाता है । देखे सारणी–हिब्रू–कबाला– प्रकरण दो, जिसमे 1 से 22 तक के वर्णाक्षरो के मान से किसी भी नामाक्षर का सयुक्तांक निकाला जाता है । (प्रकरण 2 मे नाम का मूलाक निकालना अच्छी तरह समझाया गया है) ।

हिब्रू मतानुसार धन का अंक निकालने के लिए पूरे नाम, जाति विशेष सहित, अग्रेजी वर्णो मे शुद्ध–शुद्ध लिख ले । उसके बाद सभी का अक शास्त्रीय मान पूर्वोक्त सारणी (प्रकरण 2) के अनुसार निकाले । यह सिर्फ कबाला पद्धति से ही निकलना है, यूनिट पद्धति से कदापि नही । (हालाकि इन दोनो पद्धतियो मे 75% तक एक ही अक मान उपलब्ध होता है) ।

इस प्रकार 1 से 22 तक के मध्य जो भी अतिम अक मान आपके नाम का आयेगा वही अक लगभग सभी की आर्थिक पूंजी का विवरण देगा । यहा पर अर्थांक या धन का अक निकालने के एक–दो उदाहरण दिये जा रहे है–

KEWAL	ANAND	JOSHI
11, 5, 6, 1, 12	11, 4, 1, 14, 4	10,16,21,8,10
=35	=34	=65
=8	=7	=11

8+7+11=26=8 धन का अक ।

E	D	W	A	R	D		W	I	L	L	I	A	M		W	H	I	T	M	A	N
5	4	6	1		2	0		46	10	12	12	10	1		13	6	8	10	12	1314	
=40=4								=64=10												=74=11	

सारे नाम उपनामो का सयुक्तांक =4+10+11=25

25 अक बाईस से अधिक है, अत 2+5=7 हुआ धन का अक ।

आपने उपरोक्त दोनों उदाहरणो मे जो धनांक 8 तथा 7 प्राप्त किया इनका फलित विश्लेषण आगे के पृष्ठों मे देखे । सभी 22 अंको के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डालने की विशेष चेष्टा की गई है ।

इसी शृखला मे हम एक और तीसरा उदाहरण दे रहे है ताकि विचारपूर्वक विश्लेषण का भाव स्पष्ट हो सके । यह नाम भी अग्रेजी वर्णमाला का ही है ।

इस नाम का कबाला मूल्याकन ऐसा है–

GABRIELLE	RENE	CARTER
3, 1, 2, 20, 10, 5, 12, 12, 5	20, 5, 14, 5	11, 1, 20, 22,5,20
=70=7	=44=8	=79=16

इन तीनो नाम खण्डो का योग 7+8+16=31=4 हुआ । अत यह अंतिम 4 अंक ही उपरोक्त नाम के व्यक्ति के लिए आर्थिक उपलब्धि का अक होगा जोकि जीवन की सामान्य स्थितियो को लाभ–हानि देता रहेगा । अगले पृष्ठों मे आप 1 से लेकर 22 तक के अंको का आर्थिक विश्लेषण ज्ञात करेगे ।

<u>अंक एक</u>: आपका अर्थ अक अगर एक है तो आप वास्तव मे खूब अधिक अर्थ संचयी होगे । आपके धन अर्जित करने के कई स्रोत होगे । अर्थात् नौकरी, ओवर टाइम, बौद्धिक या कलात्मक

मान, धन, रिश्वत, पार्ट टाइम पेशा अथवा व्यापार, एजेन्सी, सूद–खोरी, विनियोग, किराया, भाडा आदि या फिर पेशन, रायल्टी, सन्तान या परिवार के सदस्यो से भी आप धन कमा सकते है। धन कमाने के प्रमुख स्रोत दिमागी कार्यो के अलावा यात्रा, वाहन अथवा तकनीकी कार्यो का निष्पादन भी हो सकता है। या कोई भी और आसान तरीका आपके धनार्जन का होगा। किसी भी धन अर्जित करने वाले काम की जरा–सी जड पकड लेना आपके लिए बहुत है। फिर भी आपको अपने धन को मौज बहार या भोग विलास मे नही उडा देना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि आपके धन को आपके परिवार का दूसरा सदस्य तो नही लूटा रहा। गैर जिम्मेदाराना तरीको से या बिना सोचे खर्च करना आपको सदैव हानिकारक होगा। आर्थिक करार या अनुबन्ध करते वक्त आपको विशेष सावधानी भी रखनी होगी। जमानत के कागजात, अधिकार पत्र या हुडी आदि देने से पहले भी आपको तीन बार सोचना चाहिए। अन्यथा कही पर भी आपको चपेट लग सकती है। लगभग 20 साल से 28 साल का अर्सा आपके आर्थिक भाग्योदय का आका जाता है।

अक दो: अगर यह अक आपका धनभाव का अक है तो फिर बिना किसी कारण के उधार लेना आपकी एक आदत जैसी है। किसी भी उचित अवसर या मौके पर धन खर्च देना आपकी प्रवृत्ति है, परन्तु आप अपने खर्चे हुए धन का मूल्य भी हासिल कर लेना चाहते है। कभी–कभी आप अपने व्यय को आय के अनुपात मे कुछ कम करना या फिजूलखर्ची पर नियत्रण भी लगाना चाहते है और व्यक्तिगत अथवा व्यवसाय क्षेत्र मे ऐसा कर सकने मे समर्थ भी हो जाते है। मुख्यत रचनात्मक कार्यो, निर्माणाधीन योजनाओ, ठेकेदारी या सप्लाई बिजनेस से अथवा परचून या थोक व्यापार से भी आपकी आजीविका जुडी रहती है। दूसरो की राय पर चलने अथवा साझेदारी से आपको एक दो बार भारी घाटा भी हो सकता है। गलम फहमी और सदेह के बीच पार्टनरशिप अच्छी नही। साहित्य, सलाहकार अथवा कला–लेखन का व्यवसाय भी कुछ व्यक्तियो को अच्छा साबित हो सकता है। महिलाओ के मामले में अध्यापक, पत्रकार अथवा उद्घोषक–वक्ता आदि बनना सौभाग्यशाली होगा। इसके अलावा वाणिज्य कार्य, एकाउन्टेन्सी, लागत लेखा की उच्च स्तर की व्यावसायिक शिक्षा आपको

लाभप्रद साबित होगी। खाद्य पदार्थों का विश्लेषण, वितरण–प्रणाली का सरलीकरण अथवा कोई भी आर्थिक विषयक अनुसधान भी आपको यथासमय आमदनी करा सकता है। मध्यावस्था अर्थात् 25 से 50 साल का अर्सा आपको धन के लिए सफलतासूचक है।

<u>अंक तीनः</u> आपकी आर्थिक क्रिया की शुरूआत बहुत अचभित तरीके से होती है। या तो आप एकाएक धन कमाने के लिए प्रवृत्त होंगे या फिर कोई अदृश्य आकर्षण आपको धन पैदा करने के लिए तैयार करता है। या फिर कभी बिना किसी उल्लेखनीय प्रयास के या सिर खपाए आपको धनार्जन के क्षेत्र मे उतरना होगा। दोनो तरीके ऐसे होगे जिनमे अवसरवाद या मौका परस्ती का अभियोग या लाछन भी आप पर लग सकता है। या फिर बहती गगा मे हाथ धो लेने वाली बात भी चरितार्थ हो सकती है। आपको विलास और सुख आराम की विशेष चाहत भी जीवन मे रहती है, परन्तु इनके लिए आप सहज मे ही कोई युक्ति निकाल लेना पसन्द करते हैं। इस भावना के चलते कभी आपके अन्दर लालच और होड लगाने की प्रवृत्ति जन्म ले सकती है। फलत आपके मित्रो या प्रियजनो द्वारा उकसाये जाने पर आप किसी भी बडे खर्चे के लिए धन जुटा लेना पसन्द करते है, चाहे इसके लिए कोई अनैतिक मार्ग ही क्यो न अपनाना पडे या मौका पाकर रिश्वत, कर्ज या बेईमानी या गबन ही का चक्कर न चल जाए। आपकी कमजोरी है दूसरों का यकीन कर लेना, यद्यपि इसके चलते आपकी आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है, परन्तु आपका विश्वासपात्र वही होना चाहिए जो या तो आपका पार्टनर हो या फिर जीवन साथी या कोई स्पष्टवादी मुहफट व्यक्ति। शुक्र आपके कबाला अक का स्वामी है। अत. युवावस्था आपके लिए धनदायक एवं समृद्धि का समय होता है।

<u>अंक चारः</u> यह अंक यह दर्शाता है कि आपके अन्दर कठिन और लम्बे समय तक परिश्रम करने की क्षमता है। अत. धन अर्जित करना आपको मेहनत करने के एवज मे सहज लगता है। इसके चलते आपका हाथ सदैव अच्छे–अच्छे सौदे या कमाई में रहता है, चाहे आप दूसरो के लिए काम करें या अपने लिए। कभी–कभी तो पैसा आप पर बरसता है। इसके साथ ही आपको अपने खर्च पर भी नियंत्रण रखना चाहिए। महंगी और अप्राप्य

वस्तुओ को खरीदकर जमा कर लेने और आडम्बरपूर्ण जीवन शैली अपानाने से कभी–कभी आप दूसरो के आगे हाथ फैलाने की स्थिति मे भी आ सकते है। सचमुच यह एक लज्जास्पद घडी होती है जब एक सिगार पीने वाला व्यक्ति सस्ती बीडी भी एक नौकर से मागता हो। यह भी एक तथ्य है कि पहले आप खर्चीले नही होते, परन्तु अपनी कार्यक्षमता या उत्पादन बढाने के लिए आप बहुत से ससाधन या मशीनरी उपकरण ला कर या अपनी वर्कशाप को औजारो से ठूस कर रख देने से अपनी दैनिक आवश्यकता के लिए कर्ज मागने की स्थिति मे आ जाते है। घर मे सुख आराम और मनोरजन देने वाले साधनो का आप उधार या किश्तो की खरीद कर लेने मे नही हिचकते जिसके फलस्वरूप आपकी भुगतान प्रक्रिया कभी कमजोर पड जाती है। जुए–सट्टे मे आपको दूरदर्शिता से काम लेना चाहिए, क्योकि धन दाव पर लगाकर जोखिम लेना कभी भी आपको एकाएक दीवालिया घोषित करवा सकता है। विनियोग के मामले मे आप बहुत चालाक एव काइया किस्म के है, परन्तु सतुलन न रहने पर युवावस्था मे 20 से 30 साल के दौर मे आप यदि अपनी आदतो पर नियत्रण रखते है तो 40 साल बाद आप औसत धनी व्यक्ति की उपमा प्राप्त कर सकते है।

<u>अंक पांचः</u> आर्थिक समृद्धि और धन पर राज करने के मामले में अक पाच विशेष भाग्यशाली माना जाता है। ये व्यक्ति वैसे तो जन्मजात धनी होते है, परन्तु जीवन के प्रत्येक दौर मे भी इनका धनार्जन का सौभाग्य तत्परता से इनकी छाया बनकर चलता है। जहा आपको अपने काम से धन प्राप्त होगा वहा व्यावसायिक हुनर से भी धन प्राप्ति होती रहेगी। सट्टा अथवा जुआ आदि के माध्यम से, विनियोग करने से तथा कानूनी विवाद या फिर पैतृक जायदाद के बंटवारे से भी धन का स्रोत सुदृढ होता रहता है। इसके साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि अपने फालतू व्यय को आप नियंत्रण मे रखे तथा विनियोग या सट्टे आदि की प्रवृत्ति को भी सदैव लाभकारी न समझे। अगर इन फालतू खर्चो का बोझ भी आपके ऊपर पडता रहा तो कभी न कभी आर्थिक कमजोरी का अप्रिय तनाव भी आप को तत्काल भुगतना पड़ सकता है। धन को बुरे दिनो के लिए बचाकर रख देना आपके परम हित की बात है। यह भी सभव है कि अगर

आप व्यसनो से दूर रहे तथा अनावश्यक जोखिम नही लेते है तो धीरे–धीरे आप अपने अर्जित धन का अच्छा कोष भी गठित कर सकने मे समर्थ हो जायेगे। परन्तु जब खर्च करने का अवसर आये तब आप प्रत्येक छोटे या मोटे खर्चे को अनिवार्य खर्चे के नाम पर स्वीकार कर लेगे तो जहा प्रगति मे रुकावट आयेगी वहा कई प्रकार की हानिया भी सभव है।

अक छः यह अक आर्थिक मामलो मे अपना सहयोगी और प्रभावी स्थान रखता है। जहा से भी अर्थ–लाभ सभव हो वहा की सुगन्ध इस अक को पहले ही लग जाती है। कभी तो यह लाभ बहुत सहज रूप में हो जाता है, परन्तु कभी–कभी इसके लिए कडी मेहनत भी करनी पड सकती है। अत आपको सदैव भाग्य पर निर्भर नही रहना चाहिए और परिस्थितियो को उतनी लापरवाही से नही आकना चाहिए कि जैसे हर वक्त वाछित वस्तु आपकी मुट्ठी मे बिना प्रयास के आ जायेगी।

चूकि शुक्र ग्रह इस अक का स्वामी होता है, अत जब भी यथोचित व्यक्तिगत प्रयास किये जायेगे तो व्यापार अथवा नौकरी दोनो ओर से बहुत सारे लाभ देने मे समर्थ हो सकते है। यही नही, दूसरे उपक्रम मे पूजी निवेश अथवा स्पेकुलेशन, जुआ या सट्टा भी आपको अचानक लाभकारी हो सकते है। दूसरो के सहयोग से भी आप लाभ उठाते है। साझेदारी एवं विवाह भी आपको लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। विवाह का लाभ लम्बे अर्से तक तभी सुदृढ होता है जब पति/पत्नी को प्राप्त करने मे विशेष इच्छा या बुद्धिमानीपूर्वक चयन किया गया हो। दूसरी ओर कोई अभद्र साझेदार या अनिच्छा से स्वीकार किया गया दाम्पत्य सहयोगी न केवल तनाव पैदा करता है बल्कि घाटे का सौदा भी साबित हो सकता है।

अंक सातः यह अक यह दर्शाता है कि एक स्थिर बिन्दू से प्राप्त होने वाला धन आपके लिए उन्नतिगामी, सौभाग्य या सफलतादायक सिद्ध होता है। आमदनी और धन का विभिन्न स्रोतो से होने वाला उद्गम आपकी विविध प्रकार की गतिविधियो की देन भी है। इसके अलावा मुख्य व्यावसायिक हित भी अनेक प्रकार के छोटे–मोटे लाभदायक क्रिया–कलापो से सम्बद्ध रहते हैं जोकि कमोबेश आपकी सकल प्राप्ति मे आशात्मक योगदान देते है।

आय और व्यय के मामले में उतार–चढाव आपके जीवन मे आते ही रहते है, परन्तु जहा तक खर्च का सवाल है उसके मामले मे आपको थोडा विवेकपूर्ण नजरिये से चलना चाहिए। पैसा और सौभाग्य के एक साथ टपक पडने से फूहड आकांक्षाओ के पीछे मत जाइये। अपनी सीमा से बाहर जाने के कारण अच्छे और समृद्धिशाली दिनों मे भी आप परेशानी में पड सकते है। वैसे तो आप एक समय विशेष के दौर में जो भी कुछ जोखिम भरा करोगे उसी मे सफल हो जाओगे–सट्टा, जुआ और अवाछित निवेश भी आपको फायदेमन्द साबित होगा। अच्छी कमाई होने के लालच में आप जो भी सट्टा सौदा करोगे उसका विपरीत फल होगा। आपको यह भी अवगत होना चाहिए कि तीर और तुक्के हमेशा सही नहीं बैठते है। अत मूर्खतापूर्ण फैसले करने और हवा मे तीर मारने से कभी लक्ष्य की प्राप्ति नही होती है। जोखिम पूर्ण कार्यो मे हमेशा घाटा ही नही होता, परन्तु आपको अतिरेक और उन्माद की जगह अपने व्यावसायिक ढांचे में सुधारपूर्ण कदम उठाने चाहिएं ताकि समय आने पर यथोचित लाभ मिल सकेगा।

<u>अक आठः</u> यह अक यह दर्शाता है कि आपकी महत्वाकांक्षा ही आपके आर्थिक जीवन का धरातल बनती है। आप दो प्रकार के रास्तो से धन लाभ करोगे–एक तो एकदम सुरक्षित तरीके है जोकि स्थिर बिन्दू बनकर आपको आमदनी देगे। तब आपके पास अच्छा खासा धन जमा हो जायेगा। दूसरा वह तरीका है जिसको आप अपनी इच्छानुसार चलायेगे। व्यय के भी कई तरीके होगे। एक तो वे जिनमें आप अपने सुख–आराम और जीवन स्तर अथवा स्टेटस का ध्यान रखते रहोगे और दूसरे ऐसी फालतू वस्तुओं की खरीद होगी जिनका उपयोग चन्द दिनों के बाद समाप्त हो जाता है।

आप सदैव ही खर्च को नियत्रित करने की चेष्टा तो करते हो और कभी–कभी विशेष कटौती अभियान भी आपका चलता है। ऐसी अवस्था मे आप या तो हद तक कजूसी दिखा जाते हो और जहां आवश्यक होता है वहा पर भी आपका हाथ खर्च की तरफ नहीं बढता। फलतः एक स्थिर बिन्दु ऐसा भी है जहा आपको खर्च को बढाने या कम करने की आदत बनी रहती है, फिर भी आपको आवश्यक वस्तु की प्राप्ति से नही हटना

चाहिए। विलासिता से आप विमुख हो भी जाए तो कोई हर्ज नही। व्यापारिक गतिविधियो का विस्तार करने–आइटमो की वृद्धि करने अथवा व्यापारिक सलाह मशविरा या जिम्मेदारी पूर्ण कार्य हाथ मे लेने के एवज मे भी आपको धन का लाभ हो सकता है। आर्थिक प्रबध कौशल के साथ–साथ सामाजिक, राजनैतिक या सार्वजनिक क्षेत्र के व्यवसायों की सगठन क्षमता भी आपको यदा–कदा अर्थ–लाभ दे सकती है। शनि आपको आजीविका सूचक है। अत जीवन मे 36 साल बाद ही आर्थिक अभ्युदय होता है।

अंक नौः यह अक यह दर्शाता है कि आपकी बहुत सी आशाए और कामनाए जीवन की आर्थिक समृद्धि के साथ जुडी हुई है। वैकल्पिक रूप मे आपकी अच्छी आमदनी और धन की अविकल प्रवाह–धारा से आप इतने सक्षम जरूर हो जाते हैं कि आपके स्वजनो एवं परिजनो की महत्वाकाक्षा और भरण–पोषण की जिम्मेदारी आपके अर्थ–तत्र पर केन्द्रित हो जाती है। सामाजिक और सार्वजनिक जीवन मे भी आपका धनी एवं खर्चीला स्वभाव सर्वत्र सराहनीय तथा आदरणीय होता है। कुभ राशि से आपका अंक नियत्रित होता है। अत. आमतौर पर पूर्वानुमान लगा लेना आपका स्वभाव और गुण होता है। वैसे धन और पैसे के मामले मे पूर्व धारणा के साथ चलना आपकी जिम्मेदारी और कर्तव्य को निर्बाध रूप से सही दिशा मे ले जाता है। सार्वजनिक जीवन मे जहा पैसे के लेन–देन का प्रश्न होता है वहा आपका नाम पहले लिया जाता है ताकि वित्तीय मामले आपके हाथ मे सुचारु रूप से चल सके। परन्तु यह ध्यान रखना जरूरी है कि जनता का धन कही आपके अपने खाते खर्च मे न लग जाए, अन्यथा आपकी बदनामी, अपकीर्ति और मुकदमा–कानून का पचड़ा भी आडे आ सकता है। सट्टे–जुए से अथवा रचनात्मक निवेश के जरिए आपको अधिक लाभ हो सकता है। फिर भी सट्टा–जुआ या स्पेकुलेशन को दूर से देखना ही उचित है।

अंक दसः यह अक दर्शाता है कि जीवन में आपको एकाएक लाभ भी होगा तो एकाएक हानि भी। इसके लिए कुछ तो कारण वे होंगे जहा आप अपने व्यवसाय मे अचानक फेर बदल कर देते हैं और कुछ हानि–लाभ सट्टे–जुए की प्रवृत्ति के कारण भी सभव है। अगर आप मूलभूत विचारों और रचनात्मक

बुद्धि व्यवहार को महत्व देगे तो आपको हानि कम होगी, लाभ अधिक होगा । जब भी आप भविष्य की योजनाओ को कार्यरूप देते वक्त आवश्यक रद्दोबदल कर लेते है तो वही बात समय आने पर पूरी होती है और आप अवाछित हानि से बच जाते है। आपको सदैव अपने काम–काज मे प्रेम पूर्वक चलना चाहिए, अन्यथा आपके साझेदारो–सहायको अथवा समवर्ती लोगों के बीच भारी गलत फहमी से नतीजे बिगड सकते है। सहयोग और सहकार्य की भावना सबसे बेहतर मार्ग है जहा पर आप अपने शुभचिन्तको को बाधे रह सकते है। आपको खेल तमाशो से, फुटबाल मैच से, घटनाओ पर सट्टा लगाने से, ताम्बोला से या लाटरी से भी धन की आमदनी हो सकती है।

अंक ग्यारह: यह अक कुछ अद्भुत किस्म के प्रभाव देता है। यह अक आपको किसी भी मामले को लम्बे समय तक चलाते रहने की योग्यता और सक्रियता का श्रेय देता है। अर्थात् कोई भी अच्छा सम्बन्ध या लाभकारी अवसर आपके हाथों से सालो–साल जीवित रहता है। आर्थिक मामलो मे आप बहुत दूरदर्शिता से काम लेते है। अपने बराबर के भागीदारो और दूसरे लोगो को भी समयोचित सलाह मशविरा देकर सबकी सद्भावनाओ को अपनी ओर मोड लेना भी आपकी दूरदर्शिता और पथ–प्रदर्शन का ही पक्ष है। यही कारण है कि आप से लेन–देन करके, आपकी सहायता करके, सभी प्रसन्नता अनुभव करते है। दूसरी ओर आपको कष्ट एव बुरे समय के बचाव के तरीके तैयार रखने चाहिए–धोखेबाजो से, चालबाजों, ठग–डकैतो और अवाछित घटनाओं के प्रति भी सावधानी बरतनी जरूरी है। चोरी, गबन और बेईमानी से दूर ही रहना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि कभी मुसीबत के आने के बाद आप स्थिति से निबटने के लिए भावावेश मे कोई गलत मार्ग चुन लें ताकि हानि को पूरा किया जा सके। परन्तु ऐसे कदम उठाने ठीक नही। आपको एक के बाद दूसरी कठिनाई का दौर झेलना पड सकता है जिसमे हानि और घाटा तो है ही, मान प्रतिष्ठा भी गिर सकती है।

अंक बारह: यह अक दर्शाता है कि यद्यपि आपके आर्थिक जीवन मे अनेक उतार--चढाव आते रहते है, परन्तु जहा तक आय और व्यय के केन्द्र बिन्दु है वहां पर सौभाग्यसूचक और भाग्यशाली अवसर भी आते हैं जिसके चलते आमदनी का सूचकाक सदैव

ऊपर रहता है । यह भी ठीक नही कि आप बहुत सा व्यय ऐसा कर डाले जिसकी उपयोगिता मात्र दिखावे की हो, या फिर दैनिक खर्चों को भी अनियमित तरीके से चलाया जाय । यह जरूरी नही कि पैसा आने पर ही पैसा बचाया जाये, बल्कि यह भी एक सत्य है कि पैसा खर्च करते समय भी पैसा बचाया जा सकता है ।

जीवन मे आपको मित्रो के माध्यम से व्यापार में विश्वास पैदा करके तथा सद्भावनाओं के चलते लाभ हो सकता है । इसके साथ ही धार्मिक कार्यों के सचालन से, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक या फिर सार्वजनिक हित के कार्यों से भी आप लाभ प्राप्त कर सकते है । परन्तु झूठे मित्रो से धोखा, धन–हानि और जालसाजो के चक्कर मे पडकर भारी नुकसान भी हो सकता है । रातोरात धन कमाकर अमीर बनने की इच्छा से बचना चाहिए । इसके चलते आप गलत लोगो के चगुल मे फंस सकते है ।

<u>अंक तेरहः</u> अक तेरह यह दर्शाता है कि आपकी जेब मे धन हो तो यह मुश्किल है कि आप ख़र्च करने से रुक जाये । अगर यही प्रक्रिया चलती रही तो आपकी फिजूल खर्ची इस हद तक बढ सकती है कि एक दिन आपकी आमदनी इस व्यय भार के सामने तुच्छ नजर आयेगी और कठिनाइयो तथा सघर्षो का कडवा अनुभव भी आपको होने लगेगा । आपके अन्दर धन कमाने की अद्भुत क्षमता है, बशर्ते कि धन्धा आपकी रुचि को स्पर्श करता हो और आपके पास पर्याप्त समय एव शक्ति भी है । अगर आर्थिक स्रोतो के विकास का काम आपको सौपा गया तो आप अपनी योजना तथा मसौदे से थोडे से समय मे अपूर्व प्रगति दिखा सकते है । कभी–कभी कुछ सामाजिक और समयबद्ध कार्यक्रम ऐसे भी होते है जहा रातोंरात काम करके धन कमाना सरल है, तो यह प्रोजोक्ट भी आपके लिए एक चुनौती है जो सफलता देकर ही पूरी होती है; परन्तु अन्य जोखिम भरे कार्य–जैसे सट्टा, जुआ या लॉटरी का खेलना जैसा जल्दी अमीर बनने का रास्ता शायद आपको रास नही आये । अत इस दिशा में अपने ऊपर नियत्रण रखना ही अभीष्ट है । अपने आर्थिक अभियान मे सफलता प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास जरूरी है, चाहे जीवन का कोई भी चरण हो ।

<u>अक चौदहः</u> आपका यह अक यह प्रभाव दर्शाता है कि आर्थिक प्रक्रियाओ मे आपको व्यावहारिक अधिक होना पडेगा। अर्थात् आपका काम–धन्धा एव आजीविका ऐसी भी हो सकती है जहा लेन–देन का कार्य प्रमुख हो। हो सकता है कि आप अपने कार्यालय मे खजाची हो या बैक मे करेन्सी वितरक। व्यापार मे धन उगाही करने वाले हो या फुटकर विक्रेता, जिसका एक हाथ हर वक्त गल्ले में होता है। यह सब कार्य आपके राशि स्वामी मंगल की कृपा से है जिसे समाज में एक दम ईमानदार, खरा और चरित्रवान तथा गोलमाल से परहेज करने वाला समझा जाता है।

आपके अन्दर सग्रहशीलता का एक विशेष जज्बा भी जन्म लेता रहता है। जब आपको आमदनी का एक स्थिर बिन्दु मिल जाता है तो फ़िर आर्थिक हितो का सरक्षण करना भी आपको अनिवार्य लगेगा। परन्तु जमा पूंजी बढाने का शौक आप मे अभूतपूर्ण खतरे मोल लेने की प्रवृत्ति को जन्म दे सकता है। जैसे स्पेकुलेशन, जुए–सट्टे की प्रवृत्ति या फिर तत्काल ही फल देने वाला पूजी निवेश। अगर आपकी धारणा इसको अपनी क्षमता के भीतर समझती है तो फिर आप तत्काल ही धन को हाथ से निकाल देने मे तत्पर हो जायेगे। अगर आप लाभान्वित होते है तो निश्चय ही आप अपनी समृद्धि को बढाने में धन को अवश्य सरक्षण देगे। अगर आप घाटे मे आते है तो दार्शनिक की भाति हस कर घाटा सहन कर लेते है। इस तजुर्बे को आप भविष्य के लेन–देन मे अवश्य गांठ बाध लेते है। ललित कला अथवा कलात्मक गतिविधियो से या काव्य साहित्य लेखन से भी आपको लाभ हो सकता है, जैसे सगीत, मूर्तिकला पेटिग आदि।

<u>अंकपन्द्रहः</u> यह अक बताता है कि कैसे आप आर्थिक तंत्र को नियत्रित करते है और सामान्य आय का उचित आयोजन और योजनाओ को कार्यान्वित करके आर्थिक वृद्धि और विकास की ओर बढते हैं। आपके अधिकांश विचार प्रयोगवादी न होकर व्यावहारिक तौर तरीको की सीमा में फिट बैठते हैं। परन्तु आपको यह भी देखना होगा कि किसी भी आर्थिक व्यवस्था मे अगर कोई आपसे अधिक अधिकार प्राप्त सरक्षक हो या बॉस बनता हो और वह आपके विचारो को अपनी योजनाओ मे मिलाकर लाभकारी क्रियान्वन को अपने खाते में न डाल ले। अर्थात्

आपकी योजनाओ का कार्य क्षेत्र गोपनीय, परन्तु सीमित स्तर तक ही रहना चाहिए। अगर आपको कोई अधिकारपूर्ण पद या सम्मान मिल जाता है या फिर किसी कार्यप्रणाली के आप नियत्रक होते हैं तो आर्थिक स्थिति निश्चित ही अपनी साख को बढाते हुए विकसित होती जायेगी। दाव पर लगाने के बजाय निवेश करना ज्यादा हितकर है। अगर आपकी व्यावसायिक प्रक्रिया राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सकट के कारण प्रभावित हो जाए तो आपको निश्चय ही हानि उठानी पड सकती है। फिर भी आपकी सूझबूझ और दूरदर्शितापूर्ण कार्रवाई से लाभमार्ग यथावत् चलता ही रहेगा। युवावस्था बीत जाने के उपरान्त आपका बैक बैलेन्स सतोषजनक ढग से बढता रहेगा–बशर्ते कोई अप्रत्याशित दुर्घटना या बीमारी–मुकदमे का खर्चा बीच मे न आ पडे।

अंक सोलह: इस अक को धन कमाने के लिए वास्तविक तौर पर कठोर परिश्रम करना पडता है। या यू कहे कि पैसे कमाने के लिए आप कठिन से कठिन काम भी करने को तैयार रहते है। आपका जो भी हुनर या धन कमाने का पारम्परिक व्यवसाय है उससे ही अजीविका चलाने पर काफी धन मिलता है। परन्तु अर्जित धन को संग्रह करके रखना आपकी क्षमता के बाहर है; क्योंकि आप जो भी कमा रहे होते है उसका प्रतिद्वन्द्वी सामने तैयार रहता है। आपकी आय 1000 है तो व्यय भी 1000 की सीमा से आगे बढा हुआ है। धन व्यय करने की आप मे बहुत व्यग्रता रहती है। इस खर्चीलेपन के कारण कभी भी कोई विडम्बना आकर गम दे सकती है। आपके जीवन मे एक दौर आये दिन ऐसा भी आता रहता है जब आपके पास पैसे नही होते–लोगों से उधार लिया नही जा सकता। फलतः आपकी चिन्ताये तथा परेशानियां अचानक पहाड की तरह स्थिर हो सकती है। आपकी आर्थिक समृद्धि को बढाने में आपके वैवाहिक साथी का भी विशेष योगदान होता है। अगर आपकी पत्नी सोच–समझ कर संतुलित व्यय करना न जानती हो तो दोनो के खर्चीले होने पर हाल और भी बदतर हो सकता है। 30 वें साल के मध्य का समय आपके लिए विशेष घटना प्रधान होता है।

अंक सत्रह: यह अंक दर्शाता है कि आपके लिए आर्थिक जीवन के दोहरे–तिहरे आयाम प्रस्तुत रहते है। अर्थात् आपको धन की प्राप्ति एक से अधिक पैतृक स्रोतो से होती है या फिर

नौकरी और बौद्धिक आजीविका में भी आपके धन कमाने के स्रोत बहु उद्देशीय होगे। अत· जब भी आप अपना व्यवसाय अथवा आजीविका नौकरी आदि करे तो यह भी देखे कि उसी स्थान पर सिक्का जमाना है जहा आपकी आमदनी के जरिये बढने लगें। नौकरी करने वालों पर यह बात पूरी तरह से लागू नही होती है, परन्तु व्यापारीगण ऐसी व्यवस्था आये दिन के लिए कर सकते हैं।

अगर आप साहित्य लेखन, अनुवाद अथवा भाषा सम्बन्धी ज्ञान अथवा नाजुक विषयों की जानकारी रखते है तो आपके आर्थिक विकास मे विशेष सहायक हो सकता है। इसके अलावा वाहन–यातायात, आयात–निर्यात का व्यवसाय भी आपको धनदायी सिद्ध हो सकता है। इसके अलावा दूसरो को पढाना–अध्यापन–प्रशिक्षण देना भी आपको वित्तीय लाभ दे सकता है। वैसे तो आय और व्यय के क्षेत्र मे असतुलन आता ही रहता है, फिर भी कभी–कभी आय स्रोत ज्यादा सक्रिय रहते है जबकि कभी–कभी व्यय–भार बहुत भारी मात्रा में आकर स्थिर हो जाता है।

परन्तु कभी–कभी एकाएक ऐसी आवश्यकता और अनिर्वायता आ जाती है जब किसी न किसी के एहसान के तले दबना पड सकता है या फिर अस्थायी ऋण भार से मान–प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। यद्यपि आप जानते है कि कष्ट आ जाने पर पैसे कहा से निकाले जा सकते है। इसमे कई मार्ग तो एकदम अव्यावहारिक होते हैं। परन्तु अधिकतर तरीके तत्काल प्रतिफल देने वाले है और लाभकारी और सृजनशील उर्वरा धरातल पर चलते रहते हैं। आपको सदैव ही आर्थिक समझौतो, साझा सौदो या करारनामा आदि पर दस्तखत करते समय विचार कर लेना चाहिए और अन्तिम निर्णय देने से पहले वित्तीय सस्था अथवा बाहरी पार्टी के नियम, उप नियम तथा मामूली से मामूली शर्त/कानून पर भी गौर से विचार कर लेना चाहिए।

<u>अंक अठारह:</u> यह अंक धन और धन के उत्पादन के मामले में आपकी विचार शक्ति की गहनता को प्रकट करता है। आप धन को अपनी ओर आकर्षित करने के प्रयास करते है और जब धन आपकी मुट्ठी में आ जाता है तो उसके सरक्षण के लिए आप गैर जरूरत के उपाय काम मे ले आते है, चाहे आपका मखौल उडाया जाय अथवा आपकी मनोवृत्ति मे बदलाव आने वाला हो।

वस्तुत धन आने पर बहुत बदलाव और सक्रियता या फिर हर वक्त व्यस्तता का चोला भी आपको पहनना पडता है ।

आपके आर्थिक दृष्टिकोण पर घरेलू एव पारिवारिक स्थिति का प्रभाव अवश्य रहता है । तभी आपके निर्णय एकदम व्यक्तिगत और परिवार के हित सम्पादन की ओर अधिक झुकाव लिए रहते है । यही कारण है कि आपकी धन की महत्वाकाक्षा से एकदम स्पष्ट हो जाता है कि किस लिए आपको धन की जरूरत पड सकती है । आपका यह व्यक्तित्व भी आपकी बाह्य एवं आन्तरिक छवि को प्रकट कर सकता है बशर्ते कि आप या तो विवाहित हो या आपका कोई साझेदार हो या पुत्र एव पुत्री का आत्मिक लगाव हो । आपको उन सब की सलाह माननी चाहिए जिनके लिए आप धन कमाना जरूरी समझते है । वे सचमुच आपके व्यावसायिक उन्नति एवं अभ्युदय की बात कर सकते है । यदि कोई मुसीबत आये तो उससे बचाव के तरीके आप स्वय ढूढने मे समर्थ है । जमीन–जायदाद के लेन–देन से, किराया–दलाली से, अथवा पैतृक सम्पत्ति के अधिग्रहण से भी आप यदा–कदा लाभान्वित होते है । दूसरी ओर घरेलू खर्चे, समस्याए, लेन–देन, सजावट–बनावट अथवा जीवन साथी की व्यक्तिगत इच्छाओ पर चलते–चलते आपकी वित्तीय स्थिति डांवाडोल भी हो सकती है । या फिर परिवार, रिश्तेदारो एव मित्रो आदि के कारण भी आप पर आर्थिक दबाव पड सकता है ।

<u>अंक उन्नीस:</u> यह अक धन के मामले में जितना महत्वाकांक्षी होता है उतना ही धन उसके पास ऐन मौके पर आ भी जाता है । जैसे कि आप किसी वक्त किसी कार्य विशेष के लिए एक निर्धारित राशि खर्चना चाहते है तो तत्काल आपके पास उतने या उससे अधिक धन का आगमन भी हो ही जाता है जोकि कालान्तर में आपकी मनोवृत्ति–सामाजिक व्यक्तित्व को प्रतिष्ठा देता है और सार्वजनकि ख्याति–प्रतिष्ठा के द्वार भी खोलता है । सौभाग्य कहिए– आपकी संगठनशक्ति इसी गुण से बहुत बढिया होती जाती है । इसका तुरत लाभ यह होता है कि बहुत लोगों की सलाह सहकार्य से आप बडे से बडे बजट की भी सामूहिक नेतृत्व से पूर्ति कर सकते हैं । बडी संस्थाओ में आर्थिक अधिकार आपको ही सौंपे जाते हैं । परन्तु जहा परमार्थ के कार्य करने होते है वहां अपनी फिजूल खर्ची पर रोक लगानी भी आवश्यक होगी ।

अन्यथा एक समय ऐसा भी आ सकता है कि उदारता और खुले हाथो से पैसा लुटाने के कारण आपकी आदमनी का स्रोत ढीला पड सकता है। इसके कारण जहा आपकी चिन्ताए बढती है और मानसिक स्थिति का असतुलन विचलित करने लगता है वही सामूहिक जीवन मे आरोप, लाछन या फिर प्रतिष्ठा बिगडने की आशका भी आ सकती है। परन्तु धैर्य के बल पर आप कोई न कोई ससाधन का विकल्प निकाल ही लेगे। आप अपने को अन्तिम क्षणो मे संभाल ही लेते है। स्पेकुलेशन अथवा शेयर मार्केट का पूजी निवेश आपको जल्दी कमाने के लालच में अपनी तरफ आकर्षित अवश्य करता है, परन्तु यहां भी अपनी सीमा और शक्ति का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। सट्टे–जुए या दाव बाजी से लाभ कम, हानि अधिक हो सकती है। फिर भी यह अंक दरिद्रता को धन की छतरी से ढक सकने मे पूरी तरह समर्थ रहता है; परन्तु वृद्धावस्था ही इसके लिए पैसे के होने या न होने का प्रमाण दे सकती है। सारांश यह है कि वृद्धावस्था के लिए धन अवश्य ही बचाना चाहिए।

अंक बीस: यह अक बहुत ही सहायक एव अनुकूल प्रभाव वाला नम्बर है अगर आर्थिक क्षमता के लिए इसका आकलन करे तो इस क्षेत्र मे सफलता के लिए आपके व्यक्तिगत तौर तरीके और कार्यशैली का बहुत बडा हाथ तो होता ही है, साथ ही आप अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति को वही पर ही इस्तेमाल करते है जहा से तुरन्त और अच्छा लाभ होने की आशा रहती है। आपको घरेलू और पारिवारिक क्रिया कलापो से, डेकोरेशन से, घरेलू उपकरणो से अथवा कानूनी एव न्याय नीति के क्षेत्र की गतिविधियो से विशेष लाभ हो सकता है। व्यावहारिक योजनाओ को अपनाने मे, रचनात्मक कार्यो से, शारीरिक परिश्रम से अथवा बौद्धिक प्रयासो से आप यथोचित धन कमा ही लेते है। चाहे कैसी भी परिस्थिति का मुकाबला करना पडे, आप अपने आर्थिक पक्ष को कमजोर नही होने देते। यही कारण है कि जीवन के अन्तिम क्षणों मे भी आपके पास पर्याप्त धन जमा रहता है। युवावस्था में भी धन–लाभ के एक भाग को आप सबसे पहले भविष्य के लिए निवेश कर देते हैं।

अंक इक्कीस: यह एक सहायक अंक है यदि वित्तीय या आर्थिक क्षेत्र से इसका मूल्यांकन किया जाए। यह अक आपके

शारीरिक प्रयासो से अधिक मानसिक क्षमता का प्रयोग करने से धनदायक सिद्ध होगा। चाहे आपके आगे शारीरिक परिश्रम से युक्त कार्य हो या बौद्धिक क्षमता के बल पर किए जाने वाले प्रयास, परन्तु आप उस कार्य को उसी तरीके से हल कर लेंगे जिस तरीके से सहज ही धन का लाभ सुनिश्चित हो सके। उच्च पदाधिकारियों से अथवा प्रभावशाली लोगो के माध्यम से भी आपको व्यावसायिक एव आर्थिक लाभ होते रहते है। निवेश के लिए अथवा फायदा–व्यापार के प्रति आपके अन्दर भी एक विशेष क्षमता और पूर्वानुमान लगाने की कुशलता है। फिर भी छोटी–मोटी योजनाओ मे निवेश किया जाए तो आपको अच्छा खासा लाभ समय–समय पर मिलता रहता है। हां, सट्टा और जुआ आपको कमोबेश हानिकर ही सिद्ध होगा। अगर आप युवाशक्ति से सम्बद्ध अथवा किशोर बालक–बालिकाओ के उपयोग की वस्तुओ का विपणन करेगे तो भी आपको लाभ होता ही रहेगा। सक्षेप में यही कह सकते है कि जहा आप अपने उद्योगी एव परिश्रमी मस्तिष्क से धन कमायेगे वहा दूसरो की मदद भी आपकी आर्थिक समृद्धि मे एक महत्वपूर्ण साधन का काम करती है ।

<u>अंक बाईसः</u> इस अंक को धन के मामले मे विशेष शगुन वाला अथवा अनुरूप नही कहा जा सकता है। आपकी आजीविका सीजनल किस्म की होती है। मौसम के अनुसार फैलता सिकुडता कारोबार हमेशा आपकी आर्थिक स्थिति को उतार–चढाव मे तैराता रहता है। फिर भी आप बखूबी समझते है कि धन का वास्तविक महत्व क्या है। वैसे आप धन सचय करने मे लापरवाह नही रहते। विपत्ति के दिनों के लिए आपके पास सदैव सचित धन होता है। फिर भी अगर इस बीच खर्च करने का मौका आ पडे तो आप पीछे नही हटते है। आपके तथा परिवार के सदस्यो के स्वास्थ्य पर आपके व्यय और बचत का सूचकाक निर्धारित होता है। अगर घर मे रोग–व्याधिया आ जाए तो निश्चित रूप से आपकी जमा पूंजी कम हो जाती है। अतः आपके बीमार होने का अर्थ है धन की आमदनी एक दम ठप्प–जबकि दूसरो के कारण आती हुई लक्ष्मी भी अस्थिर होकर चलती बनती है। अतः यह जरूरी है कि जीवन मे एक तो स्थायी माध्यम की आजीविका

अपनाए और दूसरे, व्यय के मामले मे बचत करने का इरादा बनाए ।

टिप्पणी प्रस्तुत प्रकरण जहां आपके नाम से उत्पन्न अको के तरगीय प्रभाव को प्रकट करता है, वही धन के मामले मे आपकी नियति कितनी सहायक होगी, यह भी बताता है । यह उल्लेखनीय है कि ससार मे आज लाखो प्रकार के व्यवसाय है जो धन प्रदान करते हैं । लाखो लोगो की श्रेणी मे हम और वे सभी जन आते हैं जिनका ध्येय जीवन मे कर्मरत होकर चलना होता है । परन्तु अक शास्त्र की यह प्रस्तुति उस बात को नकार जाती है । विश्व मे जितने भी भू–भाग अपने अस्तित्व मे है, वहा पर दो प्रकार का अन्तर तो आमतौर पर सभी जगह है । जैसे अमीर–गरीब । हेनरी नामक एक व्यक्ति बहुत अमीर है जिसको कमाने और खर्च करने से ही फुर्सत नही है, परन्तु एक हेनरी ऐसा है जिसको कोई भी रोजगार स्थायी तौर पर नहीं मिलता– अस्थायी रोजगार मिलता है, परन्तु उसमे उसका क्या दृष्टिकोण फलित होगा उसका जानना त्रासद ही है ।

हिब्रू कबाला का सिद्धान्त पाश्चात्य तौर तरीको से पल रहे जन साधारण के अधिक निकट है बनिस्बत भारतीय परिवेश मे पल रहे आधुनिक युवक–युवतियो के लिये जिनके ऊपर अपने अलावा कई प्राणियो का बोझ कमाने के दिन से ही पड जाता है । या फिर उसका काम–धाम, सोच–विचार सब कुछ परिवार के नाम पर समर्पित है जिसका सामाजिक स्तर वैसा ही है जैसा एक सघर्षशील निम्नवर्ग या मध्यम वर्ग का होता है । दोनो प्रकार की मान्यताओ से जुडे भारतीय युवा को मानसिक तौर पर अपने लिए अनिवार्य रूप से कमाना है और साथ ही अपने स्वजनो–परिजनो का भी भरण–पोषण करना है । यह परिवेश है जिसमे व्यक्ति बचत के लिए यदा–कदा ही सोचता सकता है, अन्यथा उसके सामने खर्च को पूरा करने की ही समस्या है ।

प्रस्तुत प्रकरण मे आपका नाम, चाहे वह भारतीय हो या विदेशी, एक सार्थक अक को जन्म देता है । आप सिर्फ अपने जन्म समय का घटा याद रखे और पिछले पृष्ठो पर दी गई साप्ताहिक जन्म समय की दैनिक घंटा प्रहर सारणी से आर्थिक अक का आकलन करे ।

VII
प्रकरण सात

आपके स्वास्थय एवं आयु का अंक

शारीरिक शक्ति का प्रत्येक युवा एव प्रौढ व्यक्ति के लिए विशेष महत्व है। यह कहा भी गया है कि 'जान है तो जहान है'। अर्थात् जब स्वास्थ्य कमजोर और रुग्ण देह हो तो सासारिक उपलब्धिया सुख नही देती है। जीवन मे अच्छे स्वास्थ्य, शक्ति एव शारीरिक गठन का एक विशेष योगदान कर्म पर पडता है। वास्तव मे शरीर एव दिमाग के जरिये ही एक व्यक्ति अपनी सार्थकता को सिद्ध कर सकता है। सीधे सीधे कहें तो जीवन के सभी क्षेत्रो मे स्वास्थ्य सम्पन्न व्यक्ति ही सचालन करते पाये गये है। कमजोर स्वास्थ्य से आर्थिक स्थिति भी कमजोर ही रहेगी। बीमार शरीर कुछ भी कर सकने मे असमर्थ होता है। उल्टे वह खर्चीला, तनावपूर्ण और उपेक्षित भी धीरे–धीरे होने लग जाता है। इसके कारण जहा दाम्पत्य सुख, खान–पान सुख, घूमने–फिरने के सुख, सभा–सोसायटी के सुख और विशेष रूप से व्यवसाय क्षमता के सुख की हानि होने मे देर नहीं लगती। यदा–कदा बीमर होना अलग बात है। मौसमी बीमारी भी सहन हो जाती है, परन्तु गहन रोग शरीर की क्रिया–प्रक्रिया के लिए सचमुच एक अभिशाप ही तो है।

अंक विज्ञान के जरिये आप स्वास्थ्य की हिफाजत अथवा भविष्य में आने वाली गिरावट के प्रति कदम उठा सकते है, सचेत हो सकते है। विवशता न हो तो बीमार करने वाली परिस्थिति मे भी सशोधन कर सकते है।

आपकी शारीरिक क्षमता का जायजा कबाला अक मान (1 से 22 तक) से प्राप्त सयुक्ताक के जरिये भी लगाया जायेगा। इसके माध्यम से यह जानने मे सहायता मिलेगी कि आपकी

सम्पूर्ण शरीर प्रक्रिया मे आपके प्रधान अक राशि–ग्रह की क्या भूमिका है। दूसरी ओर आपके जन्म के समय उदय होने वाली लग्न राशि से भी शरीर का अन्दाजा ज्योतिष शास्त्रीय ढंग से लगाया जाता है। लग्न राशि जितनी बलवान अच्छे अशो मे, स्वराशि और मित्र राशि में होगी तो आपका स्वास्थ्य सौन्दर्य आकर्षक और निरापद होगा। विपरीत परिस्थिति में लग्न राशि पडी हो तो स्वास्थ्य सुख एक स्वप्न मात्र रह जायेगा। आपका नाम, जोकि सिर्फ पहले अक्षर तक रहता है, भी स्वास्थ्य सुख का विश्लेषण करेगा। नाम के साथ जुडा उप नाम या जाति, धर्म का अक्षर मिलकर जो सयुक्ताक आयेगा उसकी भूमिका भी विचारणीय होगी , परन्तु सम्पूर्ण जीवन पर सम्पूर्ण प्रचलित नाम ही सूत्रधार बनता है। जैसे कि आपका नाम है एडवर्ड (EDWARD), इसका पहला अक्षर इ (E) है जिसका समतुल्य अक 5 है। यह 5 ही आपके सम्पूर्ण नाम के अंक से विश्लेषित होगा। नाम की तुलना मे अंक निकालने के लिए पिछले प्रकरणो मे दी गई सारणी का ही प्रयोग करे। यहा सारणी को उद्धृत करने से पुनरावृत्ति होगी।

अब प्रत्येक अक की स्वास्थ्य सभावनाओ पर प्रकाश डाला जा रहा है.–

अंक एकः यह अक यह दर्शाता है कि आमतौर पर सामान्य स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी ही रहेगी, जब तक आप किसी मानसिक तनाव अथवा चिन्ता से ग्रस्त नहीं होते है। अक्सर अधिक चिन्ताओ का बोझ आपके स्वास्थ्य के लिए ही हानिकारक है, जिससे स्नायविक कमजोरी सभावित है। इसके कारण घबराहट, चिडचिडापन, सुस्ती और निराशा का दबाव बढने लगता है और इनका समावेश आपके आचरण मे होने लगता है। अगर चिन्ताओं का बोझ चरम सीमा को छू जाय तो बेहोशी होना, हृदय गति रुक जाना, चेतनाशून्यता, लकवा या घबराहट के कारण आत्मघाती प्रवृत्तियां पैदा हो सकती हैं। दूसरी ओर, जीवन के प्रति आशाधारी दृष्टिकोण, प्रसन्नता और खिलखिलाहट भरा वातावरण आपको जहां ऐसी गुप्त व्याधाओ से दूर रखेगा वहीं आपके शरीर का सचालन भी यथावत् होता रहेगा। फलतः अच्छे शरीर सौष्ठव के अलावा निःरोगी काया का आनन्द भी आप उठायेगे। अच्छे स्वास्थ्य के जरिये आप जहा बेहतर दाम्पत्य एव

सेक्स सुख प्राप्त कर सकते है, वही भ्रमण से, सामाजिक चहल–पहल से सभा–समारोह और खेल–कूद के टूर्नामेन्ट से, मौसमी खेलों के आयोजनों से, सिनेमा, पिकनिक अथवा लम्बी यात्राओ एवं पर्वतारोहण जैसे साहसिक सयोजनो से आनन्द उठा सकते हैं। दुनियां भर की सैर भी वही कर सकता है जो अक एक के अनुसार स्फूर्तिवान चुस्त, दुरुस्त तथा प्रसन्नचित्त हो। परन्तु बहुत अधिक भ्रमणशील व्यवसाय से आपको बचना चाहिए, क्योकि इसमें जहां बे–आरामी होगी वहीं व्यग्रता एवं निराशाओ का उन्माद भी कभी–कभी असतोष पैदा करके आपको अचानक रोग–ग्रस्त कर सकता है।

अंक दोः यह अंक आपको एक स्वच्छ, सुन्दर तथा सुडौल देह का मालिक बनाता है। यह अक यह भी दर्शाता है कि यथासम्भव जितनी स्वास्थ्य की देख–भाल तथा योग–व्यायाम एव शारीरिक परिश्रम, जीवन के आरंभिक चरणो में आप करेगे उतनी ही निरोग काया और दीर्घ आयु आपकी होगी। काया का सुख ही ससार की माया का सुख है। चूकि बुध आपके अक का संचालक ग्रह है जोकि पाचन क्रिया और प्रणाली पर सीधा प्रभाव रखता है। इसके लिए जहा उदर भाग की मांस पेशियो, धमनियो नाडियों और शरीर के जोडो, मसल्स तथा गाठो को शक्ति मिलती है वही नाडी केन्द्रो का नियंत्रण भी प्रमुख रूप से होता है।

इस मामले में आपको ध्यान रखना होगा कि कोई भी गरिष्ठ, अपाच्य अथवा अखाद्य सामग्री पेट में नही जाए, अगर सामान्य प्रणाली मे पाचन और मल–मूत्र निकास के अंग निष्क्रिय होने लगे तो उनका तत्काल उपचार, शमन आदि किया जाए। आतों पर अधिक सख्त भोजन का दबाव डालना भी हानिकर है। अगर उदर संस्थान खराब जो जाए तो आपको कोई भी भंयकर एवं चिन्ताकारक रोग हो सकता है जो आपके स्वास्थ्य, व्यवसाय एव दाम्पत्य सुख को तत्काल प्रभावित करता है। अधिक गर्मी का प्रभाव आपके नाडी संचालन को सुस्त कर देगा अथवा कमजोर कर देगा। शीघ्र पतन, स्खलन दोष अथवा अनियंत्रित मासिक धर्म, वीर्य दोष, मूत्र दोष या किडनी–गुर्दो की बीमारी हो जाना सब गर्म पदार्थ और गर्म मानसिकता का ही कुपरिणाम है। भोजन तथा पर्यावरण की समीक्षा करके अनुकूल पर्यावरण में रहने से कई प्रकार के भंयकर रोगों से बचा जा सकता है। उस शहर,

मुहल्ले, गली या गांव का प्रभाव भी आपके स्वास्थ्य पर पडता है जो कि पर्यावरण के दोषो से मुक्त है। अपगता या सज्ञाशून्यता भी आपको सभव है।

अंक तीनः (राशि तुला का स्वामित्व)– यह अक एक सुगठित और सक्रिय किस्म का शरीर आपको प्रदान करता है। यह आपके शरीर को दर्शनीय, चुस्त–दुरस्त और जल्दी ही सुधार कर लेने वाली खूबियो से सम्पन्न होने का भी सूचक है। इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि भावनात्मक उतार चढाव और मानसिक आघात आपके अच्छे स्वास्थ्य के परम शत्रु है। इसके जरिये न केवल आपकी कार्यशक्ति और कार्यक्षमता के ध्वस्त होने का खतरा है बल्कि कोई प्रगट शारीरिक बीमारी भी हो सकती है। इस अंक की नियत्रक राशि शरीर के मध्य भाग पर नियंत्रण तथा प्रभाव रखती है। साथ ही चर्म तथा किडनी–गुर्दे और अण्डकोषों पर भी इसका प्रभाव रहता है। सम्पूर्ण मूत्र वाहिका सहित गुप्तांग के अन्दर आन्तरिक हिस्से अक 3 के आधीन होते है। अगर यह क्षेत्र आपका कुप्रभाव मे आता है तो आपको किडनी का निष्क्रिय हो जाना, मूत्र–प्रणाली मे दोष, तथा मधुमेह तथा रक्तचाप जैसी बीमारियो के हो जाने की आशका भी रहेगी। अगर आपकी प्रवृत्ति से कभी पीलिया, मधुमेह मूत्र–विकार अथवा ऐसे ही नाजुक प्रकार के रोगो का आभास मिले तो तत्काल ही उपचार करना चाहिए। इसके साथ ही पथरी, अल्सर और स्टोन पैदा हो जाने जैसे भयानक रोग भी आपके पीछे पड सकते हैं। मौसमी प्रकार का नजला–जुकाम भी आपके लिए तत्काल ध्यान देने योग्य व्याधि है जिसके चलते सिर दर्द, दात दर्द अथवा अन्य तीक्ष्ण दर्द वाले रोग भी बेचैनी पैदा कर सकते है।

अंक चारः (स्वामी राशि वृश्चिक)– यह अक यही व्यक्त करता है कि जीवन की सामान्य नियमावली को अगर अपना लिया जाय तो स्वास्थ्य एवं शरीर बेहतर अवस्था मे रहता है। सामान्यतः खान–पान एवं काम करने, तथा उठने–सोने की आदतों का नियमन अगर संतोषजनक हो तो भी अच्छी शारीरिक शक्ति तथा सौष्ठव प्रदान करता है। इस अंक की स्वामी राशि वृश्चिक किडनी की मूल धमनियो और यूरेनरी, मूत्र एव मल निकास द्वार सहित समस्त गुप्ताग के आंतरिक क्षेत्र पर प्रभाव रखती है। इस क्षेत्र के रोग आपको हो सकते हैं। या फिर हर्निया,

अपेडिसाईटिस के साथ–साथ कामजन्य रोग अथवा ऐसे रोगो की सभावना रहती है जैसे सिफलिस, गनौरिया अथवा गर्मी। दूसरो के साथ सेक्स सम्बन्ध बनाते समय आपको उनके रहन–सहन, वातावरण और चरित्र आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इन रोगो के चलते अथवा आन्तरिक रुकावटो से छूत के रोग, हृदय रोग, गले और पीठ का दर्द आदि आपको पीडित करता है। सावधानी और स्वच्छता रखना विशेष प्रतिहारक होता है।

अंक पाँचः (स्वामी ग्रह वृहस्पति)– आपके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे यह अक अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करता है यदि आप सामान्य दूरदर्शिता और आशिक परहेज तथा बचाव से सजग होकर अपने दैनिक जीवन में चलते रहे। जब भी आप प्रतिकूल मोहौल मे रहे अथवा किसी कारण आराम और रेस्ट मुद्रा मे हो तो भी स्वास्थ्य खराब करने वाली शक्तियां आप पर गुप्त आक्रमण कर सकती है। अत भोजन और पेय पदार्थो के मामले मे आपको काफी सतर्क होकर चलना चाहिए। यह अंक अच्छी पाचन–शक्ति का प्रतीक है। इसके चलते जहॉ आपके टिसू फूल सकते है वहां शरीर मे मोटापे के लक्षण भी उभरने लगते हैं। फलत फोडा फुन्सी, गैस, अफारा से लेकर आलस्य–सुस्ती एवं बाद की अवस्था में गठिया–बुखार आदि मे से कुछ भी आपको हो सकता है। रक्तचाप की स्थितियों का निरीक्षण करते रहने से तथा अधिक कैलोरी वाली भोजन सामग्री के परहेज से, अधिक आराम न करने से आप नब्बे प्रतिशत तक रोगो से मुक्त रह सकते है।

अंक छः (स्वामी ग्रह शुक्र)– इस अंक का स्वास्थ्य पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहता है। यह अक शरीर के सामान्य टोन को भी सही मात्रा मे विकसित करता हुआ शीघ्र ही बढाने और ठीक प्रकार से विकसित करने की क्षमता भी रखता है। यह अक जहा सभी अगो में सन्तुलन और सौन्दर्य प्रदान करता है वहा चेहरे पर आकर्षण तथा अग–प्रत्यंग में लोच, माधुर्य और अदाकारी का भी सचालन करता है। अपने चारो तरफ एक मधुर ऊर्जा भी इस अंक की देन है। अगर इसके आस–पास का वातावरण बिगड जाए तो फिर इसका ध्यानाकर्षण इस असहनीय स्थिति से उबरने के दौरान तनाव और व्यग्रता की ओर बढने लगता है। यही कारण है कि एलर्जी और स्वादहीन स्थितियां इसको क्रानिक बीमारी अथवा अनिद्रा, व्याकुलता तथा अकर्मण्यता के वातावरण मे धकेल

कर कभी भी और कही पर भी बीमार कर सकती है। अक्सर आनददायक क्षेत्र मे, समारोह या मनोरजक स्थल पर या यात्रा पिकनिक में या फिर संगीत–साहित्य–कला आदि का आनंद लेते समय यह व्यक्ति बीमार पडता है। किडनी दोष, आखो का कष्ट तथा चर्म विकार, रक्त पित्त दोष का उभरना ही इसके रोगग्रस्त होने तथा स्वास्थ्य विकार का चिन्ह है।

अंक सातः (अक स्वामी धनु)– यह अक एक कठोर और कद्दावर किस्म की काठी प्रदान करता है जिसमे लडाकू प्रवृत्ति का होना प्रधान गुण है। इसके अन्दर जबर्दस्त पुनर्गठन शक्ति तथा शीघ्र ही ठीक हो जाने की क्षमता होती है। परन्तु अत्यधिक दौड–भाग, आपा–धापी, चलने–फिरने तथा शारीरिक परिश्रम की अधिकता मे इसको कुछ बेजोड किस्म के रोग, अस्थि दर्द, मांसल भागो का दर्द या फिर शारीरिक विकार की संभावनाएं रहती है। अधिक उत्तेजना, मादक पदार्थो का सेवन करना, सेक्स के लिए जोर आजमाना, झगडा–लडाई या किसी के साथ उलझने का अभिप्राय यही है कि सिर में दर्द, मानसिक विकृति, नाडी असंतुलन तथा मानसिक रोग कभी भी उक्त परिस्थितियो में हो सकता है। अत· इन्हें प्रत्येक काम समय–सारिणी अथवा नियम–सयम के अन्तर्गत ही करना चाहिए– न किसी बात पर अधिक प्रसन्न होना चाहिए न बहुत खिन्न। पैरों और कमर पर जोर नही डालना चाहिए। दुर्घटना, चोट–पटक, गिरने का भी भय रहता है। चलते–फिरते समय ध्यान रखना चाहिए।

अंक आठः (अंक स्वामी मकर राशि)– यह अंक बहुत अच्छे स्वास्थ्य का परिचायक नही है। जीवन के प्रारम्भिक भाग मे भी इसका स्वास्थ्य कुपोषण और अभिभावको की लापरवाही के कारण खराब रह सकता है। चूकि इसका स्वामी पृथ्वी तत्व राशि है, अत ज्यों–ज्यों व्यक्ति की आयु बढती है, त्यों–त्यो स्वास्थ्य में सुधार होता ही जाता है। इस पर सर्दी–गर्मी का विशेष प्रभाव होता है। अतः न अधिक गर्म और न अधिक शीत ही इसको माफिक आयेगा। शरीर में वात, कफ एव रक्त विकार की संभावनाएं प्रधान रूप से होती हैं। शरीर के तन्तुओं पर भी मौसम और ऋतुओं का प्रभाव रहता है। इसको तापमान के अनुसार ही पहनावा और खान–पान का ध्यान देना चाहिए। अगर पाचन क्रियाओं के संतुलन पर ध्यान न दें तो कब्ज, शरीर तथा पेट का

फूलना या फिर दस्त, अतिसार एवं धातु विकार इसको आसानी से जकड लेते है । इसका राशि स्वामी विशेष रूप से घुटनों, टखनो तथा शरीर के अस्थि जोडो का स्वामी है । अत्यधिक दवा का प्रयोग करना, ड्रग या मादक द्रव्य लेना या फिर शरीर को ज्यादा आराम देना भी इसको हितकारी नहीं है । शरीर के व्यवहार पक्ष तथा परिस्थितिजन्य अवस्थाओ पर ध्यान देना जरूरी है ।

अंक नौः (अंक नौ का स्वामी कुंभ राशि)– यह अंक भी आपको सामान्य तौर पर बलिष्ठ शरीर का स्वामी बनाता है । परन्तु यह भी आवश्यक है कि आप अपने शरीर की विशेष देख–भाल करते रहें, रक्त को दूषित नहीं होने दे । कार्बन अम्ल से बचाव जरूरी है जो कि अधिक धुएं मे रहने, दूषित या प्रदूषणपूर्ण हवा मे सास लेने या फिर पानी के साफ न होने के कारण शरीर की तरल एव रक्त प्रवाही शक्तियो को कमजोर करके आपको तपेदिक, जलोदर, भगन्दर, साईटिका एव कुष्ठ, मधुमेह या फिर अन्धेपन या रतौधी का शिकार भी बना सकता है । नाडियों में कम्पन से शिथिलता, लकवा, पैरालाइसिस या पाण्डु रोग के जैसे लक्षण भी उभर सकते हैं । कानो का दर्द तथा गर्मी–सर्दी का अवरोधी प्रवाह ही आपके खराब स्वास्थ्य के लक्षण है । यदि आप इन स्थितियो से बचाव करते रहें तो आपका जीवन स्वास्थ्य के मामले मे निश्चिन्त एव निरापद रह सकता है ।

उपरोक्त 1 से लेकर 9 अको तक का मान आप यूनिट पद्धति से निकाल कर देखें । प्रकरण 2 के अन्त मे यूनिट पद्धति की सारणी दी गई है । उसके आधार पर किसी भी नाम को अग्रेजी अक्षरों में लिखकर अंकमान 1 से लेकर 9 तक प्राप्त करके उपरोक्त गुण दोषों से समीक्षा कर सकते है ।

अंक दसः दस अंक भी यही प्रदर्शित करता है कि स्नायु प्रणाली की स्थिति भी एक सीमा तक सामान्यतः अच्छे स्वास्थ्य की सूचक है । अगर मानसिक तनाव से मुक्ति रहती है तो उस दौरान स्वास्थ्य अच्छा रहता है । परन्तु जहा तनावपूर्ण मामले पैदा हो जाते है–भय, क्लेश या दौड–धूप की अधिकता हो जाती है तो प्रतिक्रिया जल्द होगी तथा अनिद्रा रोग, पेट और अमाशय का विकार आ घेरता है । किसी दुर्घटना के कारण पैदा हुए क्लेश या धक्के के कारण भी इन्हे कभी–कभी रुग्णता हो सकती है । अधिक यात्रा करने से, अप्रत्याशित जोखिम लेने से अथवा दैनिक कार्यो

के बढ जाने से, शौकिया कार्यों में ज्यादा तल्लीन रहने से भी आपका स्वास्थ्य बिगड सकता है। पहाड पर चढना आपके लिए सर्वथा घातक अथवा रोगग्रस्त रखने का कारण हो सकता है।

अंक ग्यारहः अक ग्यारह का स्वास्थ्य पर एक विशेष प्रकार का असर बना रहता है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियो वाला अक है जो कि विपरीत स्थितियों पर अनुकूल स्थिति को बराबर ग्रहण कर लेता है और इसको होने वाले रोग भी मनोवैज्ञानिक किस्म के ही होते हैं। इस अक की कल्पनाशक्ति ज्यादा ही क्रियाशील रहती है। आशंका, भय, वहम और शक्कीपन भी इसमें ज्यादा ही रहता है। बिना किसी कारण चिन्ता और दुष्कल्पना करने में भी इसको मनोरोग सभव है। खाद्य पदार्थों से चलने वाले विषाक्त जीवाणु भी इन को प्रभावित कर सकते हैं। बन्द डिब्बो का बासी खाना, अथवा बना–बनाया भोजन इनके स्वास्थ्य के लिए अक्सर बीमारी का सूचक है। अत्यधिक धूम्रपान अथवा नशीली दवाओं का सेवन भी इनके स्वास्थ्य के लिए हानिकर सिद्ध होता है।

अंक बारहः अंक बारह भी बहुत अच्छा स्वास्थ्य नही देता है। फलत· ठंड या गर्मी के प्रभाव से विशेष बचाव रखने की हिदायत इनको दी जाती है। फेफडो और स्नायु प्रणाली पर गर्मी–ठड का तत्काल असर होना संभावित है। यह विचित्र बात है कि इसके बावजूद इनकी आयु बहुत लम्बी होती है। अत जब भी किसी रोग की आशका हो आप को तत्काल उसके यथोचित उपचार की चेष्टा करनी चाहिए। पेट और पैरों की स्थिति का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। इनकी सफाई और स्वच्छता भी जरूरी है। भोजन में भी कुछ सावधानी जरूरी है। आप यह भी महसूस करेंगे कि कुछ विशेष प्रकार के संस्थापित खाद्य पदार्थ एव भडारित पेय या फल–शाक–सब्जी आपके लिए जीवाणु जनित हो सकती हैं जिससे अचानक उल्टी, दस्त या चक्कर आने जैसे रोगो की स्थिति आ सकती है। जो भी तरल पदार्थ या जल आप पीते है वे या तो आपके स्वास्थ्य को बिगाडते है या फिर आपके लिए रोगी का बिस्तर तैयार करने मे सक्षम है। चूना, खट्टा–मीठा, किरकिरा या कतरा हुआ खाद्य आपके लिए वर्जित है जोकि आपकी पाचन–प्रणाली पर तत्काल ही प्रतिकूल प्रभाव देने में सक्षम रहता है।

अंक तेरहः यह अक सुदृढ देह और जीवनी शक्ति प्रदान करता है। सतुलित विचारधारा और समुचित देख–रेख के चलते स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परन्तु जीवन मे एक समय ऐसा भी आ सकता है, जब आपको ज्वर–बुखार से सम्बन्धित रोगों से सावधान होना पडेगा। जूडी बुखार, नजला आदि आपके सिर और चेहरे को प्रभावित कर सकते है। आपको महसूस होगा कि ज्यादा दौडभाग, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालने लगी है। यदि अत्यधिक व्यस्तता, आराम की कमी और अन्य प्रकार के श्रम बढ जाते है तो नीद सचय की शक्ति समाप्त होने लगेगी और हालात नही बदले तो अनिद्रा रोग आकर घेर लेगा। यह भी जरूरी है कि आपको जल्दीबाजी के दुष्परिणामो से और उतावलेपन के कारण होने वाली हानि से भी बचना चाहिए।

अंक चौदहः यह बलिष्ठ और विशाल शरीर देता है जिसके परिणाम स्वरूप मध्यावस्था में मोटापे अथवा झुकने की प्रक्रिया आपको अस्वस्थ रखने लगेगी। आपकी अधिकाश शारीरिक क्षमता काम–काज के सचालन मे खर्च होगी या फिर योग–कसरत आदि का नियमन हो तो ठीक है, अन्यथा पेट फूलना या चर्बी बढना जैसे भयकर रोग उत्पन्न हो सकते है। कुछ हद तक खाने–पीने की सावधानी भी जरूरी है। वृष राशि का इस अक पर स्वामित्व रहता है। अत भोजन का पौष्टिक और सतुलित तथा कम मात्रा मे ग्रहण करना जरूरी होगा, अन्यथा शरीर मे चर्बी और मास का जमाव जहा आपको अनावश्यक रूप से मोटा कर देगा वहा स्वास्थ्य की सामान्य सुरक्षा रखना भी बूते से बाहर होने लगेगा। आपका अक स्वामी गले, गर्दन, कान, भोजन वाहिनी नलिकाओ, टासिल्स तथा पेट के ऊपरी आयाम का प्रतिनिधित्व करता है। वोकल कार्ड, सेरेबेलियम, मस्तिष्क तथा दृष्टि प्रणाली पर भी रोगो का कुप्रभाव झलकने लगेगा।

अंक पन्द्रहः यह अक भी स्वास्थ्य के लिए बहुत अनुकूल अक नही है, क्योकि यह अक शीत–गर्म अथवा अति ठड के कारण कुपथ्यजन्य रोग और उसके बाद बचपन से खराब स्वास्थ्य को बनाए रखने की प्रवृत्ति से खतरनाक स्टेज तक स्वास्थ्य विकार पैदा कर सकते है। इनके ढीले–ढालेपन के कारण या तो असतुलन के कारण गिरने का भय अथवा किसी भी वस्तु के

इनके ऊपर गिरने से होने वाली शरीरिक क्षति भी विचारणीय है। इस कारण इनकी हड्डी का टूट जाना–विस्थापित हो जाना, या पैरो की विकृति से लगडापन भी जन्म ले सकता है। इनके घुटने बहुत ही नाजुक होते है तथा वातजन्य रोगों से कभी भी प्रभावित हो सकते हैं। इन सबके बावजूद इस अक की पकड जीवन पर बहुत दृढ होती है और दीर्घायु योग स्वत· ही प्रबल हो जाता है। जीवन के उत्तरार्ध मे स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतना ज्यादा लाभकारी होगा।

अंक सोलहः यह अंक बहुत ही बलिष्ठ और पुष्ट शरीर का सूचक है और सामान्य स्वास्थ्य भी उत्तम कहा जा सकता है। परन्तु उस दशा मे बीमारी की आशका प्रबल रहती है जब दूर देशान्तरो की यात्रा का व्यवसाय हो, बुखार की अधिकता हो या शरीर में पित्त की मात्रा अधिक हो या फिर आवश्यक प्रवास किसी गर्म इलाके मे हो। कुछ–कुछ सभावना घाव और चोट आने, चेचक, खसरे से चेहरे पर दाग पड जाने अथवा मशीनरी–औजारो से कट जाने या दुर्घटना से पैरो के अपंग हो जाने की भी सम्भावना रहती है। तेज धार के हथियार, अग्नि पदार्थ, गैस एवं बिजली के उपकरणो के सचालन मे विशेष सावधानी की जरूरत तो है ही, साथ ही वाहन चलाने के जोखिम से भी अधिक से अधिक दूर ही रहना उचित होगा। यह अक पुरुषवाचक है, अत महिलाओं के मुकाबले पुरुषो के लिए स्वास्थ्य प्रदायक एव श्रेष्ठ होता है।

अंक सत्रहः सामान्य तौर पर एक सुन्दर सुदृढ और बलवान शरीर तथा निरोगी स्वास्थ्य का परिचायक है। परन्तु अत्यधिक दौड–भाग या मानसिक अथवा शारीरिक परिश्रम की अधिकता से स्वास्थ्य कभी भी प्रभावित हो सकता है तथा असुविधा हो सकती है। यह अंक हाथो, भुजाओं, कंधो, फेफडो, सास लेने की प्रक्रिया और रक्त संचार पर असर डालता है। साथ ही यह पीठ की हड्डी से लेकर तमाम प्रमुख हड्डियो के ढाचे को भी नियत्रित करता है। इनको अगर कभी इन अगो पर बीमारी की शिकायत हो तो निश्चय ही अस्थमा, हड्डी विकार, केसर, टी०बी०, ब्रौन्काइटिस, प्लूरेसी अथवा फेफडो मे पानी भर जाने की आशका रहेगी। मानसिक दबाव ज्यादा होने से स्नायु विकार, पागलपन, सनक एव एकागीपन का रोग भी ग्रस्त

रखेगा। दुर्घटना के दौरान शरीर के ऊपरी भाग पर जल्दी ही प्रभाव पड सकता है। अधिक मानसिक क्लेश, उग्रता, क्रोध, अधिक पढना–लिखना या चौबीसो घटे सोच–विचार मे बैठे रहना इनके स्वास्थ्य के लिए कदापि हितकर नही है। जीवन के निजी क्षेत्रो मे सहज रूप से रहना तथा चिन्ताहीन होकर काम करना ही इनके वास्ते अच्छे स्वास्थ्य के द्वार खालने जैसा है। अथवा एक विकारग्रस्त जीवन का भारी बोझ लेकर चलना भी इस अक की नियति हो जाती है।

अंक अट्ठारहः बहुत अच्छे और बलवान शरीर का प्रतीक नही माना जाता है। इसके अन्दर आस–पास की विपरीत स्थितियों के प्रभाव को ग्रहण करने की तीव्र प्रवृत्ति होती है। खान–पान की गंदगी का कुप्रभाव भी यह अंक जल्दी ग्रहण कर लेता है। घरेलू चिन्ताओं के कारण अथवा गलत आहार के कारण या फिर पेट और अमाशय के विकार, कब्ज आदि के कारण स्वास्थ्य खराब होता ही रहता है। इसके साथ यह भी सत्य है कि जीवन की ग्राह्यता पर इस अक की पकड बहुत गहरी होती है। फलतः स्वास्थ्य चिन्ता के बावजूद भी जीवन काल लम्बा ही रहता है। यह अक छाती के रिक्त भाग, वक्ष, कमर, पेडू और नाभिकीय अंगो पर प्रभावी रहता है। पॅसली–अस्थि समूह और सहायक अस्थियो और बारीक धमनियो पर भी इस अक का प्रभाव माना जाता है। इन कारणो से इसको हाजमे की शिकायत, शरीर के उपरोक्त अगो मे शिथिलता, दाग अथवा ग्रथि विषमता का सदेह बना ही रहता है। मुख्यतः गैस, अफारा, डकार और वायु गुल्म का रोग तथा खासी–जुकाम तथा पेट दर्द एवं छाती मे दर्द की शिकायत आम तौर पर होती है। रक्त स्राव एव धातु विकार जन्य रोग भी संभव हैं।

अंक उन्नीस की देन है एक बलिष्ठ, सुगठित और अनुपात मे ढला शरीर जो कि इस अंक के बलवान राशिगत प्रभाव का सूचक है। आमतौर पर स्वास्थ्य भी उत्तम और निरापद होता है। अगर किसी कारण कभी अस्वस्थता या असुविधाजनक स्वास्थ्य चले भी तो थोडी–सी सावधानी से निजात पाई जा सकती है। यह अंक रीढ और पीठ का नियंत्रण संभालता है। हृदय और रक्त भण्डार भी इसी अंक के नियंत्रण मे रहते है। कभी कुछ हरारत, बुखार या ताप क्रम का उतार चढाव होता है तो

उपरोक्त अगो मे दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। अनावश्यक उत्तेजना तथा अधिक दौड–भाग की प्रतिक्रिया हृदय पर पहले होती है। अत समय–समय पर यथोचित स्वास्थ्य सरक्षण के लिये मध्यवर्ती एव पृष्ठ भाग के शरीर पर मर्दन मालिश करते रहने से स्वास्थ्य मे बिखराव नही आयेगा। अच्छा स्वास्थ्य भी दीर्घकाल तक आपके साथ चलेगा।

अंक बीस को शारीरिक प्रक्रियाओ के संचालन एव खून के दौरे के अननुकूलित हो जाने के कारण बीमारी की आशका बनी ही रहती है। व्यक्तिगत स्वच्छता चाहे शरीर की हो या मन की, इन्हे स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। नियमानुसार इन्हे अच्छे आहार–विहार और विचारो से ज्यादा पेट और आमाशय की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है जोकि साफ–सुथरे, ताजे और पौष्टिक तत्वो से भरे भोजन से ही सभव है। शरीर के प्रजनन कोष्टको खासकर–महिलाओ के वक्ष और समवर्ती भागो पर यह अक प्रभावी होता है। अत असावधानी कभी–कभी रोग का कारण बन सकती है। इन्ही कारणो से अगर भोजन एव पेय पदार्थ अशुद्ध–मादक तथा गर्म हों तो महिलाओ को गर्भाशय जन्य रोग, मासिक धर्म सम्बन्धी रोग, पुरुषो को बवासीर अथवा मृगी, अपस्मार तथा हार्निया और पथरी आदि मे से कभी भी कुछ भी हो सकता है। यह अक जीवन के उत्तरार्ध म अधिक अनुकूल सिद्ध होता है तथा दीर्घायु सूचक भी माना गया है।

अंक इक्कीस भी एक शक्तिशाली अक है जो आमतौर पर बहुत ही अच्छे स्वास्थ्य और शरीर–सुख का प्रदाता है। यह रक्त और जिगर पर नियत्रण रखता है। ऐसे काम और उपक्रम जो शरीर के लिए थकावट पैदा करे या रक्त–दोष एवं दिल के लिए परेशानी करें, उनसे बचाव रखना परमावश्यक है। कभी–कभी यह अंक किसी भी रक्त–सचार प्रकोष्ठ के असतुलन का रोगी हो जाता है। परन्तु युवावस्था में यथोचित व्यायाम, खेल–कूद और समय पर उठना–सोना और रक्त–शोधक वस्तुओ का सेवन करना हितकर होता है। यही वजह है कि उम्र के 60 साल तक इनमे यौवन का संचार रहता है। 65 साल के बाद प्राकृतिक अवरोह आये तो फिर परहेज और पथ्य जरूरी है। अच्छे, रौबदार एव

प्रभावदायी स्वास्थ्य के बावजूद सासारिक विकारो से बचना जरूरी होगा ।

अंक बाईस यह इगित करता है कि जिस ऋतु मे आपका जन्म हुआ है उस मौसम में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना आवश्यक है । अगर बसंत ऋतु का जन्म हो तो इस मौसम मे आपको सदैव ही दौड–भाग, मानसिक तनाव एवं अन्य प्रकार के शारीरिक परिश्रम से बचना चाहिए । अगर आप गर्मी के मौसम में जन्मे है तो व्यावहारिक उत्तेजना और आवेश तथा उग्रता पर नियंत्रण रखना जरूरी है । यदि आप पतझड मौसम मे जन्मे है तो दूसरो के बहकावे मे आकर व्यसनो मे लिप्त न होवे तथा अधिक यौन–क्रिया भी घातक है । अगर आप प्रसन्नचित्त रहेगे तो आपका बाहरी और अन्दरूनी स्वास्थ्य भी अच्छा ही रहेगा । अगर असतोष तथा चिन्ताओ से ग्रस्त है तो बीमारिया जल्दी ही लग जायेगी । सर्दी के मौसम मे जन्मे व्यक्तियो को ठड से बचाव करना चाहिए । हॉ, जीवन के पूर्वार्ध मे आपका स्वास्थ्य नाजुक रहेगा । फिर भी उत्तरार्ध में शनै–शनै सुधार की ओर अग्रसर होगा तथा लम्बी उम्र का उपहार आपके जीवन को मिलेगा ।

रंग और अंक

जिस प्रकार अक 1 से अक 22 तक प्रत्येक अक का प्रभाव इसके जातकों के चरित्र, भाग्य, धन दाम्पत्य जीवन तथा स्वास्थ्य पर पडता है उसी प्रकार अंको का नियत्रण रगो पर भी होता है। आपके अकों का व्यक्तिगत रग अलग रूप मे आपके व्यक्तित्व, रहन–सहन एव पहनावे से झलक जाता है। शनि प्रधान व्यक्तियो को काला रग अधिक भाता है, तो मगल प्रधान व्यक्ति सिन्दूरी रंग को पसन्द करते है। चन्द्रमा का सफेद तो शुक्र का नीला, बुध का हरा और गुरू का रंग नारगी या पीला होता है। आपके अग्रेजी वर्णाक्षर के नाम से अंक और जन्म तिथि के अंको का सामजस्य करके आप अपने भाग्योदय का रग धारण कर लाभान्वित हो सकते है। इन रगो के रत्न भी आप धारण कर सकते है।

प्राकृतिक रूप से महिलाओ के लिए यह बहुत सहज होता है कि वे अपने व्यक्तिगत अक के अनुरूप रग का पहनावा–परिधान धारण कर सकती है। परन्तु पुरुष भी अपने भाग्याक के रग से सज्जित वस्त्र धारण कर सकते है। अपने शुभ रग का रूमाल, टाई मोजा, चोला या सूट कुछ भी समय–समय पर धारण किया जा सकता है।

अंक एक प्रमुख रूप से पीले रग का सूचक है। इस रग को धारण करने से शक्ति, पूर्वाभास तथा अन्तर्दृष्टि एव विश्वास भावना का विकास होता है।

अंक दो का अपना वर्ण गहरा नीला माना गया है। जिसमे मध्य मे सफेद पट्टिया चिपकी होती है। इसको धारण करने से गहन अध्ययन क्षमता का विकास होता है। ऐसे व्यक्ति अनुसंधान, अन्वेषण तथा रहस्यमय विज्ञानो और विद्याओ के ज्ञाता हो सकते है।

अंक तीन–हल्के नीले रग का प्रतीक अक है। इस रग को धारण करने से व्यक्ति युक्तिसंगत बातो को अपनाते हुए निर्णय करने की अद्भुत क्षमता प्राप्त कर लेता है। उसमे अच्छाई

तथा न्यायप्रियता होगी । सामाजिक क्षेत्र मे सफल लोगो का यह प्रिय रग है ।

अंक चार गहरे लाल रग को इगित करता है । यद्यपि इस रग को धारण करते हुए विशेष सावधानी आवश्यक है, क्योकि यह रग उत्तेजना, गर्म मिजाजी और बहादुरी एव जोखिम के कारनामो से सम्बद्ध अक है । फिर भी शुभ मागलिक समय मे इस रग का धारण करना अच्छा माना गया है । यह अंक हिम्मत, साहस, लडाकूपन, युद्ध व खतरे का अक भी है । जब तक तर्क एव विवेक शक्ति निहित है इस रंग को धारण करना प्ररेक भी होता है । मनोवाछित कार्यो के लक्ष्य को पूरा करने मे, अपनी अलग छवि बनाने मे, आकर्षण पैदा करने में, इच्छाओ तथा महत्वाकाक्षो की पूर्ति एव प्रदर्शन के दौरान यह रग निहायत लाभकारी प्रभाव देता है ।

अंक पांच का रंग बैगनी है जिसको उसी प्रकार के कपडे पहने रहने के साथ–साथ उसी रग के रत्न धारण करने से अद्भुत प्रेरणा, सत्यप्रियता, ज्ञान एव शक्ति का स्रोत उमडने लगता है । धार्मिक और दार्शनिक भावना का उदय होता है । आत्मा के लिए कल्याण कारक विचार तथा भाग्योदय की तरगो से परिपूर्ण यह रंग वास्तव मे सर्वोत्तम फलदायक होता है ।

अंक छः नीले रग का स्वामी है । इसमे हल्के से लेकर गहरे रंगो का सामंजस्य रहता है । यह रग प्रकृति के आशावादी क्षेत्र का प्रतिनिधि है जिसमे स्नेह, लगाव, प्रेम, विवाह तथा साझेदारी का भावात्मक पहलू भी छिपा हुआ है ।

अंक सात हल्के पीले और ब्राउन रग का मेल अपने मे समेटे हुए रहता है । इसको धारण करने से जहा क्रियात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है, वहा विचारो और योजनाओ मे गतिशीलता और कार्यान्वयन करने की शक्ति को भी बल मिलता है ।

अंक आठ भूरे रंग का स्वामी है । यह रग जहां सगठनात्मक विचारो की ओर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता को जागृत करता है वही व्यापार और आर्थिक हितो की सपुष्टि और कार्यान्वयन करने की वृत्ति को स्पष्ट करता है ।

अंक नौ को गहरे ब्राउन रग या फिर गहरे नीले रग का स्वामी माना गया है। इसके बीच मे सफेद अथवा हल्के पीले रग का सामंजस्य आशावादी जीवन को प्रश्रय देता है। ज्ञान–विवेक की अभिलाषा, लिखने–पढने की क्षमता अथवा अनुसधान आदि को लिपिबद्ध करने मे यह रग अधिक क्रियाशीलता दिखाता है।

अंक दस सभी प्रकार के मिश्रित अथवा चैक वर्गाकार खानेदार रगो का स्वामी है। इसमे काले, सफेद, ब्राउन और सफेद का मेल ज्यादा सही बैठता है। इस प्रकार के रगो को धारण करने से जहा विचारो की मौलिकता पर अधिकार रहता है वहा विभिन्न समस्याओं के सामने निर्णय लेने की क्षमताओ को भी उजागर करता है।

अंक ग्यारह का प्रतिनिधि बैगनी अथवा रक्ताभ वर्ण है। इनके धारण करने से मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है।

अंक बारह चमकदार सफेद का प्रतिनिधि है। इसके धारण करने से पवित्र विचारो की अभिरुचि और परिवर्तनशील परिस्थितियो से जूझने की शक्ति का विकास होता है।

अंक तेरह को हल्के लाल या गुलाबी रग का स्वामी कहना चाहिए। यह व्यक्ति की कार्यशीलता को बढाने के अलावा उसमे फुर्ती, साहस एव देशभक्ति की भावना को विकसित करता है। खेल–कूद तथा सुरक्षा सेना में यह रग ज्यादा शोभनीय और सफल सिद्ध होता है।

अंक चौदह में नीले रंग के गहरे शेड अधिक शोभनीय होते है। इन रगो के धारण करने से व्यक्ति में धैर्य, शक्ति और आलोचना एव अपनी बुराई को सुनने और उससे सबक लेने की शक्ति का विकास होता है।

अंकपन्द्रह को काले और इससे मिलते–जुलते गहरे रगो का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। विशेष प्रकार के समारोहो मे यह रग अधिक प्रेरणाप्रद और अनुकरणीय विशेषताओ वाला होता है।

अंक सोलह पुनः लाल रंग के स्वामित्व वाला रंग है। यह रग बहुत ही नाजुक और नाटकीय परिस्थितियो मे सहायक होता है। अभिनय करना और फिल्म–टी०वी० के क्षेत्र में जाने वालों को यह रग विशेष रूप से माफिक आता है।

अंक सत्रह हरे और पीले रग की मिश्रित आभा को ग्रहण करने मे शोभनीय होता है। किसी भी परिस्थिति को ग्रहण करने तथा यात्रा, परदेशगमन तथा एकान्त भ्रमण मे यह अनुकूल साबित होता है।

अंक अट्ठारह का सम्पूर्ण हरे और हल्के हरित आभा वाले वर्ण पर अधिकार है। यह मातृत्व, स्नेह और प्रेरणाप्रद रग है। यह गृह सचालन तथा घरेलू जीवन मे सफलता का सूचक रग है।

अंक उन्नीस सुनहरे और तेज सूर्य के जैसे रग का प्रतिनिधि है। यह अंक राज्याधिकार, स्वामित्व और अच्छी शारीरिक गठन एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का द्योतक है। अधिकार, शक्ति एव मान–सम्मान का सूचक भी यह रग माना जाता है।

अंक बीस सफेद और रजत वर्ण का सूचक है। यह रंग सभा समारोहों और सार्वजनिक उत्सवो मे सम्पन्नता और सम्मान का सूचक है।

अंक इक्कीस नारगी रग का सूचक है। यह रंग कलात्मक और वैरागीपन तथा आध्यात्मिक ज्ञान तथा ललित कलाओं मे अभिरुचि सम्पन्न व्यक्तियो का रग है।

अंक बाईस यह नीले और हरे रग की मिश्रित आभा का रग है। यह रग जहा घरेलू जीवन को व्यवस्थित करता है वहां सामाजिक और व्यापारिक कार्यों मे सफलता भी देता है। जीवन में सन्तुलन का प्रतीक भी यह रंग है।

VIII
प्रकरण आठ

शुभ मुहूर्त और लाभकारी समय का चुनाव

1. शुभ मुहूर्त का चुनाव

2. व्यापार आरंभ करने का मुहूर्त

3. मकान बदलने/बनवाने आदि के मुहूर्त ।

इस प्रकरण मे आपको बतायेगे कि 24 घटे के अन्तर्गत, किस वार को कौन सा समय शुभ घडी कहलाती है । भारतीय ज्योतिष के अनुपालनकर्ता विवाह आदि के समय शुभ लग्न मे विवाह आदि सम्पन्न कराते है । परन्तु यहा दी गई विधि ज्योतिष के नियमो से तो सम्बद्ध है पर जन्म कुडली के बिना भी इस विधि का प्रयोग किया जा सकता है । हां, थोडी–सी सावधानी और सतर्कता अध्ययन के दौरान अवश्य बरतनी पडती है । शुभ घडी का चुनाव वैसे तो देश–काल और परिस्थिति के अनुसार करना पडता है, परन्तु इनमे भी कुछ सूक्ष्मता से यदि अशुभ समय को टाल दिया जाये तो किसी भी कार्य का श्रीगणेश करना सुखद और सफलता सूचक होता है । आपने भी यह सुना होगा कि जब किसी का कोई कार्य बिगड जाये, या कोई दुखद घटना कार्य के दौरान हो जाये तो सामान्यत यही कहा जाता है कि किस मुहूर्त में यह काम हाथ मे लिया ? या क्या मुहूर्त निकालकर नही चले ? शुभ घडी ज्ञात करने की इस विधि को पहले भारतीय ज्योतिष विधि के अनुसार स्पष्ट करेंगे । बाद मे पाश्चात्य विधि से ।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार शुभ या अनुकूल समय (घटे आदि में) का ज्ञान होरा–चक्र से किया जाता है । यह गणना प्रत्येक स्थान पर वहां के स्थानीय सूर्योदय को ज्ञात करके की जाती है । सूर्योदय के बाद उस दिन की अनुकूल और प्रतिकूल होरा का विचार किया जाता है । प्रत्येक एक घंटे के समय को

एक "ग्रह" की होरा मान लिया जाता है। उस दिन जो वार होगा, सूर्योदय के उपरान्त पहले एक घंटे की होरा उस वार से सम्बद्ध ग्रह की होगी। जैसे– सोमवार को दिल्ली मे सूर्योदय प्रात 6-18 पर होता है। अत इस दिन प्रात 6 बजकर 18 मिनट से 7 बजकर 17 मिनट तक शनि की। इसके बाद क्रमश एक–एक घटे के अन्तराल मे सात ग्रहो की होरा पडती जायेगी। अगले दिन ठीक सूर्योदय के समय मगल की होरा आयेगी और उस दिन वार भी मगल होगा। प्रत्येक घटे मे होरा के नियत्रण मे सातो ग्रहो का प्रभाव जिस क्रम से पडता है वह इस प्रकार है– (1) सूर्य की होरा, (2) शुक्र की होरा, (3) बुध की होरा, (4)चन्द्रमा की होरा, (5) शनि की होरा, (6) बृहस्पति की होरा, (7) मगल की होरा।

नीचे दी गई तालिका मे सप्ताह के सातो दिन प्रातः से अगले 24 घटे तक किन–किन ग्रहो की होरा पडती है, यह दर्शाया गया है।

सप्ताह भर की होरा तालिका

होरा––	1	2	3	4	5	6	7
वार	8	9	10	11	12	13	14
स्वामी	15	16	17	18	19	20	21
ग्रह	22	23	24	-	-	-	-
रविवार (सूर्य)	सू०	शु०	बु०	चं०	श०	बृ०	म०
सोमवार (चन्द्र)	च०	श०	वृ०	म०	सू०	शु०	बु०
मगलवार(मगल)	म०	सू०	शु०	बु०	चं०	श०	बृ०
बुधवार (बुध)	बु०	च०	श०	वृ०	म०	सू०	शु०
गुरुवार(बृहस्पति)	बृ०	म०	सू०	शु०	बु०	च०	श०
शुक्रवार(शुक्र)	शु०	बु०	च०	श०	बृ०	म०	सू०
शनिवार (शनि)	श०	बृ०	म०	सू०	शु०	बु०	च०

उदाहरण

मगलवार दिनांक 6 अप्रैल 1982 को दिल्ली में एक व्यक्ति ने पूछा– "अगले 24 घटो मे मुझे प्रत्येक घटे पर किस प्रकार की होराये भुगतनी होगी ? कृपया बताये। प्रात· दस बजे मुझे अपने साहब से मिलना है, क्या मेरा विशेष प्रयोजन इस होरा मे हल हो जायेगा ?" व्यक्ति ने अपना राशि नाम 'अनूप सिह' बताया।

दिल्ली सूर्योदय प्रात

6-07	से	7-06	तक पहली होरा– मगल की
7-07	से	8-06	तक दूसरी होरा– सूर्य की
8-07	से	9-06	तक तीसरी होरा– शुक्र की
9-07	से	10-6	तक चौथी होरा– बुध की
10-07	से	11-06	तक पांचवी होरा– चंद्र की
11-07	से	12-06	तक छठी होरा– शनि की

दोपहर बाद

12-07	से	13-06	तक सातवी होरा– बृ० की
13-07	से	14-06	तक आठवी होरा– मगल की
14-07	से	15-06	तक नौवीं होरा– सूर्य की
15-07	से	16-06	तक दसवी होरा– शुक्र की
16-07	से	17-06	तक ग्यारहवी होरा– बुध की
17-07	से	18-06	तक बारहवी होरा– चद्र की
18-07	से	19-06	तक तेरहवीं होरा– शनि की
19-07	से	20-06	तक चौदहवीं होरा– बृह० की
20-07	से	21-06	तक पन्द्रहवीं होरा– मगल की
21-07	से	22-06	तक सोलहवी होरा– सूर्य की
22-07	से	23-06	तक सत्रहवी होरा– शुक्र की

अर्धरात्रि

23-07	से	00-06	तक अट्ठारहवीं होरा– बुध की
00-07	से	01-06	तक उन्नीसवी होरा– चंद्र की
01-07	से	02-06	तक बीसवी होरा– शनि की

02-07 से 03-06 तक इक्कीसवी होरा– बृह० की
03-07 से 04-06 तक बाइसवी होरा– मगल की
04-07 से 05-06 तक तेइसवी होरा– सूर्य की
सूर्योदय (बुध)
05-07 से 06-06 तक चौबीसवी होरा– शुक्र की

अगले दिन सूर्योदय के समय बुध की होरा आती है और उस दिन वार भी बुध ही निकलता है। तत्पश्चात् अगली होरायें उपरोक्त विधि के अनुसार निकलती जायेगी।

दिये गये प्रश्न के उदाहरण मे पूछी गई पहली बात का तो उत्तर मिल गया कि अगले 24 घंटो में मगलवार के दिन/रात्रि को 24 घंटे मे ग्रहानुसार होराओ का उपरोक्त क्रम रहेगा और प्रात 10 बजे बुध की होरा है। परन्तु यह 10 बजे के समय चल रही होरा 'अनूप सिह' के लिये कैसी सिद्ध होगी, इसका विचार सारणी से किया जायेगा। सारणी का उपयोग जन्म राशि के अनुसार करें। यदि जन्म राशि ज्ञात न हो तो नाम राशि के अनुसार अपनी राशि के लिए अनुकूल और प्रतिकूल होराये देखे।

नाम का प्रथम अक्षर		राशि	शुभ होरा अनुकूल घटा	साधारण होरा न लाभ न हानि	अशुभ होरा प्रतिकूल घंटा
1	चू चे चो ल ली ले लो अ हा	मेष	सूर्य चन्द्र मंगल वृहस्पति	शुक्र शनि	बुध
2	इ उ ए ओ व वी बू वे वो	वृष	बुध शुक्र शनि	वृहस्पति	सूर्य चंद्र मगल
3	का की कू घ उ छ के को हा	मिथुन	सूर्य बुध शुक्र	वृहस्पति शनि	चद्रमा
4.	ही हू हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	सूर्य बुध चन्द्र	मंगल, बृह० शुक्र शनि	x
5.	मा मी मू मे मो ट टी टू टे	सिंह	सूर्य चन्द्र मंगल वृहस्पति	बुध	शुक्रशनि

6 टो पा पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या	सूर्य	बुध	शुक्र	मगल शनि बृहस्पति	चन्द्रमा
7 रा री रू रे रो ता ती तू ते	तुला	बुध	शुक्र	शनि	मंगल वृहस्पति	चन्द्रसूर्य
8 तो ना नी न ने या यी यू	वृश्चिक	सूर्य	चन्द्र	शनि मगल	बृह०	बुध
9 ये यो भा भी भू धा फा ढा भे	धनु	सूर्य	चन्द्र	मंगल शनि	बृह०	बुधशुक्र
10 भो जा जी खी खू खे खो गा की	मकर	बुध	शुक्र	शनि	बृह०	सूर्य चन्द्र मगल
11. गू गे गो सा सी सू से सो द	कुभ	बुध	शुक्र	शनि	बृह०	सूर्य चद्र मगल
12. दी दू घ झ स दे दो चा ची	मीन	सूर्य	चन्द्र	मंगल शनि वृह०		बुध शुक्र

अब ज्ञात हो गया है कि अनूप सिंह को मंगलवार प्रात 10-00 बजे बुध की होरा है। उपरोक्त सारणी से यह भी ज्ञात हुआ कि अनूप सिंह (मेष राशि) को बुध की होरा प्रतिकूल सिद्ध होगी। अत· इसके बजाय यदि सूर्य या चन्द्र की होरा हो तो अनूप सिह के लिए मुलाकात करना शुभ रहेगा।

विभिन्न होराओ में कौन कर्म ठीक रहेगा ·–

सूर्य की होरा में– पूजा–पाठ, व्यायाम, योग, बीजारोपण तथा अन्य दैनिक कार्य, स्थायी प्रकृति के कार्य, सरकारी मामले, अन्न संग्रह।

शुक्र की होरा में– आमोद–प्रमोद, स्त्री समागम, स्त्रियो से मिलना तथा मूल्यवान वस्त्र आभूषण का क्रय–विक्रय, सवारी, वाहन, वायुयान, बाग की सैर तथा मनोरंजन कर्म।

बुध की होरा में– हास्य प्रसग, लेखन, व्यापारिक गतिविधि, स्वर साधना, काव्य लेखन, पत्र लेखन, लेखा–जोखा तथा नये कार्य का आंरभ, मित्र चर्चा ।

चन्द्रमा की होरा में– पारिवारिक तथा घरेलू मामले । मानसिक उपचार, यात्रा, जल या द्रव सम्बन्धी कार्य, राजनीति, वस्तु सग्रह तथा नये व्यवसाय की योजना एव स्त्री–प्रसग आदि ।

शनि की होरा में– नौकरी–चाकरी, पुरानी वस्तु को बेचना, पशु, लोहा, पत्थर, पहाड, जगल आदि कारोबार, बुजुर्गों से सम्बन्धित मामले, नीव की खुदाई, खेत जोतना तथा दान आदि देना कुछ ज्योतिषियो के अनुसार चौर कर्म, षडयंत्र तथा कुकर्म आदि के लिए भी शनि की होरा उपयुक्त मानी गई है ।

बृहस्पति की होरा में– गुरुजनो–अधिकारियों से मिलना । धन–पूजी का निवेश, बैक मे खाता खोलना, धन जमा करना, पुस्तक खरीदना, शिक्षा–अध्ययन, निर्णय लेना, यज्ञ, हवन, विवाह, नामकरण तथा सभी प्रकार के वैदिक कर्म तथा मैत्री सम्बन्ध ।

मंगल की होरा में– दवाई खाना, ऋण चुकाना, शठ कर्म, अग्नि कर्म, मुकदमा दायर करना, वाद–विवाद, संघर्ष तथा भूमि, जायदाद तथा शुत्रुता सम्बन्धी मामलों के लिए मगल की होरा अनुकूल कही गई है । मशीन को ठीक करवाने तथा मरम्मत आदि का कार्य भी मंगल की होरा में सिद्ध होता है ।

पाश्चात्य मतानुसार घंटों का चुनावः

पाश्चात्य अंक ज्योतिष में शुभ–अशुभ घडी का चुनाव करना बहुत विवादास्पद है। अलग–अलग विद्वानो ने अलग–अलग मत इस सम्बन्ध में दिये हैं। परन्तु "सेफारियल" की पुस्तक "द कबाला आफ नम्बर्स" में जो सर्व सम्मत विधि दी है उसे यहां पर दिया जा रहा है।

1. प्रश्नकर्ता जिस स्थान पर हो वहां के स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार दिन में 12 से 1 बजे को पहला घंटा मानें, 1 से 2 को दूसरा, तीन बजे तीसरा। इस प्रकार अगले 24 घंटों को निर्धारित कर जिस भी घंटे को शुभ–अशुभ कार्य हेतु चुनना हो

उसका सामजस्य अपने मूलाक, भाग्यांक एव सयुक्तांक से कर ले– अधिक से अधिक अनुकूल घटे को निर्णय के अनुसार शुभ कार्य के लिये निश्चित करे। (लेकिन इन घंटो पर किस कार्य–विशेष के लिए शुभाशुभ का निर्णय दिया जाये, कौन सा काम किया या नहीं किया जाये, इसका पाश्चात्य अंक शास्त्र में कोई जबाव नहीं है)।

2 नामाक्षरो का संयुक्तांक, भाग्यांक या मूलांक लेकर उससे सप्ताह के दिनो को जोडें। (रविवार 1, सोमवार 2, के क्रम में तदुपरान्त घटे की संख्या को उसमे जोडे। जो अंक प्राप्त होता है, उसके अनुसार शुभाशुभ का निर्णय करें।

3 सूर्योदय से आरभ करके पहले घटे का 1, दूसरे का 2, तीसरे 3, चौथे का चार, इसी क्रम से सभी घण्टो के अक मानकर, निर्धारित घटे का मिलान अपने नामाक अथवा भाग्याक से करे।

4 दोपहर बाद के 1 बजे तक पहला घटा, दो बजे तक दूसरा घंटा, इसी क्रम से सभी घंटो के अंक निर्धारित करके, उस अक का समन्वय अपने भाग्यांक अथवा नामांक से करे।

विशेष ध्यान देने योग्य.

1 उपरोक्त पाश्चात्य मत काफी अवैज्ञानिक एवं अव्यावहारिक है। भारतीय ज्योतिष मे मुहूर्त शास्त्र अपने आप मे एक परिपूर्ण विषय है। अत· शुभ कार्य के लिए मुहूर्त शास्त्र के अनुसार विभिन्न वार आदि का विश्लेषण करते हुए लग्न, होरा तथा नवांश का विचार करके शुभ मुहूर्त निकालना ठीक रहेगा। भारत के सभी प्रान्तों मे प्रचलित "चौघड़िया" विचार भी मुहूर्त चुनाव के लिए विशेष विधि है। चौघडिया दिन रात की सारणी प्रायः सभी पंचांगो में दी जाती है।

2. इसके साथ ही राशि का घात चक्र देखना भी शुभ होता है। प्रत्येक राशि का घात चक्र भी प्रतिष्ठित पचांगों में दिया हुआ रहता है।

3. मकान बदलने, नये वस्त्राभूषण खरीदने, व्यापार आरभ करने से पूर्व राशि और नक्षत्र विचार के साथ ही ग्रह की शुभ दशा, शुद्ध गोचर प्रभाव, भद्रा राहु काल आदि अन्य परिस्थितियो का सावधानीपूर्वक चुनाव करना ही ज्योतिष से लाभ उठाना है।

अत· श्रद्धालु जन विद्वान ज्योतिषी से ही विशेष मुहूर्तों के विषय में निर्णय करवायें । होरा शास्त्र में शुभ लग्न, शुभ तिथि एवं वार आदि को शुभ कार्य हेतु विचारने की विस्तृत चर्चा है ।

IX
प्रकरण नौ

लाटरी–शेयर–घुड़दौड़ प्रकरण

आज बहुधा लाटरी, शेयर अथवा घुडदौड आदि से धन कमाने की होड बढती जा रही है। कम हो ज्यादा, सभी लोग इन चक्करों मे कभी न कभी और कही न कही अवश्य फस जाते है। वैसे तो यह प्रवृत्ति जुए की भावना को प्रेरित करती है। किसी भाग्यवान् को ही इन तरीकों से लाभ हो सकता है। यहा तक कि अक–विज्ञान का लाभ लोग सट्टे या जुए के लिए भी उठाना चाहते है। परन्तु इन सबका उद्देश्य व्यक्ति को अवाछित कार्यो मे अभिप्रेरित करना है।

लाटरी का प्रचलन आजकल आम हो गया है। एक रुपये से लेकर 5 रुपये तक की टिकटो से लाखो रुपये के इनाम जीतने के विज्ञापन रेडियो–टी०वी० तथा समाचार पत्रो में आये दिन देखने–सुनने को मिलते है। बाजारो में हर कोने पर आपको लाटरी बेचने वाले दिखाई देगे। परन्तु लाटरी से धन मिलने का सौभाग्य भी लाखो–करोडो में से किसी–किसी भाग्यवान् को ही प्राप्त होता है। यहां पर यह भी स्पष्ट कर दें कि ऐसी कोई विधि नहीं है जिसमें लाखो की लाटरी का भाग्यशाली टिकट नम्बर पहले से ज्ञात हो सके। परन्तु अल्प मात्रा में लाटरी में धन–लाभ के लिए अक–शास्त्र की सहायता ली जा सकती है।

पाठकों के अनुभव बढाने के लिए कुछ विधिया यहां पर दी जा रही हैं– यदि आप कभी कोई टिकट खरीदे तो इन सिद्धान्तो को ध्यान मे रखकर भाग्य की परीक्षा ले सकते है।

आपका "भाग्यशाली" अंक कौन सा है ?

आप अपनी जन्म तिथि से मूलांक, भाग्यांक ज्ञात करे तथा वर्णांक भी ज्ञात करे ले। यदि आपकी शुद्ध जन्म पत्री बनी है तो उससे अपने चन्द्र राशि का स्वामी, सूर्य राशि का स्वामी और भाग्येश ग्रह इन तीनो को ज्ञात कर इनके प्रतिनिधि अको को ज्ञात कर ले। अब आप यह निर्धारित करे कि उपरोक्त मूल अक–भाग्याक–वर्णांक–राशीश, तथा भाग्येश मे किस अक ने आपको अधिक प्रभावित किया है। अर्थात् किस अक की तारीखो मे आपके विगत जीवन की महत्वपूर्ण घटनाए घटी। इससे आपको यह निर्णय करने मे सरलता हो जायेगी कि आपके जीवन का भाग्यशाली नम्बर क्या है।

उदाहरणः

नाम– राज कुमार वर्मा (RAJ KUMAR VERMA)

जन्म तिथि– 14 अप्रैल, 1951 (शनिवार)

जन्म राशि– मिथुन, लग्न–वृष, सूर्य मेष

उपरोक्त व्यक्ति का (1) मूलाक 14 तारीख =5

(2) भाग्याक =14-4-1951=25=7

(3) वर्णांक RAJ KUMAR VERMA

2 1 1 2 6 7 1 2 6 5 2 7 1 =48=7

(4) राशीश का अंक = मिथुन =5

सूर्य राशि का अंक = मेष =9

(5) भाग्येश शनि =8

उपरोक्त अंकों का विश्लेषण "राज कुमार वर्मा" के जीवन की प्रमुख घटनाओं से किया।

(अ) शिक्षा पूरी की– 21 वर्ष की अवस्था में =2+1=3

(आ) रोजगार मिला– 23 वें वर्ष =2+3=5

(इ) पहला वेतन मिला– 3 सितम्बर 1973 =32=5

(ई) पदोन्नति हुई– 26 वे वर्ष =6+2=8
(उ) पदोन्नति की तिथि 16 जनवरी, 1977=3+2=5
(ऊ) विवाह हुआ– 14 मार्च 1977=3+2=5
(ए) पुत्र प्राप्ति हुई– 8-7-1979=4+1=5
(ऐ) मकान का नम्बर = 2+6+6=14=5

उपरोक्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि अक "5" का "राजकुमार वर्मा" के जीवन को प्रभावित करने में विशेष योगदान है। जीवन की प्रमुख घटनाएं अंक "5" से सम्बन्धित है। अत· राजकुमार वर्मा का भाग्यशाली अक है "5", जोकि उनका मूल अक और राशि का अक है।

यह बात भी विशेष उल्लेखनीय है कि किसी व्यक्ति को मूलांक तो किसी को सयुक्तांक या किसी को अपना वर्णांक अधिक फलदायी होता है। यह बात आश्चर्यजनक है कि जन्म राशि का अक मूलाक संयुक्ताक या वर्णांक मे ही एक होगा। इन सब मे जो अधिक प्रभावी अक है उस अक की या मित्र अक की लाटरी या शेयर पूजी को खरीदे अथवा छोडे। नम्बर पर यदि बाजी लगायें तो कार्यवाही करने के दिन वार और होरा का शुभ सम्बन्ध भी भाग्यशाली अंक से होना चाहिए। विभिन्न अंको की परस्पर मित्र–शत्रु तालिका पिछले प्रकरणो में दी जा चुकी है।

कौन से प्रदेश की लाटरी खरीदी जाय ?

भारत मे सरकारी लाटरी सर्वत्र उपलब्ध हो जाती है। लगभग सभी राज्य सरकारो द्वारा लाटरी के साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक ड्रा निकाले जाते है। राज्य सरकारो तथा केन्द्र शासित प्रदेशाों द्वारा संचालित लाटरी के अपने–अपने नाम है। जैसे– दिल्ली लाटरीज के "कामधेनु" "कल्पतरु", उत्तर प्रदेश की "जनता" या "धन लक्ष्मी" आदि। अब अंक विज्ञान की विधि के अनुसार निर्दिष्ट लाटरी का पूरा नाम ध्यानपूर्वक नोट कर लेना चाहिए कि वह किस रूप मे छपा है ? उसकी "ड्रा" की तिथि क्या है ? लाटरी के नामाक्षरों का मूलांक बना लेना परम आवश्यक है। साथ ही ड्रा होने की तिथि, मास, वार तथा सिरीज आदि को

भी नोट कर लेना चाहिए। यदि लाटरी का मूल अक खुलने की तिथि, तथा सीरीज का मूल अक टिकट नम्बर का मूल अंक आपके भाग्यशाली अंक के लिए उत्तम–मध्यम सिद्ध होता है तो लाटरी का कोई भी छोटा बडा इनाम आपके लिए भी निकल सकता है। परन्तु लाटरी खुलना, जैसे कि पहले भी कहा जा चुका है, भाग्य की बात है। आज तक हजारो भाग्यशाली विजेताओं ने कौन–सा गणित लगाकर टिकट खरीदा होगा। हां, अपने प्रिय अंको का अनुमान कुछ लोगों को प्रकृतिवश हो जाता है। यह भी एक अनुभव प्राप्त करने की बात है। नीचे कुछ प्रमुख राज्य लाट्रीज के मूल अक दिये जा रहे है।

कबाला–वर्णाक्षर–मान

				अक्षर	अक
1	DELHI LOTTERIES(18+34)=	52=(7)		A	1
2	KAMADHENU "		36 =(9)	B	2
3	KALPATARU "		28 =(1)	C	3
4	U. P. JANTA "		52 =(7)	D	4
5.	DHANA LAKSHMI		31 =(4)	E	5
6.	M P WEEKLY		60 =(6)	F	8
7.	PUNJAB STATE LOTTERY		66 =12(3)	G	3
8.	H. P STATE LOTTERY		56 =11(2)	H	5
9	HARYANA STATE LOTTERY		59 =14(5)	I	1
10	SIKKIM STATE LOTTERY		59 =14(5)	J	1
11	ROYAL BHOTAN LOTTERY		85 =13(4)	K	2
12	RAJASTHAN LOTTERY		79 =16(7)	L	3
13	GUJRAT STATE LOTTERY		35 =(8)	M	7
14	KERALA STATE LOTTERY		65 =(2)	N	5
15	W. B. STATE LOTTERY		88 =(7)	O	7
16	TRIPURA STATE LOTTERY		53 =(8)	P	8
17.	MAHARASHTR STATE LOTTERY		83 =11(2)	Q	1

18	KARNATAKA STATE LOTTERY	70	= (7)	R	2
19	TAMILNADU STATE LOTTERY	53	= (8)	S	3
				T	4
				U	6
				V	6
				W	6
				X	5
				Y	1
				Z	7

कबाला एव कीरो के मतानुसार

विशेष.– उपरोक्त राज्यो की लाटरियो की टिकिटे प्रत्येक लाटरी वाले के पास मिल जाती है। परन्तु प्रत्येक लाटरी के सम्पूर्ण नाम के मूल अक बनाने की बजाय यदि उनके प्रमुख उच्चरित शब्द का ही मूल अंक निकाला जाय तो उचित होगा। क्योंकि यदि कोई पूछे कि मुझे किस प्रान्त की लाटरी खरीदनी चाहिए ? तो लाटरी वाला यही कहता है कि 'परसो पंजाब खुल रहा हैं'। अमुक तारीख को 'हरियाणा' निकलेगी, परसो को 'कामधेनु' का ड्रा है। आज 'केरला' कल 'वेस्ट बगाल' अगले हफ्ते 'यू०पी०' चौथे दिन 'सिक्किम', 'भूटान' आदि।

अत· अक विद्या मे प्रमुख और प्रचलित शब्द का ही मूल्याकन किया जाता है। उपरोक्त सभी प्रान्तीय सरकारी लाटरियो का प्रचलित नाम से मूलाक इस प्रकार निकलता है। अगर कोई अन्य लाटरी का मूलांक निकालना हो तो साथ मे दी गई 'कीरो मतानुसार' सारणी का उपयोग किया जा सकता है। क्योकि यह पद्धति ही लाटरी या रेस के घोडो के नाम का ज्यादा सही मूल्याकन करती है।

1. कामधेनु =9	(2) कल्पतरु =1
3. यू०पी० जनता =7	(4) धनलक्ष्मी =4
5 एम०पी० वीकली =6	(6) पंजाब =5
7 सिक्किम =7	(8) रायल भूटान =1

9 राजस्थान =8 (10) गुर्जर लक्ष्मी =3

11 केरल =5 (12) वेस्ट बंगाल =1

इसी प्रकार अन्य प्रान्तीय लाटरियो का भी मूल अक बना ले ।

नोट:– प्रत्येक प्रान्तीय सरकार प्रति मास अपने यहा की लाटरी की टिकिटों को अलग–अलग ढग से छापती है । जिस तरह टिकट छपा हो, उसी तरह उसका मूल अंक निकालना चाहिये, या फिर लाटरी के प्रमुख सम्बोधन से मूल अंक निकालना चाहिए । अधिकतर प्रान्तीय लाटरिया प्रान्त के नाम से निकाली जाती है । अतः मात्र प्रान्त का ही मूलांक निकालना सिद्धान्तत मान्य है । अब प्रान्तीय लाटरी का जो भी मूल अक बने– व्यक्ति के भाग्यशाली अक के सम्बन्ध मे उसका निर्णय निम्न सारणी के अनुसार करना चाहिए ।

प्रत्येक अक का	शुभ एव उत्तम अंक	मित्र एव मध्यम अक
1 " "	1, 4,	2, 7,
2 " "	2, 4,	6, 8,
3 " "	3, 9,	6
4 " "	4, 1,	2, 7,
5 " "	5	3, 1,
6 " "	6	9, 3,
7 " "	7, 2,	5, 1,
8 " "	8	4, 7,
9 " "	9,3,	6

पूर्वोक्त उदाहरण मे राजकुमार वर्मा का भाग्यशाली अक "5" है । अत उन्हे, पजाब, केरल की लाटरी खरीदना उत्तम रहेगा तथा कल्पतरु(दिल्ली) वेस्ट बंगाल तथा गुर्ज्जर लक्ष्मी मध्यम रहेगा ।

टिकिट नम्बर कौन सा लें ?

टिकिट नम्बर ऐसा खरीदें जिसका कुल योग आपके भाग्यशाली अक से मेल खाये। जैसे रायल भूटान (1) का 139 वा ड्रा दिनाक 4-4-82 को निकलना है। इसकी ए सीरीज का टिकट नम्बर ए–591985=37=(1) अंक भाग्यशाली अंक 1 के लिए शुभ हो सकता है। परन्तु यही नम्बर अगर 5 या 7 अंक वाले जातक को प्राप्त हो तो उसके लिये मध्यम फलदायी है। क्योकि 1 अक के लिए 1 अंक के योग वाला टिकिट ही उत्तम फलदायी होगा। यदि आप चाहें तो अपने भाग्याक से सम्बन्धित अंक के लिए उसी अंक से समाप्त होने वाले अन्तिम दो शब्दो के योग वाले टिकट खरीद सकते हैं। जैसे भाग्य अंक 3 वाला व्यक्ति 485275 वाला टिकिट भी खरीद सकता है। क्योकि अन्तिम दो अंक 75 का योग =12 अर्थात् 3 बनता है।

कौन से महीने का टिकिट खरीदा जाये ?

प्रत्येक अंक के शुभ मास पहले ही निर्धारित किये जा चुके है। अकानुसार उनके शुभ मास इस प्रकार है:–

अक 1 को जनवरी, मार्च, मई, जुलाई तथा अक्टूबर।

अक 2 को फरवरी, अप्रैल, अगस्त तथा नवम्बर।

अंक 3 को मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी।

अक 4 को फरवरी, अप्रैल, अगस्त तथा अक्टूबर।

अक 5 को जनवरी, मार्च, जून तथा सितम्बर।

अक 6 को फरवरी, जून, सितम्बर तथा नवम्बर।

अंक 7 को मार्च, जुलाई तथा अक्टूबर।

अक 8 को जनवरी, फरवरी, मई तथा जुलाई।

अक 9 को अप्रैल, जून तथा नवम्बर।

किस तारीख को टिकटें ली जायें ?

प्रत्येक अंक के लिए उसकी शुभ तारीख पुस्तक के प्रथम प्रकरण में उद्धृत अक–निर्देशिका में दी जा चुकी है। पाठक वहा पर देखकर तारीखो का निर्णय करे। महत्वपूर्ण वार और तारीखो का उल्लेख यहा पर किया जा रहा है।

अक 1 के लिए– रविवार, बुधवार– 1, 10, 19, 28 उत्तम तारीखे

4, 13, 22, 31 मध्यम तारीखे।

अक 2 के लिए– सोमवार, गुरुवार– 2, 11, 20, 29 उत्तम तारीखें

4, 13, 22, 31 मध्यम तारीखे।

अक 3 के लिए गुरुवार, मगलवार– 3, 12, 21, 30 उत्तम तारीखे

9, 18, 27 मध्यम तारीखें।

अंक 4 के लिए– रविवार, सोमवार– 4, 13, 22, 31 उत्तम तारीखें।

1, 10, 19, 28 मध्यम तारीखे।

अंक 5 के लिए बुधवार, शनिवार 5, 14, 23 उत्तम तारीखे।

8, 17, 26 मध्यम तारीखे।

अक 6 के लिए– शुक्र, सोमवार 6, 15, 24 उत्तम तारीखें।

2, 11, 20, 29 मध्यम तारीखे।

अंक 7 के लिए सोमवार 2, 11, 20, 29 उत्तम तारीखें।

7, 16, 25 मध्यम तारीखे।

अंक 8 के लिए शनिवार, बुधवार 8, 17, 26 उत्तम तारीखे।

5, 14, 23 मध्यम तारीखें।

अक 9 के लिए मंगलवार, गुरुवार 9, 18, 27 उत्तम तारीखे।

3, 12, 21 मध्यम तारीखे ।
कौन सी सीरीज का टिकट ले ?
अक 1 की A, P, I, J, M, Q, T, Y
अक 2 की B, D, K, M, O, R, T, Z
अक 3 की C, G, L, S
अक 4 की A, D, I, J, M, Q, T, Y
अक 5 की F, H, N, X
अक 6 की U, V, W
अक 7 की B, K, O, R, Z
अक 8 की F, P
अक 9 की C, G, L, S

चिटफण्ड, शेयर और घुड–दौड के लिए भाग्यशाली अक उपरोक्त विधि के अनुसार निकाले तथा चिटफण्ड कम्पनी के पूरे नाम का मूल अक निकाले । शेयर आदि के लिए कम्पनी के पूरे नाम का मूल अक निकाल ले तथा घुड–दौड के मामले मे जोकी का नाम तथा नम्बर का विवेचन कर अपने भाग्याक के शुभ वार, तारीख को बाजी लगा कर देखे । अक शास्त्र इसी प्रकार की अन्य इनामी योजनाओ, बैक के बचत खातो तथा जुए–सट्टे आदि के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है । परन्तु कुमार्ग के बजाय सन्मार्ग की दिशा मे अंक शास्त्र अधिक प्रभावी होगा ।

X
प्रकरण दस

अनुकूल रंग तथा रत्नों का निर्णय

प्रत्येक व्यक्ति के अपने प्रिय रग होते है जिन्हे वह अपनी वेशभूषा एव मन पसन्द वस्तुओ के माध्यम से व्यक्त करता है। इस प्रकरण मे यही बतायेगे कि किस अक वाले व्यक्ति के लिए कौन–सा रग और रत्न धारण करना शुभ या अशुभ होता है। चूकि रगो और रत्नो का यहा दिया गया विवरण पाश्चात्य और भारतीय मतानुसार है, फिर भी कही–कही पर पाश्चात्य मत को अधिक महत्व देते हुए उनकी सलाह को मान लिया गया है।

अंक 1 के लिए शुभ रंग और रत्न

इस अंक वाले महिला एवं पुरुष जातको के लिए निम्न तालिका रग तथा रत्न (नग, पत्थर, उप रत्न आदि) शुभ फलदायक होते है.–

शुभ रग–नारंगी, हल्का गुलाबी, बैगनी, गहरा पीला, सुनहरा तथा हल्का भूरा।

अशुभ रंग–नीला, काला, लाल।

शुभ रत्न–माणिक्य या माणिक्य के रग का उप रत्न मून–स्टोन आदि। या पच धातु (लोहे के अतिरिक्त) की मुद्रिका मे जडवाकर अनामिका में धारण करे।

अंक 2 के लिए :

शुभ रंग–सफेद, हरा, अनारी, काफूरी, हल्का पीला, आसमानी ।

अशुभ रंग–काला, लाल, नीला या कोई भी अन्य गहरा रंग ।

शुभ रत्न–मोती, सफेद हीरा, सुलेनामी, स्फटिक एव चन्द्रकान्त (मून–स्टोन) चादी मे धारण करना चाहिए ।

अंक 3 के लिए :

शुभ रग–पीला, सफेद, हल्का जामुनी, गुलाबी, हल्का नारंगी तथा गेरुआ ।

अशुभ रग–काला, नीला और हरा ।

शुभ–रत्न पुखराज, सुनैला अथवा लहसुनियां सोने की मुद्रिका मे जडवा कर पहनना चाहिए ।

अंक 4 के लिए:

शुभ रंग– लाल, नीला, खाकी तथा मिश्रित या दो रंगो मे मिश्रित रग, धूप, छांह ।

अशुभ रंग–काला रग ।

शुभ रत्न–अष्टधातु, या सोने में, नीला हीरा, गोमेदक, तामडा या गहरे लाल रग का मूंगा जडवा कर पहनना चाहिए ।

अंक 5 के लिए:

शुभ रग–हरा, फिरोजी, चमकीला, सफेद या कोई भी हल्का रंग ।

अशुभ रग–लाल तथा नारंगी ।

शुभ रत्न–पन्ना, नीलम अथवा एमेथिस्ट सोने की मुद्रिका में जडवाकर पहनना चाहिए ।

अंक 6 के लिएः

शुभ रग–चमकीला, उज्ज्वल तथा सफेद, गहरा नीला, हरा, हल्का पीला, तथा हल्का गुलाबी ।

अशुभ रग–गहरा पीला, काला, गहरा लाल ।

शुभ रत्न–चादी मे हीरा, पुखराज, नीलम अथवा मोती, सुलेमानी रत्न अगूठी मे जडवाकर पहनना चाहिए ।

अंक 7 के लिएः

शुभ रंग–सफेद या विचित्र रंग, हल्का पीला या पीला–काला, पीला–हरा या सफेद–काला मिश्रित ।

अशुभ रंग–गहरा लाल या लाल–काला ।

शुभ रत्न–सोने की मुद्रिका मे, मोती, पुखराज या लहसुनिया धारण करना चाहिए ।

अंक 8 के लिएः

शुभ रग–सफेद–काला, गहरा नीला तथा गहरा भूरा ।

अशुभ रंग–चमकीला लाल रंग ।

शुभ रत्न–चादी की अगूठी मे नीलम अथवा पन्ना, गोमेदक या लहसुनिया जड़वा कर पहनना चाहिए ।

अंक 9 के लिएः

शुभ रंग–लाल, गुलाबी, भूरा या सफेद मे लाल रग मिश्रित ।

अशुभ रंग–काला, हरा, लाल सुर्ख ।

शुभ रत्न–मूगा चांदी में धारण करे ।

नास्त्रेदमस् की

विचित्र भविष्यवाणियाँ

विश्व की विख्यात भविष्यवाणियो की श्रृखला मे ऐसी पुस्तक जिसका बाजार मे अब तक अभाव रहा।

जी हा, चौकिए मत। पढिए और स्वय ही परखिए कि यह पुस्तक वास्तव मे उन सभी भविष्यवाणियो की पुस्तको से अलग है जो आपने अभी तक पढी।

भविष्यवाणियों के मसीहा 'नास्त्रेदमस्' के साथ-साथ विश्व के 17 जाने माने भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियो को सकलित कर बनाई गई यह पुस्तक अपने आप मे भविष्यवाणियों के क्षेत्र मे किसी विश्वकोश (ENCYCLOPEDIA) से कम नहीं, जिसमे आप पाएगे

- ★ क्या कोई अपनी मौत की तिथि जान पाया है?
- ★ **तीसरा विश्व युद्ध कब?**—एक और चगेज खा का आगमन।
- ★ अमेरीका ईराक मे युद्ध की सभावना।
- ★ विश्व की 60% जनता मौत के कगार पर।
- ★ विश्व के सर्वशक्तिमान माने जाने वाले देशो का विनाश।
- ★ चीन मे मौत का नगा नाच होगा।
- ★ **न्यूयार्क शहर पर परमाणु बमो की वर्षा।**
- ★ पूर्व से एक महान् नेता की प्रतीक्षा।
- ★ मानव कष्टो का उपचार प्रार्थनाओ द्वारा।
- ★ क्या कयामत आएगी? कैसे होगा इस पृथ्वी का अत?
- ★ मुस्लिम व ईसाई धर्म पर सकट के बादल।
- ★ पाकिस्तान और आने वाला कल। **मूल्य 50/-**

कैसा होगा आने वाला कल?

भविष्यवाणियों का अनूठा संसार

अंग विद्या पर अनूठी रचना

शरीर लक्षण एवं चेष्टाएँ

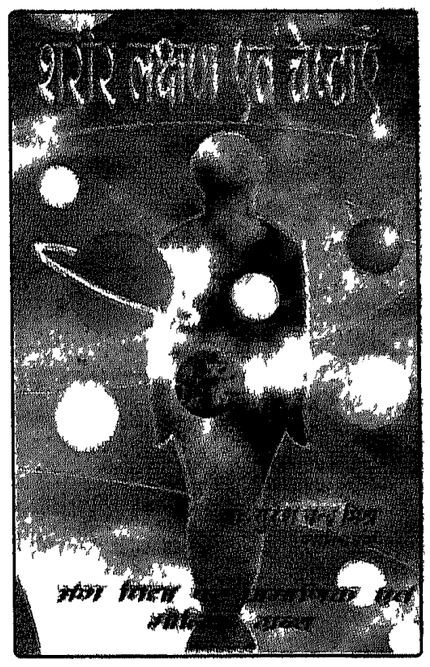

डा. सुरेशचन्द्र मिश्र

ज्योतिषाचार्य

शरीर लक्षण ज्योतिष शास्त्र का एक प्रमुख अग है। वैदिक साहित्य से लेकर, आधुनिक साहित्य व ज्योतिष वाड्मय मे मानव शरीर-लक्षणो के तथ्य बिखरे पड़े है। **यह भारतीय** व **विशुद्ध ऋषि प्रदर्शित फलकथन पद्धति है।**

मानव शरीर पर विद्यमान लक्षण चिन्ह, रेखाए, तिल, मस्सा आदि के साथ-साथ विभिन्न अगो की बनावट, रगत, सौन्दर्य व लावण्य मानवीय भविष्य के बहुत से अनकहे पहलुओ को छूते है। जिस प्रकार जन्मकालीन ग्रहस्थिति से भविष्य निर्धारण होता है, उसी प्रकार लक्षण विज्ञान द्वारा भी भविष्य कथन प्रामाणिक, नितान्त भारतीय व ऋषिसम्मत है।

<u>प्रस्तुत पुस्तक मे आप पाएगे</u> :

(1) शरीर लक्षण व चेष्टाओ का प्रामाणिक विवेचन
(2) शरीर के प्रमुख दस भागो का सरल व सारगर्भित विश्लेषण
(3) शरीर लक्षणो से धर्म, स्वास्थ्य, वाहन, सम्पति, अधिकार व राजयोगो का निश्चित निर्णय
(4) शरीरागो से मानव जीवन का त्रिकाली विवेचन
(5) शरीराग लक्षणो से दशा अन्तर्दशा जानना व उनका फलादेश
(6) शरीर लक्षण से जन्मकुण्डली की सत्यता की परीक्षा

भारतीय सस्कृति की अमूल्य धरोहर!

॥ सामुद्रविद् वदति यातमनागत च ॥

मूल्य : 150 रु